❋ समर्पण ❋

चारण जाति के दो उज्ज्वल रत्न—

(१) लीवडी के राजकवि, सौजन्य मूर्ति

श्री शंकरदान जेठी भाई

और

(२) राजस्थानी भाषा के अनन्य प्रेमी

कविवर उदयराजजी उज्ज्वल

के कर कमलो मे

सादर

❋ समर्पित ❋

—अगरचन्द नाहटा

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १६४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारंभ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारंभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यंत विशाल योजना है, जिसकी संतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारंभ करना संभव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह सस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की वात होगी ।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओ काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कळायरण, ऋतु काव्य । ले० श्री नानूराम संस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उग्न्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।

३ वरस गांठ, मौलिक कहानी सग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

'राजस्थान-भारती' मे भो आधुनिक राजस्थानी रचनाम्रो का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन सस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशसा की है । वहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एव अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेपाक' वहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है । यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक वहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेपाक है । अपने ढग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्वन्ध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एवं विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाए हमे प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यत' सग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमे राजस्थानी भापा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त सस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एव शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रयो का अनुसधान और प्रकाशन सस्था के सदस्यो की ओर से निरतर होता रहा है जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अ श 'राजस्थान भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक मे प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निवध राजस्थान भारती मे प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एव जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां और लगभग ७०० लोक कथाएँ सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पावूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११ जसवत उद्योत, मुहता नैणसी री स्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रथो का सम्पादन एव प्रकाशन हो चुका है।

१२ जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचद भडारी की ४० रचनाओ का अनुसधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सबध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये है।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रथो का अनुसधान किया गया और ज्ञानसार ग्रथावली के नाम से एक ग्रथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का सग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तिया मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निबध, लेख, कविताएँ और कहानिया आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६ बाहर मे ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके है।

गत दो वर्षो से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है। दोनो वर्षो के आसन-अधिवेशनो के अभिभाषक क्रमश: राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और प० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूंडलोद, थे ।

इस प्रकार सस्था अपने १६ वर्षो के जीवन-काल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरतर सेवा करती रही है। आर्थिक सकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह समव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एव प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओ के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरतर चलता रहे। यह ठीक है कि सस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा सदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी सस्था के कार्यकर्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर सस्था के गौरव को निश्चय ही बढा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अश ही प्रकाश मे आया है । प्राचीन भारतीय वाड्मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नो को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हे सुगमता से प्राप्त कराना सस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नही हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक सशोध एव सास्कृतिक कार्यक्रम मत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस सस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तको का प्रकाशन किया जा रहा है ।

१ राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३ अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४ हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पवार वश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमाजलि—	श्री भवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमाजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाए—	,, ,, ,,
२४. चदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ मडुली—	श्री अगरचन्द नाहटा भ:विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अगरचन्द नाहटा
२७. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथो का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रंथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (लि० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी ·जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत: हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके। सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोडे समय मे इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का सपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादको व लेखको के अत्यत आभारी हैं।

अनूप सस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन सग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट बडोदा, भाडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान-भडार बीकानेर, मोतीचद खजान्ची ग्रंथालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, प० हरदत्तजी गोविद व्यास जैसलमेर आदि अनेक सस्थाओ और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थो का सपादन समव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनक्वापि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुन. मां भारती के चरण कमलो मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाजलि समर्पित करने के हेतु पुन उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट,
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सं० २०१७
दिसम्बर ३,१९६०.

भूमिका

राजस्थानी साहित्य के निर्माण मे सबसे अधिक और उल्लेखनीय योग जैन विद्वानो और चारणो का रहा है। जैन विद्वानो की रचनाएँ तो राजस्थानी साहित्य के विकास के समय से ही प्रचुर प्ररिमाण मे प्राप्त होने लगती है, पर चारण कवियो की १५ वीं शताब्दी से पहले की केवल फुटकर कविताएँ ही मिलती है, कोई स्वतन्त्र उल्लेखनीय ग्रन्थ नही मिलता। जैन प्रवन्ध ग्रन्थो मे चारणों के कहे हुए कुछ फुटकर दोहादि उद्धृत हैं जिनको संग्रहीत करके मैंने 'परम्परा' (भा० १२) में प्रकाशित अपने लेख मे दे दिया है। चारणों की सर्व प्रथम उल्लेखनीय स्वतन्त्र रचना 'अचलदास खीची री वचनिका' है जो सादूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट से प्रकाशित होने जा रही है। इसे शिवदास चारण ने सवत् १४८५ के लगभग बनाई थी।

१६ वी शताब्दी से अनेक चारण कवियो की रचनाएँ मिलने लगती हैं और १७ वी मे तो कई बहुत ही प्रसिद्ध चारण कवि हो गये हैं। भक्त चारण कवियो मे 'ईसरदास' सबसे अधिक उल्लेखनीय है। इनका जन्म संवत् १५९५ मे जोधपुर राज्य के भादरेस गाँव मे हुआ था। ये रोहडिया शाखा के चारण थे और इनका स्वर्गवास संवत् १६७५ के लगभग हुआ था। 'हरिरस', 'हालाँ भालाँ रा कुंडलिया', 'देवीयाण' इनके प्रसिद्ध और प्रकाशित ग्रन्थ है। वैसे इनके और भी कई ग्रन्थ और बहुत से डिंगल गीत प्राप्त है जिन्हे 'ईसरदास ग्रन्थावली' के रूप मे प्रकाशित करने के लिए संग्रहीत करवा लिया गया है और इनकी सब रचनाएँ सादूळ रा० रि० इन्स्टीट्यूट से प्रकाशित करने की योजना है।

१८ वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे पीरदान लालस नामक एक भक्त चारण कवि हो गये है जिन्होंने अपने ग्रन्थो मे ईसरदास को गुरु के

रूप में स्मरण व उल्लिखित किया है। 'ईसाणद गुरू चित मा आंणा" (गुण नारायण नेह), "ब्रह्म सतगुरु हुंता वडो, ईसरदास अनूप," "ईसाणद आराधियो" (गुण अजपा जाप)। 'पातगिपहार' मे भी उनका स्मरण किया है—

"ओथिए साहिव ऊपना, भोमि निमो भाद्रेस।
पीरदास लागे पगे, इसाणद आदेस ॥"

कवि पीरदान की सभी रचनाएँ सवत् १७९१-९२ मे लिखी गई दो प्रतियो मे मिली है और उनमे से कई तो उनकी स्वय की लिखित भी है इसलिये पीरदान का समय स० १७६० से १७९३ तक का निश्चित होता है। इस समय ईसरदान को स्वर्गवासी हुए एक सौ से अधिक वर्ष वीत चुके थे इसलिये पीरदान का उनका प्रत्यक्ष गुरु-शिष्य का सम्वन्ध रहना तो सम्भव नही लगता। अत- यही संभव है कि भक्ति की प्रेरणा उन्हे ईसरदास की रचनाओ से ही मिली है और इसी कारण उन्होने ईसरदास को गुरु के रूप मे उल्लिखित कर दिया होगा। ईसरदास की रचनाओ से पीरदान लालस इतने अधिक प्रभावित थे कि अपनी रचनाओ के सग्रह गुटके मे ईसरदास की रचनाओ को उन्होने स्वय लिखकर सग्रहीत किया है। इनमे से कई रचनाएँ तो ऐसी है, जिनकी अन्य कोई भी हस्तलिखित प्रति कही भी प्राप्त नही हुई अर्थात् यदि पीरदान उन्हे अपनी रचनाओ के सग्रह वाले इस गुटके मे सग्रहीत नही करते तो उनका आज प्राप्त होना भी कठिन हो जाता।

पीरदान के सम्वन्ध मे विशेष जानकारी प्रयत्न करने पर भी प्राप्त नहीं हो सकी। उनकी रचनाओ के दो सग्रह-गुटके प्राप्त हुए है उनसे केवल इतना ही पता चलता है कि वे जुढोया गाँव (मारवाड) के निवासी थे। उनके पुत्र का नाम हरिदास था। हरिदास रचित "गुण छमा पर्व" और "डिंगल-गीत" इसी गुटके मे है। कई रचनाओ की लेखन प्रशस्ति मे हरिदास नाम आता है और उनके खुद की लिखी हुई कई रचनाएँ भी इस गुटके मे है जिनसे संवत १८०७ तक उनकी

विद्यमानता का पता चलता है। पीरदान और हरिदास इन दोनों पिता-पुत्रो के लिए खरतरगच्छ के जैन यति शिवचन्द्र, देवचन्द्र, लालचन्द, उदयचन्द ने कई ग्रन्थ इन गुटको मे लिखे है, इससे उन यतियो के साथ इन पिता-पुत्रो का विशेष साहित्यिक सम्बन्ध रहा मालूम देता है।

श्री सीतारामजी लालस के पत्रानुसार तो ये दोनो गुटके उन्हीं के संग्रह मे थे। जिनमे से एक को राजस्थानी रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता के लिए श्री भगवतीसिंह बीसेन उनसे ले गये थे और अब वह उक्त सोसाइटी के सग्रह (जालान-स्मृति-मन्दिर) मे है। हमे इसका विवरण सोसाइटी के मुख-पत्र "राजस्थान" के वर्ष २ अंक २ मे पढने को मिला था। श्री सीतारामजी लालस से उनके संग्रह का दूसरा गुटका कई वर्ष पूर्व मुझे प्राप्त हुआ तो मैंने उसमे प्राप्त पीरदान की रचनाओ की प्रतिलिपि करवा ली थी पर उस गुटके मे कई पत्र कम थे, इसलिए "ज्ञान चरित" नामक ग्रन्थ के प्रारम्भ के ४० पद्य और बीच के भी कुछ पद्य नही मिल सके थे। अतएव सोसाइटी के संग्रह वाले गुटके को प्राप्त किये बिना "पीरदान ग्रन्थावली" का प्रकाशन सम्भव नही था। इस बार कलकत्ते जाने पर विशेष प्रयत्नपूर्वक श्री रामकृष्णजी सरावगी की कृपा से वह गुटका प्राप्त किया गया। उसमे सीतारामजी के सग्रह के गुटके के अतिरिक्त "हिंगलाज रासो", "पातगि पहार" और बहुत से से डिंगल गीत प्राप्त हुये और उसीसे ज्ञानचरित का त्रुटित अंश भी पूरा किया जा सका, इसलिए श्रीरामकृष्णजी सरावगी का मै विशेष आभारी हूँ। कलकत्ते की आबहवा हस्तलिखित प्रतियो के लिए बहुत ही घातक है। अतएव इस गुटके के कई पत्र तो जंतुओ द्वारा भक्षित होकर जाली जैसे सछिद्र हो गये है। कुछ पत्रो के ऊपर का अंश कट गया है इसलिए कई डिंगल गीतो का पाठ-त्रुटित रह गया है, फिर भी यह अच्छा हुआ कि अधिक नाश होने से पूर्व ही इसका उपयोग कर लिया जा सका। इस तरह पीरदान की प्राय समस्त रचनाएँ इस ग्रन्थावली मे प्रकाशित कर सकने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हो सका है।

श्री सीतारामजी लालस ने अपने संग्रह का गुटका बड़े उदार भाव से मुझे उपयोग करने के लिए भेजा, इसलिए उनका मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। इस ग्रन्थावली के शब्द कोष मे शब्दो का अर्थ लिखकर उन्होंने मुझे और भी अधिक आभारी बना दिया है। प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन, प्रूफ संशोधन तथा शब्द कोष के लिए शब्द-चयन करने और अर्थ लिखने मे श्री बदरीप्रसादजी साकरिया का पूर्ण सहयोग मिला है इसलिए उनका मै बहुत बहुत आभारी हूँ। मेरे भ्रातृ पुत्र भवरलाल का तो मेरे साहित्यिक कार्यों मे सहयोग मिलता ही रहा है।

श्री पीरदान लालस की जीवनी के सम्बन्ध मे कुछ भी विवरण प्राप्त न हो सका और न उनका कोई चित्र ही मिलता है। अत उनके हस्ताक्षरो का प्रत्यक्ष-दर्शन कराने के लिए एक पृष्ठ का ब्लाक बनवाकर प्रस्तुत ग्रन्थ मे दिया जा रहा है।

श्री सीतारामजी लालस के गुटके मे पीरदान के हाथ का लिखा हुआ "साइया भूला" रचित एक डिंगल गीत है जिसकी लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है—"लिखतु लालस पीरदान वांचे जिणनु राम राम, संवत् १७९२ भादवा वद १२।"

राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता वाले गुटके मे जो पीरदान के लिखे हुए कई ग्रन्थ हैं उनकी लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है—

१—गीत भूले साइया रो एव गीत मीसण हरिदास रो, के अन्त में लिखा है—"लिखतंलालस पीरदान"

२—गुण हिंगलाज रासो के अन्त मे "लिखतु लालस पीरदान, वांचे जिणनु राम राम", संवत् १७९२ काति वद १४ वार थावर छै।"

३—स्वय रचित डिंगल गीत के अन्त मे "लिखतु लालस पीरदान"

४—ईसरदास कृत 'भगवत हस' के अन्त मे "लिखतु लालस पीरदान"

५—ईसरदास कृत "गुरड पुराण" के अन्त में "लिखतं लालस पीरदान संमत् १७९२ मती मगसरि सुदि ५ वार थावर।"

६—ईसरदास कृत "गुण आगिमि" के अन्त मे "लिखतं लालस पीरदान, वांचे जिणनुं राम राम छै। संवत् १७९२ पोप वद ५"

७—ईसरदास कृत "देवीयाण" के अन्त मे "लिखतं लालस पीरदान"

८—बारहठ आसोजी कृत "निरंजन प्राण" के अन्त मे "लिखतं लालस पीरदान"

इनके अतिरिक्त इस गुटके मे इनकी एवं ईसरदास की कई और रचनाएं भी यद्यपि इनके हाथ की लिखी हुई है पर उनके अन्त मे लेखक का नाम नही दिया गया है। साइया झूले का रुकमणि-हरण, माधवदास का राम-रासो, गज मोख नीसाणी, और छभा पर्व (स्वयं रचित) पीरदान के पुत्र हरिदास के हाथ का लिखा हुआ है। "गुण राम कीला" को हरिदास के वाचनार्थ जोधपुर मे खरतर गच्छके भावहर्षीय जिनचन्द्रसूरि के शिष्य पं० शिवचन्द ने लिखा है।

प्रस्तुत ग्रन्थावली मे (१) "नारायण नेह" (२) "परमेसर पुराण" (३) "हिंगलाज रासो" (४) अलख आराध," (५) "अजंपा जाप" (६) "ज्ञान चरित", और (७) "पातिक पहार" इन सात ग्रन्थो, और ३० डिंगल गीतो को प्रकाशित किया जा रहा है। ये सभी रचनाएं प्राय भक्ति सबधी है। राम, कृष्ण, हिंगलाज देवी, आदि की स्तुति इनमे प्रधान रूप से है ही पर "परमेसर पुराण" मे अनेक भक्तो का भी उल्लेख है जिससे राजस्थान के उल्लेखनीय-भक्त-जनो की अच्छी जानकारी मिल जाती है। इनमे से कई तो प्रसिद्ध है पर कईयो के सबध मे अभी विशेष जानकारी प्राप्त करना अपेक्षित है। विद्वानो का ध्यान मैं इस ओर आकर्षित करता हूँ।

इन रचनाओ मे दूहा, चौपई, गाहा, चौसर, मोतीदाम, कवित्त, भुजगी, पद्धरी, झम्पाताली और डिंगल गीतो के अट्टताळो, साणोर आदि कई छन्दो का प्रयोग हुआ है। 'परमेसर पुराण' केवल दोहो मे है। सबसे वडी रचना 'ज्ञान चरित' मे 'कवित्त' छद की प्रधानता है।

अभी पीरदान लालस जैसे और भी अनेक चारण कवियो की रचनाओ का सग्रह एव प्रकाशन करना अपेक्षित है। उनमे से श्री दुरसाजी

आढा की प्राप्त रचनाओ का भी मैने सग्रह करवाया है। इसका सम्पादन श्री बदरीप्रसाद साकरिया कर रहे हैं। आशा है वह सग्रह-ग्रन्थ भी शीघ्र ही प्रकाशित होगा। भक्त कवियों मे पीरदान लालस अब तक अप्रसिद्ध से थे। आशा है इस ग्रन्थावली के प्रकाशन से इनकी ओर विद्वानो का ध्यान आकर्षित होगा।

भारत सरकार एव राजस्थान सरकार ने इन्स्टीट्यूट को आर्थिक सहायता देकर ऐसे अनेक ग्रन्थो के प्रकाशन का सुयोग दिया इसके लिए दोनो सरकारो का भी मैं आभारी हू।

—अगरचन्द नाहटा

प्रस्तावना

(श्री पीरदान लालस की गिरा-गरिमा)



आध्यात्मिक चेतना और धार्मिक विश्वास भारत भूमि की एक प्रमुख विशेषता रही है। विश्व के अन्य भागो मे जब मानव श्वापद-जीवन व्यतीत कर रहा था तब भारतीय ऋषि की रहस्यमय और पावन वाणी गगन मे गुंजरित होकर आकाश की ऊँचाइयो को नाप रही थी। ईश्वरीय विश्वास की यह परम्परा हमारे समाज के सत्ययुग से आरम्भ होकर कभी पीन और कभी क्षीण धारा के रूप मे आधुनिक वैज्ञानिक युग तक निरन्तर दृष्टिगोचर होती है। श्री पीरदान लालस इसी प्रकाशलोक के एक आलोकित नक्षत्र हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल-क्रम की दृष्टि से श्री पीरदान रीतिकाल के कवि है पर विषय प्रतिपादन की दृष्टि से वे भक्तिकाल के कवियो मे स्थान पाने योग्य है। उनका प्रधान विषय है—अध्यात्म। ऐसा अनुमान होता है कि इस ओर उन्मुख करने मे उन्हे अपने भाव-गुरु* श्री ईसरदासजी की रचनाओ से प्रेरणा मिली है जिनकी भाव-भक्ति देखकर 'ईसरा सो परमेसरा' उक्ति प्रचलित होगयी। पीरदान ने अपनी रचनाओ मे कई स्थानों पर ईसरदासजी को गुरु के रूप मे स्मरण किया है —

"इसाणंद गुरु चित मा आणा, वेद व्यास ना पछै वखाणा।

—नारायण नेह पृ० १

---

* १ वरदा, वर्ष ५ अक ३ मे श्री वदरीप्रसाद साकरिया का 'महाकवि ईसरदास और उनका साहित्य' शीर्षक अभिभाषण

कवि ने अपनी रचनाओं मे ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनो ही रूपों का वर्णन किया है। कभी तो वह कबीर के "दसरथ सुत तिहूँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना।" को दोहराता है—'जगत कहै सहि दशरथ जायौ, अविगत धारौ नाम अजायौ।' और कभी वह प्रभु के साकार रूप का गुणगान करता है। डिंगल गीतों मे वह विभिन्न अवतारों की महिमा बताता है। अवतार वाद का कारण वह भी गीता की भाँति अधर्म का नाश मानता है। जब जब धर्म की हानि और अधर्म का अभ्युत्थान होने लगता है तब तब साधुओं की रक्षा और दुष्टों का दमन करने हेतु भगवान् अवतार लेते हैं। पीरदान के शब्दों मे :—

आवै तू आप लियौ अवतार, भड़ांभड भोमि उतारण भार।

यद्यपि कवि ने अपनी रचनाओं का नामकरण करते हुए ईश्वर के निराकार रूप की ओर भी सकेत किया है यथा "अलख आराध", "अजंपा जाय" आदि। पर इसमे कोई सन्देह नही कि उसकी दृष्टि प्रधानतः सगुण पर ही रही है। सगुण का उसने विस्तार से जो वर्णन किया है उसका कारण भी है। उस काल मे सगुणोपासना की भावना बलवती थी अत. कवि की रचनाओ मे भी प्रधानता उसी की रही। कवि के काव्य का सूक्ष्म अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी भक्ति दास्यभाव की है। उसने अपने लिए 'पीरदास', 'पीर', 'पीरीयै' आदि नामो का प्रयोग किया है। 'पीरदास' नाम तो बार-बार आया है—

"पीरदास करजै प्रथम, पुरुषोत्तम सूं प्रीत।"

पीरदान के काव्य की एक बहुत बड़ी विशेषता है कवि की उदार दृष्टि। उसने यथास्थान सभी देवताओ को नमस्कार किया है क्योंकि उसका विश्वास है "सर्वदेव नमस्कार. केशव प्रति गच्छति"। कभी वह मगलाचरण मे सरस्वती-वन्दना करता है, कभी गणेश की स्तुति करता है। शाक्त परिवार में जन्म होने के कारण वह दुर्गा को भी

विस्मृत नही कर सकता। 'हिंगलाज रासो' मे देवी के विभिन्न रूपों की वह ओजमयी भाषा मे आरती उतारता है। 'ज्ञान-चरित' में भगवान के विभिन्न अवतारों का उल्लेख करते हुए वह जैनियो के 'अरिहंत' और 'रिषभ' को भी नमस्कार करता है। इतना ही नहीं उसने मुसलमानो के 'अला' को तो अपने काव्य मे पचासों बार स्मरण किया है। वास्तव मे कवि के लिए तो ये सव उसके प्रभु के ही अलग-अलग नाम हैं। इसीलिए वह यम-पाश से मुक्ति के लिए 'अला' की ही आशा रखता है—

अला तुम्हारौ आसरौ, अला तुम्हारी आस।
परमेसरजी पालिजै, पीर तणा जम पास॥

—परमेसर पुराण, दूहा सख्या २०

इसी प्रकार कवि ने 'परमेसर पुराण' मे अनेक भक्तो का श्रद्धा-पूर्वक स्मरण किया है। यद्यपि ये सभी भक्त किसी एक ही सम्प्रदाय या विचारधारा के नही है पर अध्यात्म और धर्म के प्रति उन सव की श्रद्धा है। सभवत. इसी कारण पीरदान ने भी अपने भावो की सुमनांजलि उन्हे अर्पित की है। इन भक्तो मे कई ऐसे भी हैं जिनके वारे मे विद्वानो को ज्ञान नही है। कवि ने अपनी रचना मे उनके नामों को सुरक्षित रखकर हमारे सास्कृतिक और साहित्यिक जीवन की विभूतियो को लुप्त होने से वचाया है।

पीरदान के काव्य मे यद्यपि ज्ञान और योग की चर्चा है पर उसका हृदय मूलतः एक भक्त का हृदय है। इसीलिए वह उसके सगुण और साकार रूप पर ही अधिक मुग्ध है। अन्य अवतारो की तुलना मे उसने राम और कृष्ण का अधिक विस्तार से वर्णन किया है। शासकों द्वारा अपने युग के समाज पर अत्याचार होते देख तथा गौ-ब्राह्मण की दुर्दशा देख उसका भक्त हृदय अपने प्रभु से निवेदन करता है कि वह शीघ्र ही अवतार लेकर धरती का वोझ दूर करे। अपनी करुण

पुकार करते समय वह अपने भगवान् को पूर्व भक्तो की 'आण' दिलाता है ताकि धर्म की रक्षार्थ वह शीघ्र अवतरित हो जाय—

चडि बेगौ चक्र धरि, करै काई ढील करता ।
गळौ वढै गाय रौ वजै ब्राह्मण विरता ॥
अनंत जणा री आण, धणी कर खबर धरम री ।
वेद व्यास री आण, आण वारट ईसर री ॥
मेघ रिष अनै मामै घडी, घणी वाट जोवै धणी ।
तूँ हमै जेज राखै त्रिगुण, तनै आँण भगता तणी ॥

—ज्ञान चरित, कवित्त १३५

कवि का मुख्य विषय अध्यात्म होने के कारण उसकी रचनाओ मे शान्त रस की ही प्रधानता है पर वह अपने जातिगत प्रभाव से पूर्णत. मुक्त नही हो सका है। यही कारण है कि भक्ति के क्षेत्र मे भी वह ओजपूर्ण वर्णन करता है—

केई ढोल कसाळ, धरा ब्रहमड धडक्कै ।
सुरणाये सालुळै, राग सीधूओं रहक्कै ॥
वीर हाक तिण वार, देव दाणव जूटा दल ।
वाजै घाउ निहाउ, हेक हथवाह करै हल ॥
हीसुए विढै भड हसरा, कुन्त कुहाडै जुध करै ।
त्रिधारा खड्ग वाहै त्रिगुण, त्रिगुण हाथि दाणव तरै ॥

— ज्ञान चरित, पद्य १४३

अपने प्रभु की वीर झाकी उतारते हुए कवि ने वीररस के सहायक वीभत्स आदि का भी वर्णन किया है—

असुर अमर आहुडै, असख भड़ गुडै भिडै अत ।
रुण्ड मुण्ड रडवडै, विमळ नदीआ वहिसै रत ॥
कध संध कडिडिसै, हाड मुडिसै हेकारा ।
आविटिसै असराँण धमक ले सै धीकारा ॥

कवन्ध-युद्ध वर्णन डिंगल काव्य की विशेषता है। कवि पीरदान ने भी उसका वर्णन किया है। सत्य तो यह है कि डिंगल के चारणी काव्य मे वीररस का जो अनुपम चित्रण है वह पीरदान की कविता मे भी अपनी समस्त विशेषताओ को लिए हुए है। भगवान् के शील, शक्ति और सौन्दर्य वाले रूप मे से कवि प्रधानत उसके शौर्य का गायक है। वह तो अपने प्रभु को ससार के कर्मक्षेत्र मे सघर्ष-रत दिखाकर उसकी वीरता की पूजा करता है। तत्कालीन वातावरण मे जब कि मुस्लिम शासको के अत्याचार अति की सीमा पार कर रहे थे, उस समय तेज पुंज और शक्ति का अन्यतम रूप भगवान् ही भक्तो को विश्वास दिला सकता था। कवि ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जन-जीवन के मानस का स्पर्श करते हुए उनकी सुप्त चेतना को जागृत किया है तथा अपनी वीर वाणी से हमारी जडता दूर करने का प्रयत्न किया है।

पीरदान का भाव-पक्ष जितना प्रौढ है, उनका कला-पक्ष भी उतना ही श्रेष्ठ है। उसने उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारो के अतिरिक्त अनुप्रास का काफी प्रयोग किया है। अनुप्रास की छटा तो स्थान-स्थान पर दर्शनीय है—

मोख खमो खम कंद, निगुण निरपख नरेसुर।
निरालंव निरलेप, अभ्रम अछेप सुरेसुर॥

छन्दों मे उसने दूहा, चौपाई, कवित्त, पद्धरी आदि का ही अधिक प्रयोग किया है। साथ ही डिंगल गीतो की भी रचना की है। चाहे पीरदान ने किसी काव्य-गुरु से शिक्षा ग्रहण की हो या न की हो, पर इसमे कोई सन्देह नही कि उसका काव्यशास्त्र का ज्ञान काफी है। भाषा पर उसका सहज अधिकार है और वह कवि के भावो को उसके इगित अनुसार ही व्यक्त करती है।

आज के मानव मे पीरदान जैसी आस्था और विश्वास नही। विज्ञान ने उसके समक्ष जिन नई मान्यताओ को प्रस्तुत किया है उनको वह पूर्ण रूपेण ग्रहण नही कर सका है। इस प्रकार आज का

मानव एक ओर जीवन के पुराने मूल्यो से दूर होकर अपनी अध्यात्म भावना खो चुका है, दूसरी ओर जीवन के नये मूल्यो को पूर्णतया ग्रहण करने मे वह अपने को असमर्थ पाता है। इसी का परिणाम है कि उसके जीवन मे न सुख है और न शान्ति। आज जो चारों ओर ईर्ष्या-द्वेष, मार-काट, हिसा और घृणा दिखायी पड रही है उसका कारण मनुष्य का मनुष्य के प्रति अविश्वास और वैर-भाव ही है। पीरदान का काव्य यद्यपि सवा दो सौ वर्ष पहले लिखा गया था पर वह आज भी हमे अपने आध्यात्मिक प्रकाश से मार्ग दिखा रहा है। वह ज्योतिस्तम्भ की भाँति हमे बताता है कि सामने चट्टान है, विनाश है, मृत्यु है। यदि हम वास्तविक सुख-शान्ति चाहते हैं तो हमे सारे ऊपरी और मिथ्या भेदभाव भुलाकर जीवन मे सामजस्य स्थापित करना होगा। कवि का यह सन्देश आज भी नया है और उस दिन भी नया ही रहेगा जब मानव दूसरे ग्रहो मे पहुँच जायेगा।

चन्द्रदान चारण
एम० ए०, साहित्य-रत्न
प्रिंसिपल,
भारतीय विद्या-मन्दिर, बीकानेर

अनुक्रमणिका

कवि पीरदान लालस के हस्ताक्षर

ईसरदास रचित 'गरुड-पुराण' का अन्तिम पृष्ठ (संवत् १७६२, मिती मिगसर सुदी ५)

पीरदान लालस ग्रन्थावली

॥ श्रीरांमजी सत छै जी ॥

॥ अथ गुण नाराइण नेह लिख्यते ॥

॥ गाहा चौसर ॥

ब्रह्माणी ब्रह्म माहि विगति, सही एक तूं तीन सकति।
किह्कि करै केसव कीरति, सु प्रसन हुइ माता सरसति।
सरसति आखर समपीजै, देवी वयण अमोलक दीजै।
किहि मति सारै कीरति कीजै, राधा वर इहड़ी विधि रीजै।

॥ चौपाई ॥

इसाणंद गुरु चित मां आणा, वेद व्यास नां पछै वखांणा।
समरा प्रथिमि प्रथिमी सारद नां, निमिस्कार ब्रह्मा नारद नां।
लील विलास सुरां मा लाइकि निमो पुलदर देव विनाइकि।
संकर नां पिणि करां सलामा, गोविंद रा आदेस गुलामां।
पीरदास पढि रे पाराईणि, निमो निमो निरगुण नाराइणं।
नाराइण नरहर बहुनांमी, सतगुरु सांमि सकळ री सांमी।
भगत वछळ भगवत भुजाळौ, देवां सिर हर दीनदयाळौ।
माहव मुकुंद मुरारि महमहण, तेजवत राजा दशरथ तण।
कान्हड़ किसन नाथणौ काळी वड़ौ धणी वीठुल वनमाळी।
वडौ धिणी नां रखै विसारै, आप तणौ जे प्रांण उधारै।
प्रेम भगति रौ आखर पीजै, करुणाकर सों नेह करीजै।
करुणाकर करुणाकर कहता, प्राण तिके वैकुण्ठ मे पहुँता।
मधुसूदन नूं जुदा म मेले, ठाकुर नां मत अळगो ठेले।
पूज पूज परमेसर प्राणी, वेद कहै अे अमृत वांणी।
वेद किसन नूं घणौ वखाणै, जनजीवन री महिमा जाणै।

वैकुंठ सूं सखरा लिखमीवर, पाव प्रवीत घणी परमेसर।
पगा सरिस सनकादिक पूजै, धरणीधर सू पातक धूजै॥
धरणीधर नूं जिके ध्यावइ, सरग तणै विचि तिके समायइं।
उर ऊपर लिखमी पग आंणै, पारब्रह्म रा चरण पछाणै।
राकस रोळ नमो रावण रा, ब्रह्मा पग वादै बामण रा॥
अहिल्या रै ऊपर पग आयौ, पगा तणौ रस गगा पायौ।
नारद ही देखै पग नमियो, गेम घणां भगता री गमियो।
प्राणै माणै पाव महेसर, पगा तणी दे सेव प्रमेसर।
अविगत नाथ पूरिजै आसा, त्रिविधि तणा म दिखाळ तमासा।
लिखमीवर इहडा व्रिद लीधा, के पहिळाद पुलिदर कीधा।
कितराइ सत वैकुण्ठ कहिया, राघव कहि कहि सरणै रहिया॥
अइयौ मौज जकानु आपै, साधा नै कविलास समापै।
अनत भगत तू सा उधरिया, तुझ तणै ऊपरि सांतरिया।
भूधर तू भाइयौ भगतां री, तूं दातार नही डिगता री।
व्रिज रै देस वजाड़ी वासी, वड़े भगत कजि वावि विधासी।
साचा तू नै साध सुहावै, तूं इ बरीक उधारण आवै।
तूं ब्रह्मा री वाप वडाळौ, वडौ तमासौं वसदे वाळौ।
तूं कलिपत करै कितराई, तू जलनिधि रै अक जमाई।
तूं करतार अकिरता कहीजै, लखण तुहारा किम करि लहिजै।
जगत कहै सहि दशरथ जायौ, अविगत थारौ नाम अजायौ।
जगपति तू सिगळा री जामी, भगत वछळ सहजा ना भांमी॥
भगति समापि समापि भलेरी, जाड़ अविद्या घात जलेरी।
भगति नही तोड मन मां भीजौ, राघव पीर तणै सिर रीजौ।
माधव कठण तुहारौ मिलणौ, भूधर सा किम आवै भिळणौ।
श्रीकम हूँ अभ्यागत तोतौ, गिरधर लाल म घाते गोतौ।
झुरण दिऊ मां झालौ झालो, केसवराइ हुवो हूँ कालौ।
केसव कीरति कहडी कीजै, दान हुवै सौ दीजै दीजै।

॥ दूहा ॥

दान वभीषण नू दीयौ, प्रभु तुलछी रो पान।
तोनै ओळखियो त्रिगुण, ओ थारो उनमान ॥ १ ॥
भजि भजि तोनै भेटियौ, अरथ वात रो अेह।
प्रथळ करै रे प्राणिया, नारायण सूं नेह ॥ २ ॥
हेत घणौं सूं पूज हरि, नारायण न विसारि।
आठ पोहर अति आतमा, चत्रभुज नै चीतारि ॥ ३ ॥
आफे तरिसै आतमो, गाइयै हरि रा गीत।
पीरदास करजै प्रथम, पुरुषोत्तम सू प्रीत ॥ ४ ॥
ध्यायौ तोनै ध्यान धरि, आराह्यौ जग ईस।
त्यां पायो वैकुण्ठ पुर, से जीता जगदीस ॥ ५ ॥
आप सरीखा औळगू, तैं कीधा करतार।
तू समरथ वसदेव तण, निमष न लागी वार ॥ ६ ॥
गोपी कहै माहीजे गमो, ग्वाळै कहै उ ग्वाळ।
भगते कहियौ औ भलो, कस कहै औ काळ ॥ ७ ॥
वैकुण्ठ रो वासी ब्रह्म, जीवा रो पति जीव।
त्रिगुण नाथ सरिखौ तरह, दशरथ तणौ दईव ॥ ८ ॥
कहि कै नैहो को करा, राम कमळ री रारि।
करै पुकारा पीर कवि, ओ वाराह उधारि ॥ ९ ॥
फरसराम तू फावियौ, सखरो कियौ सग्राम।
हंस राम अवतार हरि, तूं वामण विसराम ॥ १० ॥
कूरम मछ रिखव कपिल, खाधी अमृत खाड।
भगतवछळ तैं भांजिया, हरणाकुस रा हाड ॥ ११ ॥
नाराइण हैग्रीव नां, पढे अहो निस पीर।
धानतर दत पिथ धणी, वडो किसन रो वीर ॥ १२ ॥
प्रतिमा मे पैठो प्रभु, अईयो बुध अलाह।
निकळक कद देखा निजर, पतिसाहां पतिसाह ॥ १३ ॥

तूं अलेप अछेप अज, नाग कहै निरकार ।
नरे सुरे पायौ नही, पारब्रह्म रौ पार ॥ १४ ॥
तूं नान्हो मोटौ त्रिगुण, तूं अति वुरौ अनूप ।
तू सरगुण निरगुण सही, अइयौ रूप अरूप ॥ १५ ॥
सगळाइं भगता सिरै, परमेसर रै प्रम्म ।
निगम करै आदेस नित, अइयौ देव अगम्म ॥ १६ ॥

॥ छन्द मोती दाम ॥

अइयो परमेसर देव अगम, भलै तैं कीधौ जाड भरम ।
कीया सहि थोक निमो करतार, परमेसर तुझ तणौ कोइंपार ।
अइयौ गरढैरा ग्यांन अनत, हुआ अति दीह भले अरिहंत ।
भले भगवंत भले भगवांन, पुरातम पूरण नाथ प्रधांन ।
प्रमेसर तुझ वखाणा पेट, जायौ तैं वाळ भलौ सुर जेठ ।
नमो महाराज तुहारी निंद्र, उपाया भूत. उपाया इन्द्र ।
कीयौ चितमन अने वुध च्यार, उपायौ एक वळै अहकार ।
दीना रा नाथ कियौ धंध दीध, कीया तत पांच महा तत कीध ।
सवद्दति गध कीयौ, सपरस, दसोदस देव इन्द्री दस दस ।
वभेसर वाप तुहारा वध, कहै कुण जीव तुरंगम कध ।
जीवांरा नाथ अमोलक जीव, दरसण दीजे देव दईव ।
वड़ौ ठग धूत अहो रुघवीर, सही तू ऐकलमल सधीर ।
अइयौ गुरडेस तणा असवार, महा मधु कीटक रामण मार ।
सदा रा दास व्रजां रा सत, अगासुर फाड़ वगासुर अन्त ।
ग्वाला विच ऊभौ ऊभौ गाज, सही संगठासुर वैठौ साझि ।
तृणावत त्रोड़ि वंछासुर वाहि, अहो अविगत तुहारी आहि ।
गिलै लख दंत गयासुर गोड़, छोड़ावण सत भलौ रिणछोड़ ।
जयौ जगनाथ तुहारौ जोर, किसौ नख ऊपर भार किसोर ।
वड़ा भड़ माधा राधा वंद, नमे पगि लागौ इ द नरिंद ।
वडौ कोई ख्याल हुवौ नंद वास, प्रमेसर आयौ साचा पास ।

लहै कुण लील निमो वर लाछ, छौगाळौ कांनड़ ढोळण छाछ।
दमोदर हूँत सुरै सहि दैत, नाराइण नंद तणौ नखतेत।
भले महियार जसौदा भाग, निमो नंद नदण नाथण नाग।
किया तै काम भले कलियाण, दीया तै ध्रम लीया तै दाण।
अइयो अभियागत आतम अस, कमाइण मांगण आयौ कंस।
रमै मथुरा विच केसवराय, भले कुब्ज्या सां माधव भाय।
भले यौ कासू जादव भांण, अइयो उग्रसेन तुहारी आंण।
उधारण त्रिघ अरिजण आस, पुरावण गोविंद टाळण प्रास।
समापण वांभण नां रिध सिध, दमोदर दांन वड़ौ तै दीघ।
दहावण नंद जसोदा दाहि, मिळै कुरखेत तिणी घर मांहि।
करावै राम जुगे जुग क्रीत, साघा रा पूत करै सर जीत।
साघा रौ वाल्हौ लागे साथ, प्रभु रै प्रीतम पाडव पाथ।
पंचाळी तुझ सरीखो प्राण, आँधै रा आँधा पूत अजाण।
आवै तू आप लियौ अवतार, भडांभड़ भोमि उतारण भार।
सोहै तू डाहुल दैत सिघार, निमो नरकासुर खोसण नारि।
छीयावर पौढण पाडळ छाँह, वाणासुर दैत विघासण वाह।
अईयो राजीव सरीखा अख, उधारण मारण देत असख।
दामोदर तुझ निमो व्रिज देस, प्रवाड़ा तुझ निमो परमेस।
निरजण नाथ जिसौ निरकार, इसौ बुध सांमि तिसौ अवतार।
देखा कह हाथ विहूँणौ डील, खपावण खाफर रौ खोड़ील।
इयै इळ वीचि कलकी आउ, दईतां हूँत परी करि दाउ।
प्रभु करि ऊँची नीची पाति, भुजाडी भोमि पछाडी भ्राति।
निवाजौ साघ असाधा नास, आवौ चन्द्रमा री पूरण आस।
आवौ असि सेत तणा असवार, निमो निकळकी साह निजार।
दमोदर देव किलग दुकाल, करौ हक न्याउ किसन क्रपाल।
हरि हैग्रीव हरे हरि हंस, वखाणै जादव जादव वस।
वड़ौ ध्रम ऐह भुजेतौ वाह, वखाणै वामण नै वाराह।

वखाणै जाणै एक विसन, कहे मति[1] कूरम मच्छ किसन।
कहै दत देव कपिल कल्यांण, तवै दसरथ तणै तुडिताण।
पढे नरसिंघ दिसो करि प्रेम, जोए रे जीव हुये सुख जेम।
निमो नरसिंघ तुहारौ नाम, कियौ पहिळाद तणौ सिध काम।
कियौ तै राघव रूप करूर, चत्रभुज दैत हुवौ चकचूर।
दईव निमो पिथ रिखवदेव, समापि समापि तुहारी सेव।
देवा रा देव अनूप दरस, फरसीय झालणहार फरस।
निमो दसरथ तणा रुघनाथ, सिरजण हार धणी ससमाथ।
निमो रुघनन्दण राम नरेस, सत्रघण साच लखमण सेस।
भिळै तू एक इनेक भरथ, कोसल्या मात निमो हरि कथ।
निमो नित नित अजोध्या नेस, प्रभु ओ वार भलो परमेस।
उवारण रिख तणौ जिग एक, इसा तै कीघा काम अनेक।
माता मारीच्छ तणी तैं मारि, आयो इहिला ना आज उधार।
वळाक्रम तुझ निमो अव वाप, चत्रभुज आप चढावै चाप।
विणै परमेस तणौ वीमाह, अजोध्या माहि हवौ उछाह।
हुवौ वनवासी राम हठाळ, दळेवा दैता दीनदयाळ।
देसै प्रभ सुपनखा नां दुख, समापण इद सरीखा सुख।
जोए खर दूखर रौ घर जाय, जाणै गति प्रामी आज जटाय।
जयो रिख राव सुधारण ज्याग, भले सवरी री भाग सुभाग।
इयै पिंड माहि नही अपराध, सही सुगरीव वडौ कोइ साध।
नमो हणमत तणौ कहि नाम, वडो भड सत तणौ विसराम।
प्रभु दधि ऊपरि वाधण पाज, आयौ लक ऊपरि राघव आज।
आयौ असुरां री भांजण आस, प्रमेसर छोड़ि ग्रहा रौ प्रास।
प्रभु री सत लीये लंक पाट, दियौ दहकध तणौ सिर दाट।
विधासइ रेसइ राकस वंस, कीयौ दहकध कीयो तै कस।
घडै सुरलोक तणौ सहि घाट, वडौ कोइ डील नमौ वैराट।
वड़ो कोई ख्याल नमौ व्रजराज, गयौ सुणि साद नमो गजराज।

---

[1] नित

अलेख सलाम सलाम अलेख, सतगुर सेज बलिभद्र सेख ।
देवापति सांमळ देव दुगम, अईयो अनरज सकज अगम ।
अहो पदवन वुवा अवतार, वडा पतिसाह हुओ असवार ।
वडो तू नान्हो एकोजि ब्रह्म, पढां जस कासूं कासूं भ्रम ।
रीझावां तुझ किसी विधि रांम, पूजीजै कीजै केम प्रणांम ।
अणकळ सबळ देव अभग, जीपै कुण माधव तोसां जग ।
बराबरि तूझ करै कुण बाप, अविगत नाथ वडेरा आप ।
वडो सहि थोका हुंति विसंन, प्रमेसर मूझ समापो पुन ।
प्रमेसर पार अपार अपार, नारायण नेह निमो निरकार ।
नाराइण नेह निरगुण नाथ, सरगुण सामि धिणी ससमाथ ।
अइयो अणभंग असगीय अज, कीळा नह लीला लज अलज ।
अइयो अवरन वरन अलाह, प्रभु पतिसाह सिरै पतिसाह ।
वडेरा हुंति वडेरो ब्रम, पोढेरा हुंति पोढेरो भ्रम ।
जूनो तूं जूनो देव जुरारि, महा गरढेरो ग्यान मुरारि ।
देवां नै दईतां रो दीवांण, प्रभु तूं आप तू छो प्रांण ।
क्रमा रो क्रम ध्रमां रो ध्रम, जीवा रो जीव जमां रो जम ।
सवां रो बाप सिधां रो सिध, वडो तू नान्हो बाळक वृद्ध ।
तंतां रो तंत तना रो तन, वेदा रो वेद वनां रो वंन ।
कामां रो काम काळां रो काळ, वंभा रो बाप निमो विरदाळ ।
रुद्रां रो रुद्र हणमत राम, नाराइण तुझ तणो नह नाम ।
नारायण तूझ निमो निरकार, इसो तू आतम प्राण अधार ।
नाराइण तूझ लिवारै नाम, गदाधर तो बह बैकुंठ धाम ।
नाराइण नारी नरां सुर नाथ, हिमै अति वाल्हा थारा हाथ ।
नाराइण आपो ओण निवास, अम्हारै तूझ तणी छै आस ।
नाराइण नाग नरा सुरनाथ, हिमै अति वाल्हा थारा हाथ ।
नाराइण तूझ दरगहि नाखि, अम्हांनां वाल्ही थारी आख ।
नाराइण नाम नाराइण नेह, नाराइण दास नाराइण देह ।
नाराइण निध नाराइण नूर, नाराइण हंस नाराइण हूर ।

नाराइण साच नारायण सील, नारायण देव नाराइण डील ।
नाराइण जिग नारायण जाग, नाराइण अगतिम रूप अताग ।
नाराइण धूप नारायण ध्यान, नाराइण गाळि नाराइण ग्यांन ।
नाराइण वाघ नाराइण वाह, नारायण वांमण नै वाराह ।
परा करि आडा खोलि कपाट, नाराइण तू सै देव निराट ।
हरे हरि राम उपावण हार, तूं सै दसरथ तणा करतार ।
प्रमेसर टाळि परा जम-पास दमोदर पीर तुहारौ दास ।
रीझै किहडी विधि जादव राउ दमोदर मूझ वताड़ौ दाउ ।
प्रमेसर मुझ समापौ प्रेम, गावां गुण तूझ गमाडां गेम ।
भगति समापि हिमैं वड भूप, सांई हूं देखां तुझ सरूप ।

॥ कवित्त ॥

सांई तुझ सुविहाण, वडौ दीवाण विगतौ ।
तूं सबलौ सुरतांण, कांम सहि तूं हीज करतौ ।
कै नह करतौ किसन, किसन दीपा निन कहियौ ।
कहियौ कासूं कहौ, रांम एक तू हीज रहिऔ ।
भगवत भिणे भगवत भिणी, त्रीकम-त्रीकम प्राण तवि ।
नाराइण किहिक तूं सां नरिंद, करै पुकारा पीर कवि ।

इति श्रीनाराइणनेह सपूर्ण लिखत ॥

संवत् १७६२ रा कार्तिक वदी १ दिने रविवारे विद्वान देवचन्द्र लिखतं श्री कोढणा मध्ये घर्षिता ॥ श्री ॥

(राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, गुटका न० २०)

परमेसरपुराण

॥ अथ दूहा, आराध रा ॥

प्रथम विनायक पूजियै, प्रघळ हुयै कोई पन।
रिधि सिधि समपै राजियौ, गुणपति देव गहन ॥ १ ॥
काइमि काइमि केसवा, राम तुम्हारौ राज।
हूं थारौ बारट हुग्रौ, सधर धणी सुभराज ॥ २ ॥
ढील मती करिजो धणी, वेगा सांवळियाह।
बारट बाहुड़ियो वहत, साहुलि सांभळियाह ॥ ३ ॥
ग्रै घोड़ा ग्रै आदमी, कहौ नी आया काह।
कोइ मोटौ पारभ कियौ, आरभ निमो अलाह ॥ ४ ॥
तूं तीकम रहमांण रब, तूं काइम करतार।
तूं करीम वसदेव तण, आप लियौ अवतार ॥ ५ ॥
घण दाता जीवै धणी, वैकठ तणा वरीस।
पीरदान बारट पुणै, आलम नां आसीस ॥ ६ ॥
कद साभळसौ काइमा[1], पीपल गाइ पुकार।
हंस राजा कद हींससै, कद मिळिसै करतार ॥ ७ ॥
कळस थपावै कोड करि, निरखि चलावै नाउ।
समद तरौ जै साधुग्रां, समरौ आलम साह ॥ ८ ॥
बीज तणै दिन बोलिया, वचन धरम[2] रा वाह।
साचव हरि जो साधुग्रां, आया आलम साह ॥ ९ ॥
उणि दिसड़ी सू आविसै, वाह पछिम री वाट।
जे चाहै जगदीस ना, पूजि पछिम रौ पाट ॥ १० ॥

---

१ केसवा। २ अमोलिक।

घोडिलैइ चढै घणीरिडै, माडी जुध मीराह ।
खेत उजेणी मां खसी, पछिम रा पीराह ॥ ११ ॥

धरणीधर मोटो धिणी, मोटा सा मोटीह ।
तू नान्हा सा नान्हडो, दे दईता दोटोह ॥ १२ ॥

कूड़ा ना कूटाड़िसै, हुइसै हेककार ।
भोमि किलंगरी भेळिसै, आलम रा असवार ॥ १३ ॥

नारद मा कीधी निपट, हरीचद मांही हेल ।
पीर कहै परमेसरा, खरो तुम्हारो खेल ॥ १४ ॥

तिलोई न जांणै ताहरा, ब्रह्मा जिसा विमेख ।
काइम तू सबखो करै, अवखौ मारग एक ॥ १५ ॥

साई तू सिरदारडो, सखरो थारो साथ ।
तूं देवां रो दीवलो, नव नाथा रो नाथ ॥ १६ ॥
खबर करे नै खोजिये, दीसै एक दईव ।
किम करि सिरिजै केसवा, जग पुड इतरा जीव ॥ १७ ॥

परमेसर थारी पहुँच, निमो निमो निरवांण ।
सिहि जीवा नां साहिबा, रिजिक दीयै रहमांण ॥ १८ ॥
अला अला आवै अला, भला भला सिगि भूप ।
परमेसर वाधौ पला, एकलमला अनूप ॥ १९ ॥

अला तुम्हारो आसरो, अला तुहारी आस ।
परमेसरजी पालिजे, पीर तणा जम पास ॥२०॥
हिमै किहिकं सुप्रसन हुए, निकलक साह निजार ।
सामी राजा साभळे, पीरीयै तणी पुकार ॥ २१ ॥

हसा राखि हजूर मा, सखरी वास सुवास ।
सोरभ आवै सामिरी, दाखै वारट दास ॥ २२ ॥
हसा राखि हजूर मा, हसा राखि हजूर ।
चौक घणीरा चक्रधर, प्रिथमी ऊपरि पूर ॥ २३ ॥

घरा तेजालू घोडलौ, तुरी करै वह तांन।
हीरै जडित पिलारणियौ, दे वारट नां दान॥ २४॥
काइमि तू सां पीर कवि, अरज करै छे आज।
किहिकि अमोलक केसवा, मौज दियौ महाराज॥ २५॥
चौरी वैठे चक्रधर, वळि सुहिद्रा रौ वीर।
वावै ना सवळा विरिद, पुणै कवेसर पीर॥ २६॥
वड़ हथ तै दीन्हौ वचन, मनड़ौ वारि[1] महेस।
माता दाखै मेघडी, वलिरिण करौ दरवेस[2]॥ २७॥
किसौ भरोसौ काइमा, आवी वीज अनेक।
तूं के जाणै त्रीकमा, हूं जाणा छां हेक॥ २८॥
मरणै कुंआरी मेघडी, भलौ भलौ भरतार।
माहरौ दुख सुख माहवा, हीअडौ जाणण हार॥ २९॥
कद करिसौ दुनीआन मां, खू दालमजी खैर।
चुड़लौ कद पहिराड़सौ, वकै कुआरी वैर॥ ३०॥
राणी सीता रुखमणी, गोपी चोखै ग्यान।
निविली नां दीजै निही, मेघड़ की ना मान॥३१॥
कीजै दीजै काइमा, वांझणिया नां पूत।
पीपळियां रै फूलड़ा, हाथिणीयां रै दूध॥३२॥
गाइयां री तु गोविंदा, माहरोइ दाळिद मारि।
औ चन्द्रमा ऊभौ चवै, इणिरौ कलंक उतारि॥३३॥
आखिड़िया पूछाडिसै, पिंडता निहि पिछाण।
साहिब चढिसै सेतलै, हुइसै निगुरा हाणि॥३४॥
नीलांणी धरती निपट, ऊगा रूंख अनेक।
काइम तै भेळा किया, हिन्दू मुसिला हेक॥३५॥
आवौ नी आलम उरा, अलख करै एकाति।
फेसि दीयौ कालीग फल, भाजि दीयो नी आति॥३६॥

---

१ ठारि। २ धरवेस।

काइम करो कटकड़ी, आणी जोध अडूर।
वरतावीजे वीठला, निव्रळां माँही नूर ॥३७॥
कोड़े बारह काइमा, सात करोड़ साध।
निपट भलेरा पाँच नव, यौ घटियौ[1] अपराध ॥३८॥
मुकुन्द वधायौ मोतीये, साहिव कसंन सरीख।
औ आलमसा आईयौ, औ लायौ लाखीक ॥३९॥
सतरि हजार हुसेनिया, पांडव सरिखा पाथ।
मूसा ईसा मुहमदा, सतगुरुजी रौ साथ ॥४०॥
साहिवजी थे साहजी, आलमजी आदेस।
काइमजी कल्याणजी, पूरणजी परमेस ॥४१॥
सतगुरु साह निझारजी, राघवजी रहमाण।
त्रीकमजी चड़िजो तुरत, साहिवजी सुभिआंण ॥४२॥
जीवा रौ पति जीमिसै[2], करिजौ वेग कंसार।
मेघ तणौ घर माल्हिसै, निरखौ साह निजार ॥४३॥
नाराइण तूनां निमो, असि अईऔ असवार।
भ्रांति खलक री भाजिसै, अलख तणौ अवतार ॥४४॥
बावौ तरगस बाँधिसै, धुणिसै खड़ग त्रिधार।
खेत उजेणी खेलिसै, करिसै जै जैकार ॥४५॥
चौसठि जोगिणि चाखिसै[3], असरा मांस अपार।
आलमसाह उतारिसै, भोमि तणौ सहि भार ॥४६॥
वडा वडा संख वाजिया[4], घणा कटक घमसांण।
कालिंगो नें केसवो, जूटा जोध जुआण ॥४७॥
आलम सहि उधेडिसै, पाप तुहारी पेढ।
आज मडाणी आकरी, विसन किलग रै वेढ ॥४८॥
खालिकि ऊभौ खेत मां, सवळा दईत संघार।
सतगुरु कीधौ साथरौ, मोटा दाणव मार ॥४९॥

---

१ मिटियौ। २ आविसै। ३ चेतिसै। ४ वाजिसै।

तातै अति लोही तणां, वहिसै वाहिळिया ।
तिमि काळीगा ओड़िया, जिमि दळिया[1] डाहुळिया ॥५०॥
देव कहै सिगळा दियौ, ईसाणद आसीस ।
किलग न जीतौ कापिरिस, जुध जीतौ जगदीस ॥५१॥
जख कीदर पीतर जणै, इमिया आखि अलाह ।
ब्रह्मा सकर वखाणियौ, पछिम तणौ पतिसाह ॥५२॥
गावतरी जमणा गंगा, सावतरी नै सीत ।
पारवती पदमावती, गाय अलख रा गीत ॥५३॥
कान फाड़ नै कापडी, सहि साधां रौ साथ ।
पिडत वखाणै पीरना, नाग वखाणै नाथ ॥५४॥
चारण सहि कीरति चवै, अमर करै आदेस ।
ग्यान करीमौ हुइ गियौ, विसिनि कियौ कोइ वेस ॥५५॥
संमरा मंडप सभावियौ, न्याउ करण निरधार ।
जाजम जांबूदीप मां, बावै री दरबार ॥५६॥
बारट ईसर बोलिया, निकळक साहिब नाम ।
किलग दईत ना कूटतां, कीधौ सखरौ काम ॥५७॥
हरि मिळिया वह हेत सा, सतगुरु नामै सीस ।
उरा पधारौ एथीयै, आवै बारट ईस ॥५८॥
ब्रह्मा सिव मिळिया वळै, जोइ हसिया जगदीस ।
मुकदि वधाया मोतियां, आया बारट ईस ॥५९॥
वालिमीकि कीधो वळै, व्यास कियौ जस वास ।
भव भव री म्हारौ भगत, देखौ ईसरदास ॥६०॥
सूरिजि चन्द्रमा सारिखा, वैठा छै विरदाळ ।
खेतपाळ हणमत खरा, कोटवाळ किरणाळ ॥६१॥
सहस अठ्यासी रिखेसर, अणवर ब्रह्मा ईस ।
मिळिया मेळै सामिरै, सुर कोड़ै ओतीस ॥ ६२ ॥

---

१ जीता ।

अनत पीर फकीर अति, अनत भगत अणपार ।
वळिराजा पाडव बहत, हरीचद सतरि हजार ॥ ६३ ॥
सेस गुणेस पताळ सहि, सात सरग रै साथ ।
नारद नै नव नाथ ना, नूर उछाळो नाथ ॥ ६४ ॥

प्रभ मेघां रै परणिया, रिमा तिणे सिरि रीस ।
वारट ईसर वोलिया, जमौ करौ जगदीस ॥ ६५ ॥
वहनांमी तद वोलिया, हणमत किया हुकम ।
उरै तेडावै एथीयँ, घेना सत्त धरम ॥ ६६ ॥

हरिचन्द्र ना दीन्हा हुक्म, साचा तेड़ौ साध ।
माडौ चीण-मचीण मां, अलख तणौ आराध ॥ ६७ ॥
आवै कोडि अपछरा, पीडित साघख पख ।
पारवती सरिखै प्रघळ, आवै सतै 'असख ॥ ६८ ॥

असख वाव रिषि भाप रिषि, घोम रिषाँ वनधन ।
मेघ रिषां रै माडहै, विणियो वीद विसन ॥ ६९ ॥
साधा ऊपरि साहिवा, रीजौ राघवड़ा ।
रँवत चढ नै रामड़ा, आवै आलमड़ा ॥ ७० ॥

काने कू डळ काडमा, विणियो ऊजळ वेस ।
मिळियौ साचा मुनिवरां, निकळंक नाथ नरेस ॥ ७१ ॥
साध गरीव सुधारिसै, रिमां तणौ रिमि राह ।
पिडतां पाट पधारिसै, पछिम तणौ पतिसाह ॥ ७२ ॥

हिदुआणी नै तुरकणी, विन्हइ तुहारै वैर ।
ऊभ वळै आवै अधिकि, वडौ इआरै वैर ॥ ७३ ॥
हिदुआणी हालै हुक्म, ताहरै तुरकांणी ।
किसी सोहागिणी केसवा, रूघनंदन राणी ॥ ७४ ॥

सेव करै वेवइ खसा, राडा आघै राण ।
घट घट मां वैठो घणो, दीसै नी दइवाण ॥ ७५ ॥

ग्यान ठगारौ गोड़ियौ, संकर करिसै सेव ।
बीठुल मांहि विराजियौ, दरसण दीरौ देव ॥ ७६ ॥

प्रघळा दईत पछाडिया, भिड़ि जीता भाराथ ।
ताहरौ दरसण त्रीकमा, साध करै ससमाथ ॥ ७७ ॥

पूरै सूरै पाइयौ, भुयण तिहु चौ भूप ।
साधेई साराहियौ, आलम साह अनूप ॥ ७८ ॥

घण सोहागण मेघड़ी, भलौ तुहारौ भाग ।
बारट ईसर बोलिया, सथिरि रहै सोहाग ॥ ७९ ॥

काइमि री बारट कहै, ठकराणी ओ ठीक ।
साहिब राघव सारिखा, तूं सीता सारीख ॥ ८० ॥
आघी वैठौ ईसरौ, जोत हुई जजमांन ।
मात विराजी मेघडी, गादी वैठो ग्यान ॥ ८१ ॥

राउत रिणसी रांमदे, वडिमि घिणेरी वाह ।
सगळाई साधा सिरै, नेतळदे रौ नाह ॥८२॥
रामइओ अजमाल रौ, आलमजी रौ यार ।
साभिळिसै कलिमा सही, पीरिया तणी पुकार ॥८३॥

साघ विजैसी सारखा, सेलारसी सरीख ।
पदवन रै लागा पगे, ऐ जोइ नइणे ईख ॥८४॥

मलीनाथ राउळ मुदे, रूपादे राणी ।
जमलै आयौ जेसलौ, तोरल कठियांणी ॥ ८४ ॥

सोढौ लालौ नै समस, साहसघर रसघीर ।
मोटौ दाणव मारियौ, भगवति कीधी भीर ॥ ८६ ॥
किसनै खीची रै किन्ही, लालै नै हरिदास ।
कर जोडै अेवइ करै, आलम ना अरदास ॥ ८७ ॥
पदमा देवाइचि प्रघल, ब्रह्म बखाणै वाह ।
पूंजळदे रै प्रेम सा, आयौ जमै अलाह ॥ ८८ ॥

वांभण डेलू बोलिया, काइम राजा केथि ।
धिणी तुहारो धारुआ, श्री जोइ वैठे अेथि ॥ ८९ ॥

भाटी ऊगमसी भलौ, साधां री सिणगार ।
बाहड आसा बारहट, जमलै माहि जुहार ॥ ९० ॥

राणौ कूंभौ राइमल, मेहौ हरिभम पीर ।
सिगळां नां सुभराज छै, पावू गोगा पीर ॥ ९१ ॥
कमध अनोपे करण री, आईदान अवदाल ।
काइमि सां वाता करै, अमरसिंघ अजमाल ॥ ९२ ॥

अेकल जघा आइया, विमळ वहिथिया वाज ।
जळ-माणसिया जोइया, सूप कना सुभराज ॥ ९३ ॥

कवि किम करि लेखो करै, पांडव प्रघळा पाथ ।
पार न जांणै पीरियौ, साघ घणां ससमाथ ॥ ९४ ॥

मलिकि मुलाणां मोकळा, खासौ रूप खुदाइ ।
दीसै दरगहि देवरै, गोदड कविली गाइ ॥ ९५ ॥
काइम रौ दरसण करै, पीपै सरखा पीर ।
गोसाई रै गोठ मा, के नामदे कबीर ॥ ९६ ॥

मधकर मीसण मानियौ, परमेसर रै पासि ।
मेला सखरा माडिया, सूरतिगिर सावासि ॥ ९७ ॥
ओप साह ऊहड अभग, कमधज करिणाळा ।
हाथ जोड हरजी हंसै, साहिब बिरसाळा ॥ ९८ ॥

पापी घाणी पीलिहजै, दीन तणै दरबार ।
कूड़ा कावड़ कूटिजै, औपा करिओ नियारि ॥ ९९ ॥

हरिचद राठी पीर हु, घन राठी घनराज ।
नाहरखान नरेस ना, सुकवि करै सुभराज ॥ १०० ॥
देखौ वीकौ देवलौ, पांचै रिखियौ पात्र ।
भाई बलूडा भागचद, वीठुल सा करि वात ॥ १०१ ॥

तुलछी गिरि तारण तरण, दळ मिळिया अवदाळ ।
सूरिजमल सिरिदारसी, दुरजणसिंघ दुझाळ ॥१०१॥
भइयौ सीतळ भारथी, साचौ साध ससार ।
सुंदर जेठी सारिखैं, मिळिसै जमै मझार ॥१०२॥
पूरौ साध पिचाणियो, नाका(रा) रो नेम ।
वारट ना प्यारा बहत, हाथीड़ौ नैं हेम ॥१०३॥
हरिजन सहि भेळा हुआ, हुई किलग रै हार ।
वाल्हो तुमां बीठला, गोविंदि लाखौ गुआर ॥१०४॥
मुंहतौ रतन महेसरी, तिलो कुअर तुडिताण ।
केसरि नांखे तू करैं, आलमजी री आंण ॥१०५॥
नागा नवखंड रा नरा, गोविंद चकर गदा ।
गोडवाड़ गिरनार रा, साधा सुवा सुदा ॥१०६॥
फतियौ फिरिसै फौज मा, भुंडा रै उरि भाहि ।
डोहा करिसै दीनियौ, मुसै रै घर माहि ॥१०७॥
वारट झरोखै बैसिसैं, काइम हदै कोटि ।
रेखौ वैठी राज मां, राणो करिसै रोट ॥१०८॥
गिरगुण दाखै नारिणा, फौज किलग री फौत ।
तैं सखिरैं चारै सही, गाईआ नां गुहिलीत ॥१०९॥
विमळ मजीरा वाजिया, के तांती झणकार ।
भजन कियौ मिळि भाइयाँ, औं तूठी अवतार ॥११०॥
घणां नूर अनरै घरे, अति निपजसै अंन ।
साधा ना तूठौ सही, काइम राउ किसन ॥१११॥
तूं तू हीज हिंदू तुरक, भेळौ हू भगवान ।
एकिणि थाळि आरोगिजै, पेड़ा नैं पकवान ॥११२॥
के फेरा जीतौ किलग, हुऔ कपिल दत्त हस ।
रांमण कितरा रेसिया, कितरा जीता कंस ॥११३॥
केई प्रवाड़ा तैं किया, आखा कितरा एक ।
बळि छळियौ फेरा वहत, हरण सरीखा हेक ॥११४॥

मथियौ के फेरा महंण, भगते भरिया भूंक।
तैं दीन्ही वसदेव तण, फेरा कितरा फूंक ॥११५॥
बावा तूं बाळा विरिदि, अइऔ पुरिखि अलाह।
सहसाबाहु सारिखा, गिळिया कितरा ग्राह ॥११६॥
रिखबदेव हैग्रीव हरि, नाराइण नरसिंघ।
पारि उतारै पीर नां, तू परमेस त्रिसिंघि ॥११७॥
बळिभद्र वुध तू नां विरिद, सबळा चड़िसें सेस।
परौ उधारैं प्रांणीयौं, पीर कहै परमेस ॥११८॥

इति श्री परमेसर पुराण संपूरण लिखियौ छै।
संवत् १७६१ जेठ सुदी ७।

अथ गुण हींगळाज रासौ

मुर भुयण उपरि महमाया, माता जगत तणी महामाया ।
मुनी भगति दियौ महमाया, आई नाथ तें धरम उपाया ।
तु' सां ब्रह्म विसनही तरिया, ते उर ऊपरि माणस धरिया ।
ते पावइ' वड़ा व्रिदि पाया, ते जगदीस जिसा नर जाया ।
इ'मिया खिमिया मांस अहारिणि, चारिणि निमौ सैणला चारिणि ।
खळ धारा सिगळाई खूटा, तु सां वाद कियो से त्रुटा ।
करनळ मात निमो किनियाणी, तू जोरावर दइता जाणी ।
मोटे असुर तणा मद मोडै, तु' मैंपासुर झालि मरोडै ।
सुरां तणी दिळि ठरी सवाइ', मैंषासुर लीवो मुख मांही ।
मैंपासुर सरिखा महमाया, असुर खपाया तैंही ज उपाया ।
तैं पतरे मैंपासुर पीधा, केसव ब्रह्म निचिंता कीधा ।
दईतां रै ऊपरि थारौ दड, चड मुड कद चीना चामड ।
सभ निसंभ सरिखा छळिया, त्रिभुयणनाथ तणा भौ टळिया ।
दैत वारिवा दळियो देवी, कमण करै जुध तु सा केवी ।
असंख पवाड़ा तुझ तणा अति, तु' जमघटी सकति सदोमति ।
रगत ववाळि निमो रुद्रराया, मु' सां कृपा करे महमाया ।
तु मद पीयै तु मदमती, तु' छत्र छती तु हीज अछती ।
रवराया किहडी परि रीजै, कतीआणी आदेश करीजै ।
देवौ देवी रिधि सिधि दीजो, किहि कि अम्हां सिरि मया करीजो ।
देवी तणो भुजंन दाखीजे, भलो भवानी मात भिणीजै ।
भिळे भवानी भिळे भवानी, जगजीवन ब्रह्मा सा मुनी ।
वीस भुजाली वडा बडेरी, तु' मोढेरी परां परेरी ।
तु' गरढेरी निसिदिन गाजै, असरैं ऊपरि आग्राजै ।
तु' जड़धार तणौ वळ जाणौं, तु' महराज तणौ घर माणौं ।
तु' कु'डळणी मात क्रहाणी, धिणीयां री तु'ही ज धणियाणी ॥

अमरां नरा पन्नगां आई, कोड़ि ब्रह्म नां खबरि न काइं।
काळ रूप तुं कहिजै काळी, चामड मात निभो चरिताळी।

अथ दूहा

तुं चरिताळी चामंडा, वहु गरढेरी वाळ।
आदि विहूणी ईसरी, काळ तणै तुं काळ॥ १॥
घिणीयाणी तु हिज घिणी, दईव तुहारा दूत।
अहि नर अमर उपाइया, भिळै निपाया भूत॥ २॥
आदि सकति तुं ईसरी, दूजां नावै दाइ।
पीर तणै सिर पावई, महर करे महामाइ॥ ३॥
महमाया माया निमो, परम न जाणै पार।
ते हीज निपाया तीन गुण, कै जाया करतार॥ ४॥
दानव सहि तु सा डरै, अमर करै आदेश।
नाग शेष तुं नां नमै, मोटो देव महेश॥ ५॥
समद सां न तुं सांसही, निमणि करै नवनाथ।
इ दि उतारै आरती, सकति हुई ससमाथ॥ ६॥
हर विरंच चाकर हुआ, अमर करै सहि आस।
करणाकर निसदिन करै, देवी नां अरदास॥ ७॥
ह्राथ नमो तु वीस हथि, जुधि जुधि कीधी जैत।
गिळ्यिा लोही रा गटक, देवी दळ्यिा दैत॥ ८॥
वापडा कंटक वूडिसै, आइए पारि उतारि।
ताहरा सेवग तारिया, तिमि मुनाई तारि॥ ९॥
काळी माता काहली, भगता ऊपरि भाइ।
जिमि तुठी सुर जेठ नां, इमि तूसे महमाइ॥ १०॥

॥ छद त्रिभंगी॥

तौ रवराया राणी सकति सप्राणी भगता भाणी मिनि भाणी।
घन असुरा घाणी जुध मां जाणी जवने जाणी सहि जाणी॥
जड़ घारि न जाणी प्रघळ पुरांणी अधिकि हुई किमि करि इतरी।
पारवती निमो हेमरी पुतरी सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी॥

रिमि रूप रमाया खळ सहि खाया गेम गमाया गुण गाया।
घिणीयाणी धाया विलंब न लाया आराधां नां सुणि आया॥
नर नाग निपाया अमर उपाया देवी माता तुं दत री।
पारवती निमो हेम पुतरी सीतामाता सावतरी देवी सीतामाता सावतरी॥
आराधी ईसरि मंदै महेसरि पैठिसै कीरति - परमेसर।
जंपसै जोगेसर सुकर सैनीछर सप्त रुसेसर ने ससिहर॥
होगोल सकतिहर निमो नरेसर कोइ कि जाणें तुं कितरी।
पारबती निमो हेम पुतरी सीतामाता सावतरी देवी सीतामाता सावतरी॥
तुं मात जगत री तु हिज घरतरी सकति सकति री तुं सत री।
तुं भोमि भरथ री भीर भगत री आसु अतरी तु अतरी॥
वप ब्रहंम विवत री सरव वुसुतरी तु गगा तु गावतरी।
पारवती निमो हेमरी पुतरी सीतामाता सावतरो जी सीतामाता सावतरी॥
साधां गिरि राया जै महमाया सातां दीपां मां छाया।
कोइळा गिरि काया धंव धंमाया मव कीटग तैं माराया॥
जग वंधे लाया जुग सहि जाया तुं गरढेरी महततरी।
पारवती निमो हेमरी री पुतरी सीतामाता सावतरीजी सीतामाता सावतरी
निसचर निरदळिया दुसमण दळिया कंटग कळिया तैं तळिया।
मैंषासुर मळिया गुद्रस गळिया संभ निसंभा तैं छळिया॥
प्रभ शकर पळिया वखत ज वळिया भाति तुहारी इण भत री।
पारवती निमो हेमरी पुतरी सीतामाता सावतरीजी सीतामाता सावतरी॥
कहे जिनिपि किसोरी सकति सजोरी चरिति निमो ईता है चोरी।
चिंति सभु चोरी चित सहि चोरो गौरि सरीखी तु गौरी॥
मिनि ब्रहमा मौरी फतै फरसरी रेण मुखी तु रतरी।
पारवती निमो हेमरी पुतरी सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी॥
शिवि शकर सरणें सुर सहि सरणें सुरां वडेरो तु सरणें।
धख पखयिणि धरणें धरम सधरणें धिणियां माथै सहि धरणें॥
चिंति लागै चरणें ब्रहमा वरणें गेमरा माडे सिहि गतिरी।
पारवती निमो हेमरी पुतरी सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी॥

कवित्ति

पारवती परमेस सरब पारबती सती ।
कहि हो कहि त्रिसकति जोग तु गोरख जती ॥
सीता श्री सारिखी श्रीया सारंगधर सरिखी ।
सावतरी सुभराज प्रघळ ब्रह्मा जी परखी ॥
तु पच्छिमि पाट पतिसाह तुं भेस सरब भगवत भू ।
पीरीये कहै परमेसरी हीगलाज सुप्रसन्न हू ॥

॥ इति श्रीहीगळाजरासौ सपूर्णम् लिखतु लालस पीरदान वाचै जिण नु राम-राम स० १७६२ काती बदि १४ वार थावर छै ॥

सुभराज करै तना सुर सामिणी ताहरै नाम साम्हेई तरा ।
जयो निमो तु ना जग जामिणी कतियाणी आदेश करां ॥१॥
काळिका तु हिज कु वारी काया मनछा पारबती महमाई ।
सावतरी सीता सुर सामणि साधूडा रो हुवे सिहाई ॥२॥
सकति हुए भगता रै साथे धाणीया मा असुरानां धाति ।
धरम तणो तु हिज धणीयाणी पाप पछाडि परौ परभाति ॥३॥
आवै हे आराधे आई भाई हे दाखे भहरी ।
पीरीयै तणो उतारै पातिग साचा रे वसिजो सहरि ॥४॥

पीरदानु कहै

॥ श्री सारदाइ निमा । श्री गुरुभ्यो नमा ॥

अथ गुण अलख आराध लिख्यते

॥ दूहा ॥

वघवांणी तू ऐक ब्रंम, ओऊकार अपार।
किमि करि कीधौ काळिका, विसव तणौं विस्तार॥ १॥
विसव कियौ तैं बीस हथ, कियौ विमेख विचार।
इम्यां व्रिदि लीधौ इसौ, कीधौ ले करतार॥ २॥
निमो निमो लिखमी निमो, मात तुहारी मति।
निरगुण ना तैं निर्मिवयौ, सरगुण कीयौ सकति॥ ३॥
सकर ना सुरजेठ ना, आस तुहारी आस।
सावतरी थारौ सघर, वडो सुन्न घर वास॥ ४॥
जग जिणणी तूं नां जयो, कुंडळिणि त्रिसकति।
हरता करता तू हुई, माया नाम मुगति॥ ५॥
ध्यान करै थारौ धरम, अलख अपपर आप।
महादेव सरिखा मरद, जपै तुहारी जाप॥ ६॥
तू सिवि काया सरसती, विसन सरीखौ वेस।
ब्रह्मा इणिपरि वदै, आदि सकति आदेस॥ ७॥
मध कीटग तैं मारिया, तूं सबळी सुर राइ।
मारकंड ना मानियो, पिंडति लगायौ पाइ॥ ८॥
सदा सदा हुंती सदा, आदि बिना तूं आप।
सांमि नही को सकति रै, वाप तणौ तूं वाप॥ ९॥
वडा वडेरी तूं वडी, खिमिया तू खिंडि खिंडि।
अवकि देव तू साउरा, परा परा तूं पिंड॥ १०॥
विदिया समपौ वीस हथि, सरसति दियौ समति।
दिओ उकति आखर दिओ, सु प्रसन्न हुओ सकति॥ ११॥
घट हुंता अकरम घटै, अधिक घटै अपराध।
क्रुपा करौ तौ हूं करौ, अलख तणौ आराध॥ १२॥

अलख अेक इनेक अति, लखिओ अलख न जाइ।
अलख अपपर ईश्वर, अलख खुदाइ खुदाइ ॥ १३ ॥
परि किमि करि लागा पगे, पाउ पताळ प्रमांण।
श्रमण दिसै वैंकुंठ छत, राज निमो रहमाण ॥ १७ ॥
चख सूरिज नै चन्द्रमा, घणनामी घट घाट।
पिंडि मोटौ मोटौ प्रभु, वप छोटौ वैंराट ॥ १५ ॥
हंस निमो वाराह हरि, पांणी रूप पवन।
पिथिराजा आदेस प्रभ, वांमन निमो विसन ॥ १६ ॥
जीव निमो पहलाद जण, वाघ निमो वड़ आर।
निमो निमो नरसिंघ नर, कोपि निमो करतार ॥ १७ ॥
नाभ सुतन रिखव निमो, निराकार निरधार।
कपिलि मछ हैग्रीव कहि, जोगी दत्त जुहार ॥ १८ ॥
नंद निमो वसदेव नर, पति निमो प्रदुमन्न।
अनिरुध नै बळिभद्र अनत, कूरम निमो किसन ॥ १९ ॥
राम फरस राघव भरथ, सत्रघण लखमण सामि।
असुर सघारण आइयो, गोविंद गोकळ गामि ॥ २० ॥
धन गोकळ नंद ग्वाळ धन, धन जसोदा धन।
विंदावन धन सरब वन, वाह वाह मघवंन ॥ २१ ॥
तारि तारि मुना त्रिगुण, परमेसर पतिसाह।
बुध अवतार महावळी, आलम अलख अलाह ॥ २२ ॥
नरहर गुरु निकळक निजि, साह निजारी साह।
गरुओ मूरति ग्यांन री, अेको अेक अलाह ॥ २३ ॥
पीरदास जंण परसि रे, दीनानाथ दरस।
जोति निमो जगदीस री, काइम निमो कळस ॥ २४ ॥

॥ अथ छंद भुजगी ॥

निमो कळसरा धिणी काइमि किसंनूं।
निमो पखाळै तूझ पांणी पवंनूं।
निमो प्रभु परमेस अणंपार पारू,

निमो जगतरा बाप तूनां जुहारूं ।
नमो नर सुरां नाथ निरगुण नरेसुं,
नमो सेभ्क थारै हुओ नाग सेसु ।
नमो बिसन विसथार अधिको वणायौ,
निमो जोनि ब्रह्मा जिसो पुरुष जायो ।
निमो तीन गुण राव पति पांच तत्तं ।
निमो सीळ रा डील तूं साच सत्तं ॥
निमो ब्रह्म तूं ब्रह्म वैराट वपं ।
निमो ओण पाताळ तू वीज अपं ॥
निमो ताहरो सीस अगलोक सरिखुं ।
निमो पुळदर जिसा नह पडै पुरुखं ॥
निमो वेद ही पार जाणै न ब्रह्म,
निमो पार पामै नही तूझ भ्रम ।
निमो अघळ पैकंबरा अघळ पीरा,
नमो माई या करै आदेस मीरां ।
निमो हस हसा तणी जोति हरता,
निमो काळ ही वीह राखै करंता ।
निमो धरम ही तूझ निस दीह ध्यावै,
निमो वडो जण वीण तुंबर वजावै ।
निमो माहवै सरिस यह तत्त मानै,
निमो सदासिव भजै मनमांहि छानै ।
निमो मुकुद मुजरो करै देह मेनं,
निमो धणी ध्यावै सदा कामधेनं ।
निमो प्रभु ना सदा सुर-जेठ पूजै,
निमो दईव री अेव नह हुवै दूजै ।
नमो दईव री क्रीत जमराव दाखै,
नमो अलख री अरक आराव आखै ।
निमो हस पडियौ हिमै ईयै हेवै,
निमो सीत सावत्री गौर अेवै ।

निमो पगां री ध्यान राखै पवनुं,
नमो अलख री करै आराध अनुं।
निमो अलख री जिको आराध आणै,
निमो नारगी तणै कुडे न जांणै।
निमो कटक पतिसाह पतिसाह काचौ,
निमो अलख जाणै जिको रांक आछौ।
निमो अलख री अलख सोभा उचारै,
निमो आप हीज अलख आपणि उधारै।
निमो अलख री करै समरण अनेक,
नमो अलख औ जीव मिळ हुवै एक।
हुकम निमो बाप थारौ हुलाहौ,
आराधै तिनाँ एक जधा अलाहौ।
वडा देव नरसिंघ तौवह विसन,
कहै सुपकना किसनं किसनं।
सपत दीप रिख सात सातइ समंदु,
नवइ नीय ही हाथ जोडै नरिंदु।
गणै तारहा नाम सुर कोड़ि गनै,
अला माहरौ एक आराध मंनै।
अट्यासी सहस रिखी तू नां आराहै,
धणी ताहरौ नाम सह कोई ध्यायै।
धणी थाहरै नाम नां जिके धाखै,
नरां ताहना झालि स्रगलोक नांखै।
वडै धणी रौ विमळ कोमळ वदनुं,
धिणी रौ करै ध्यान तां दाख धनुं।
वडे साधुओ तूझ गायो वचने,
अलाह माहरौ अेक आराध मने।
प्रभु तूझ प्रताप सकर पिछाणै,
जिको ताहरौ सुख सुरजेठ जाणै।

पुरख डोकरा विरिध गरढा पुरांणु,
वडै सांमि रा वेद वाचै वखांणु।
वडा सामि तैं विसव किमि करि वणायौ,
सरग सात पाताळ मुख मां समायौ।
वडौ ताहरौ मुख उरळौ विसाळू,
किसन तूझ नां निमो तुझ काळ काळूं।
अधिक तूझ आदेस कान्हड अकिरिता,
किसन ताहरौ कोप आदेस करता।
अलख नान्हीओ निपट मोटौ अपारू,
अलख रूप अणरूप भगतां उधारू।
अलख काज अकाज जायौ अजायो,
प्रभु ताहरौ पार किण ही न पायौ।
प्रभु ताहरै पिंड नह कोय प्रांणी,
जोगी ताहरी वात किणही न जांणी।
जोगी तुझ ना जयौ जूना जुवारी,
महादेव माहेस अणकल मुरारी।
महावीर वीराधि अेकल - मलं,
अधिक आप उदार दाता अदलं।
प्रथीनाथ ससमाथ तूं पातसाह,
अग्राह अवाह अलाहं अथाहं।
निगुण नांम नह नांम निसवाद नाथूं,
हुअै मुगति देता सरिस तूझ हाथूं।
निमो वरन अवरन प्रधान पुरुष,
सामी कोई सूझै नही तुझ सरखं।
सामी अव तू अब तूं अव सासं,
अखिल भूत तूं अेक तूं अविणासं।
गरुड़ ऊपरा चढै वैकुण्ठ ग्रामी,
निमस्कार तोनं निमो सहस - नांमी।

चरण तूझ चाहा निमो चत्रवाहं,
अइयौ ताहरा पाव उत्तिम अलाहं।
भजै ताहरा नाम से साध भला,
अइयौ जमराजम निरदोप अला।
हुऔ हंस रौ रूप औ राम हुऔ,
वडौ कछ अवतार दरिया विलोऔ।
दिवै दांन रतनां तणौ सरिसि देवा,
जरू दुज दे दाणवा राह जेवा।
महिरिवाण तू मछ माधव मुकंदु,
निमो वाहरू वेद प्रिथमादि विंदु।
अनंत राम हैग्रीव अवतार अैसा,
जिकै मारिया दैत मध कोट जैसा।
कपिल देव करतार रिखव कहीजै,
भली भांति सा सामि मन मा भजीजै।
देवां ऊपरा देव तू दत्त देवा,
सही साध करिसै कोकि तूझ अैवा।
प्रभु पिथि अवतार अणपार पारू,
जख किंदरे जास राखै जुहारं।
परै उखिणै खिणै हरिणाख पाढा,
दईव वाह हो वाह वाराह दाढां।
दाखां तूझ नां निमो नरसिंघ देह,
निमो ताहरौ कोप लिखमी सिनेहं।
किसन तूझना साद पहिळाद कीधौ,
दीनानाथ तै सांमहौ साद दीधौ।
धणी ग्राहनां मारिवा भलौ धायौ,
हरी तूझ अवतार वेदै हुलायौ।
निमो वांमणा राम वैराट ब्रह्मू,
अधिक रीजियो इंदि ऊपरि अग्रंमु।

फरसिराम आउध ग्रहियो फरसु,
अधिक रेसीया खत्री लागो अरसुं ।
निमो रामचंद राघव रूघनाथुं,
भाई लखमण अनै सत्रघण भरथुं ।
भगत वछल दसरथ वो भगवानं,
गयो जिनक सां मिलण केवल-गियानं ।
लियौ पछै वनवास लक हूंत लड़ियौ,
अभग नाथ असुरा सरिस आवि अड़ियौ ।
सती सीत रा कंत असुरा सघार,
विसन ताहरा कमण, लाभै विचारं ।
असुर मार नै अजोध्या ग्रामि आयौ,
वडे हेत सा उठि भगते वधायौ ।
विसभ तूझ ना निमो लीला विलास,
केहर तूझ वाल्हौ धणी कविलासं ।
निगुण नाथ आदेस वलिराम नागुं,
त्रिगुण किसन रा वीर तू सख त्यागुं ।
किसन तूझ ना हिमैं कासू कहीजै,
रहै कोप नह कोप रीजै न रीजै ।
किसन किसन दीपान आदेस कीधौ,
राजा राम तू अजे रीधो न रीधौ ।
लखण लहै कुण लछिवर तूझ लीला,
किसन ताहरी निमो करतार कीला ।
निमो त्रिजरा वाळ स्रग लोक वासी,
आया नद रै आगणैं अविणासी ।
अला नंद रै आगणैं माहि नाचै,
अला राम रा सहज अे साचि राचै ।
अला वाप चरिताळ हाथे वंधावै,
अला हेत सा जसौदा हुलरावै ।
अला वन मां जाइ मुरली वजावै,

राजा राम नां ओथि राधा रमावै ।

अला पौरसे हुओ दईता पछाड़,

अनड गोरधन हाथि एकिरिण उपाड़ै ।

अला मथुरा मां जाइ नै कस मारै,

अला आपरा भगत ओथी उधारै ।।

अला उग्रसेना सरिसि राज आयै,

अला कुरिदि ब्राभरण तरणी तुरत कापै ।।

अला रुखमरणी राज रै पटराणी,

असुर मार नै आहचै भली आंणी ।।

अला अनरज तू हीज भरतार ओखा,

अला सहज पदवन रा तूं ही सरीखा ।

अला जुघ री बात अखियात जाणै,

माली तारि नै कूवड़ी नारि माणै ।।

अला जुघ नै दैत गिरिणया न जायै,

अला खड डडूक नां तूं हीभ खायै ।

अला बुघ अवतार तू वाप बावा,

निमो धरम नां कीध निरबळ नियावा ।।

जुघ धिरणी जगत केरिण भाति जीतो,

विळै खाफरा जिसो दइत वीतो ।

अला साहु लै सिधि वाळै सुणीजे,

अला कलकी तणौ अवतार कीजै ।।

अला अेक हूं राज नां अरज आखा,

दुजां ऊपरां भाउ करि देव दाखा ।।

अला धरम नां निवाजो विलै धेनां,

मला सघारौ दुसटिआं किलग सेना ।।

अला प्रथमी प्रवीति कीजै प्रमेस,

अला नाम नां निमो निकलक नरेसं ।।

अला साथ हुसेनियां तणौ सामी,

अला भलाईं पधारै भुजा भामी।
अला अथरवण वेद मां साच आंणी,
अला पीरियै तणै अरजां पिछांणी।
अला विडगां तिणं फौजां वणावी,
अला आदमां दळ मुसां अणावी।
अला चंचळा ऊपरां मीर चाढी,
अला दाणवा दिसै वागां उपाड़ी।
अला माहि महमद साथै मुलाणा,
अला पास दरवेस दीसै पीराणा।
अला साथ सेखा तणो मिलक साथै,
अला मोकळा कटक करि कलिंग माथै।
अला हाथियां तणै फौजा हलावी,
अला प्रघळ ब्रह्म कीच ना रगत पावी।
अला पीपळै फूल अति वेल फूलै,
अला चढै हस्तण तणो दूध चूलै।
अला वाभणी पुत्र मागै विचारै,
अला तूभनी निमो वाता तुहारै।
अला पतिगह चदमां तणो पालो,
अला भाभ नामी इसा विरद भालो।
अला वास सोवन मा करो वेगी,
अला भलाई पधारै भ्राति भागी।
अला ग्यान सौरी करै हि मैं गाई,
अला साढ़ियां दूध करि प्रवीति सांई।
अला वसुधा माहि अवा वणावै,
अला कालरां माहि हीरा करावै।
अला जोध जुजिठिळि हरीचद जांनी,
अला माहरै जीवि अे वात मांनी।
अला वारहु कोड़ि वकि तणा वेली,

अला राज काइ प्रिथिमादि रेली।
अला कन्या वाट जोवै कुआरी,
अला पिरणीजै हिमै करिजे पिआरी।
अला वाप मेघा घरे मोड वांधौ,
अला परी कालीग सां वेढ प्रांधौ।
अला लाछिवर पहिलड़ौ साच लीधौ,
अला किसौ मेघा सिरै कोप कीधौ।
अला अहै चद्रावळी बीज आवी,
अला ठाकुरा मेघडी पिरिण ठावी।
अला थाविरे थाविरे कळस थापै,
अला आपरै सावुआं सरग आपै।
अला सेत घौडै चढौ धरम साहौ,
अला चक्रधर सूरिज्या मिळण चाहौ।
अला जादवां तुहारी अकल जांणी,
अला घणा आसुरां तणी करौ घाणी।
अला पहुव ी मै ऊपरां चौक पूरौ,
अला चीणमण चीण रा महल चूरौ।
अला महा सैतान तोफान मोडै,
अला त्रिधारै खड़ग सा दईत तोड़ै।
अला खेत उजीण मा भूझ खेलौ,
अला चवै ईसर तणौ पीर चेलौ।
अला वधाई आज कुंता वधायौ,
अला गावित्री गौरिज्या गीत गायौ।
अला सावित्री सूरज्या सती सीता,
अला ग्यांन आदेश उणिहारि गीत॥
पणौ पीरियो दास प्रभ पतिसाहो,
अला हो, अला हो, अला हो, अला हो।

॥ कवित्त ॥

अला तूझ उवारण जयो जगदीश जुरारी।
नरहर गुरु हरनाथ निमो निकळक निजारी.
कन्हैया कान्हुआ निमो निकलक नरेसर।
ग्वाळ निमो ग्वाळिया, साच सार्थं सारगधर।
राजि ना किसीपरि रीझवा, राज वडा राधारमण,
पीरियौ तूझ दाखं प्रभु, मूझ निवाजे महमहंण ॥
पाचा सा पहिळादा, पाट हरिचद पधारौ,
नवां कोड़ियां नूर, सात कोड़िआं सुधारौं।
बारा सा बळि राउ जोति सा मिळिया जाए,
चढिया छं चचळे, अलख गुर ईसर आये,
आरती इसी अरिहत री मोटा पातिग मारत्ती,
आरती अलख-आराधना ईसरजी ना आरतीं।

॥ इतिश्री अलख-आराध सपूर्ण ॥



||६०|| श्री गणेशायनम. श्री गुरुभ्यो नमः

अथ गुण अजंपा जाप

|| दूहा ||

हूं मांगां देवी हुयौ, अथिरल वांणि उकत्ति।
वळे विनाइक वीनवूं, सिद्ध बुद्ध द्यौ सुमत्ति ।। १ ।।

वाह विनाइक देवता, नमो विनाइक नाथ।
तूं सिद्धदायक रूप सुभ, तूं सतगुर सम्रिमाथ ।। २ ।।

सूंडाळो लाइक-सुरां, रांम सरीखौ रूप।
ब्रह्म सतगुर हूंता वडौ, ईसरदास अनूप ।। ३ ।।

ईसाणंदि आराधियौ, आठइ पहर अलेख।
दीठो दरसण देव रौ, ओळखीयौ प्रभु एक ।। ४ ।।

एक नमो तूं ईसवर, समपि तुहारी सेव।
व्रिज वाळा चरित्र.ळ ब्रह्म, दीन दयाळा देव ।। ५ ।।

भगत तुहारा सहि भला, भिले अरिजण भीम।
भगति दीयै जो भूवरा, तौ तोनू तसलीम ।। ६ ।।

तनां कहा छा अंकमा, दुरबळ ना करि दास।
कांनै करिहो केसवा, परमेसर जम-पास ।। ७ ।।

तूं जगनाइक जगत गुर, तूं अविगत जग ईस।
जगति घड़ै भांजै जगत, जयौ जयौ जगदीस ।। ८ ।।

महादेव तूं महारुद्र, तूं भगवत भगवान।
भगतवछळ तूं भूधरा, तूं गोरख ब्रम ग्यान ।। ९ ।।

सास सासि समरौ सदा, सरब सास औ आप।
साच संवाही साधुवा, जपौ अजंपा जाप ।। १० ।।

॥ छंद पधरी ॥

अजंपा जाप ओकार एक, ओलखे कमण[1] विणयो अनेक ।
अजंपा जाप आतम उद्यास, सुर भुवण माहि सब भूत सास ।
अजपा जाप मूरति महेस, पिंड पिंड मांहि थारो प्रवेस ।
अजपा जाप अणकल अतीत, अकाज राक अइओ अजीत ।
अजपा अगम नावे अरथ, कोई नही काम कोई नही कथ ।
अनेक रसण सा न हुवे आप, जयो जयो अजपा कठण जाप ।
नमो नमो अजपा नमस्कार, ओउं ओउं मत्र अणपार पार ।
आदेस अजपा हो अलेख, तू भव सबंव ससार भेख ।
मन मांहि अजंपा तणी मड, आज ही अगे राखी अखंड ।
अजंपा जाप सूं[2] मोह आंणि, विश्व रो मोह न्यारो वखांण ।
अजपा जाप री अविल आस, जाड भ्रम अविद्या टळे जास ।
अजपा जाप दातार आज, सरूप मुगति दे सिरताज ।
अजंपा जाप रे नही आदि, सव जीव करण पडीयो सवाद ।
अजपा जाप परमेस आप, बभ रे हुओ करतार बाप ।
अजपा जाप भगता उवार, ससार घड़ण पालण सघार ।
अजपा जाप सीता सरूप, भगवत नमो भगवत भूप ।
अजपा जाप उणहार अेह, दातार नमो अणरूप देह ।
जीव हो अजंपा जाप जांण, असटग जोग सू हेत आण ।
सोइ जांणि जाप कहिजे सपूत, काइ पडे कूप मांही कपूत ।
सामि सा कांई छोडे सनेह, नारगी हूंति कांइ करे नेह ।
अलखनां विसारे उपराध, समंद्र मा डूबे काई वड़ा साध ।
अहकार छोड गति मांहि आव, परसि हो परसि परमेस पाव ।
देखि हो देखि घर मां दईव, जिम हुवे तूझ कल्याण जीव ।
परखि हो परखि प्रीतम पाथ, निरखि हो निरखि घट माहि नाथ ।
रामचन्द नमो हो नमो रूप, पिंड पिंड माहि जोति सरूप ।

---

१ कवण वणीयो । २ सा ।

कान्हुआ नमो अरि नमो कंस, हैग्रीव नमो वाराह हंस।
अवतार नमो हरि गज उधार, परमेस नमो पातिक पहार।
परधान नमो पर जोति ब्रम्म, वे काम नमो स्रग लोक ब्रह्म।
मच्छ कोम नमो महाराज मति, उसास सास किम लियो अति।
नाभि सुत नमो रिखभ नरेस, वरीयाम वाघ नरसिंघ वेस।
वाह हो वाह वामण वडाळ, दुज राम नमो दीनांदयाळ।
कूटिया दैत उधरै कोर, धनुषधर नमो लखमण सवीर।
जादवा नमो ताहरा जुध, वहसांमि नमो अवतार बुध।
किण ठाड रहै आवास काह, आदेस तुनै गरुड़ा अलाह।
आदेस देव अहि नरां ईस, जगदीस जयो स्रगलोक सीस।
चत्रभुज बाप आउध च्यार, साधुआ तणा पातिग संघार।
अई अई गुरुड रा असवार, भामणां लिया लिखमी भ्रतार।
सेभ्रू नां नमो नागेंद्र सेष, उग्रारणा लिया थारा अलेख।
पंगरण प्रीत वसदेव पूत, समिल काहि मैं जणस्यै सपूत।
कमळरा नैण कमळा-कत, सुर जेठ आप सारीख सत।
निरकार नमो निरजण निनांम, ध्यानरी देह वैकुंठ ग्राम।
जगदीस तणी डर करै जंम, गम लहै कवण थारी अगम।
लहै कुण बाप ताहरी लील, नमो हो नमो अनील नील।
आपरा चलण महिमा अथाह, पगा रै कोन्ही गगा प्रवाह।
विंदया[1] भद्रा गोपिया विंद[2], आरती करै ऊपरा इंद।
आराधै देव चारण अलख, जुहारै तनौं किनरह जख।
अठयासी सहस रिख करै आस, वखाणै सको वैकुंठवास।
पाच तत महा तत रहै पास, संभारै तनां प्रभु सास सास।
गुण तीन दास पतिसाह गाइ, वेचिया प्रभु थारा विकाइ।
राजीया केई दीवांण राक, सुर कोडि तीस मुर करै साक।
प्रणमति नाग अनेक पीर, साहिबी नमो सामळ सरीर।
डर करै दैत तूसां दईव, जोनीयां दियै इनेक जीव।

---

१ वंदिया, २ वाद।

परमेस त्रिख जूना पुराण, वेद ही वाप वाचै वखाण।
पावक अनै पाणी पवन, वड वडा थोक चाकर विसन।
मन बुद्धि चित्त अहकार मति, समरति तना अेवड़ सकति।
रहमाण तुहारो अटल राज, वीठला हिमै सिणगार वाज।
आंणि हो आणि जानी अङ्कर, निरवळा माँहि विरताव[1] नूर।
परणि हो पिरिणि परमेस पात्र, जीव सहि करै सैदहे जात्र।
आवि हो आवि चंद्रमा आस, पूरि हो पूरि टाळ्हो प्रास।
थापि हो थापि पुनं कळस थापि, आपि हो आपि कल्याण आपि।
राखि हो राखि मूँसरण राखि, दाखि हो काहिक चाकरी दाख।
जोइहो जोइ साम्हो जोइ, दातार अेक कुण कहै दोइ।
साच नै सीळ तूना सलांम, गोविंदा करै थारा गुलांम।
वीनवै अेम लीला विलास, देवाधिदेव पीरियो दास।
पीरियो अेम दाखै परम, वडेरा निमो ताहरो ब्रह्म।

॥ कवित्त ॥

ब्रह्म नमो छत्र ब्रह्म ब्रह्म कहिजै ब्रह्मचारी।
ब्रह्म नान्हो वैराट क्रम अक्रम कूड़ा री।
भवसागर सा भ्रम भ्रम माया मा भूलो।
माया छै मोहणी डाक चड़ियो चित डूलो।
महाराज हिमै कीजै मया, भाजि अविद्या जाड भ्रंम।
पतीगह पाळि मोटा प्रभु, पीरदास दाखै परम॥ १॥

॥१॥ इतिश्री अजपा जाप सपूर्ण लिखतु जती लालचद गाँव जूढिया मधे।
सवत् १७६१ रा जेठ सुदी ८ कथित लालस पीरदानजी।

॥२॥ इतिश्री अजंपा जाप सम्पूर्णम्। कोविद देवचद लिखतं।
कोढणा मध्ये शीघ्रं द्यपिता॥

---

१ वरताडि।

अथ गुण ज्ञान चरित्र लिख्यते

॥ कवित्त ॥

देवी दे वरदान ग्यान रीजे गुण गावा ।
भाखा सहि भागिवंत विहद हथ अरथ वणावा ।
तूं मोटी महमाइ धरम धरि ऊपरि धरणी ।
वध वाणी दे वैण, कृपा करि हे कुंडळणी ।
करि सरस जोड़ रूपक कहा, त्रिविध जेम दुत्तर तरां ।
ऊधरां आप इनि ऊधरै, अनत तणो जस उचरा ॥१॥

अनंत अनत सहि अनत, अनत पौरिस पराक्रम ।
अनंत एक अनेक, अनत बहु भाँति वळाक्रम ।
अछतौ छतौ अनंत नाम विण अनत निरगुन ।
गुण समपौ गौरिजा गौरि तु बिना नुहै गुण ।
अहि अमर रुखेसर नर असुर पहचि तुझ दाखै प्रबल ।
हु महिरिवंण माया हिमै वइण मुझ दीजै विमल ॥२॥

विमल कवेसर विले साधु सुखदेव सरीखा ।
वालमीक जैदेव नाम नरहर कवि नीका ।
विले दास वाणार सुकवि गोदड गुर मेरा ।
ग्यान चरित गाइआं एक एका अधिकेरा ।
ताहू माहि ले अधिका उतिमि ग्यान रूप गाहैडि गडा ।
बारहट अनै रिषि बराबरि वेद व्यास ईसर वडा ॥३॥

ईसर इमि आखीयौ मुकद मोटौ अति मोटौ ।
अनत पार अपार त्रिविध ओटो नह ओटो ।
तोवह वार हजार करै सहि नाम अकिरिता ।
अलख तूझ आदेस कोडि आदेस करता ।

जाइओ सरब ससार जे विसन कहीजै सोलवत ।
जम तणो अंत कंत ज्यानखो अनंत नमो फेरा अनंत ।
अनत तणो नहिं अत नाम लालच पिण नाही ।
रूप रेख निही रग कही हब का हिज काई ।
सास आस निहिवास वाणि नह खाण न वेदु ।
अनत नाम अकाज आंति नह जाति न भेदु ।
केई थोक निही नन पार कोइ सरब वात साची सिही ।
किमि करि प्रणाम कीजै सुकवि नरहर रै इतरो निही ॥५॥

निहो केम धणनाम हेक हैग्रीव विले हस ।
विले सेत वाराह आप विणि रूप तणो अस ।
मछ कोम नरसीघ वाह वामण कहि वामण ।
रिष वदत पिथराव भरथ रुवनाथ सत्रघण ।
पढि फरसराम लखमण कपिलि रिदै मुझ वलि राम रहि ।
नारीयण विषभ अवतार निजि क्रिसन बुधि निकलंक कहि ॥६॥

कहिजै कासु सुकवि घौड गुण नावै घातां ।
आप अगम जग ईस वेद नह जाणै वातां ।
तत पाँच गुण तीन कोम डिगपाल कमाली ।
सोम राह छिनि सूर क्रेत त्रिसपति कोलाली ।
सीत नै गौरि सावतरी तिलोइ न जाणै तुझनां ।
सकति री नही इतरी सकति मुरिखि कहिसी मुझनां ॥ ७ ॥

मुझ तणी मतिमन्द चन्द अधिकौ चतुराई ।
अकल धणी ईंद मे किसन गम न लहै काई ।
उण दिनि जायौ अनन्त हरो तिणि दीह न हुँतौ ।
इम कोई न कहै अवर कहै नह मरतौ करतौ ।
हुँतौ जि आप केई जुग हुआ केई वार कलपंत हुआ ।
त्रेभुवण भाजि हुये एक तन हरी तुझ तोवह होआ ॥ ८ ॥

हीयै जीव जीव मा देव देव मा वसै हरि ।
वसै खाणि वाणि मां पार प्रांमिजै किसी परि ।
सकति माहि सिव माहि रहै वभ माहि घणेरो ।
जबक माहि जु मांहि अनन्त तिलि हेक ओछेरो ।
परमेस आप पाणी पवन कलक माहि निकलंक किरि ।
ससार माहि बाहरि सदा थाहरीयौ थल माहि थिरि ॥ ६ ॥

॥ दूहा ॥

थल मा जल मां थूब मा, जगम सा जगदीस ।
थावर मा अनमा अधिक, आप सरव कौ ईस ॥१०॥

सरब सरब तु सांइआँ, रांम किसन मां राम ।
नाग नरा मां निरजरा, नाम माहि नह नाम ॥११॥

धुरा माहि बेकारमा, छोति छोति मा छोति ।
धरम मांहि अधरम मा, जीव जीव मा जोति ॥१२॥

॥ कवित्तिः ॥

जोति निमो जगदीस जीव जीव मा जडाणौ ।
किसन अनन्त कोडिरो कांइ अवतार कहाणौ ।
दुख कांइ देखें देव सुख कांइ इतरो सहियो ।
करि हो कर करतार कुणै तुनां इम कहियो ।
घणी तोइ एक एकोइ घणौ गोविंद तु चुहुअे गमा ।
देखै सवाद सुख दुखरो तु निसवादी स्रीकमा ॥१३॥

निसवादी नरसिघ नमो तुना निसवादी ।
कहि हुं कासु कहाँ सरब आणद सवाही ।
विसन वेद अणवेद भेद अभेद भुणीजै ।
अलखरूप अणरूप जाच अजाच जपीजै ।
अनाथ नाथ अवरण वरण केई थोक नकरण करण ।
गुणरूप ग्यान निरगुण नरिंदि समरि जीव असरण सरण ॥१४॥

समरि जीव अण जीव करम केई करम अकरमी ।
सुख दुख जग सामि धरम केई धरम अधरमी ।
निराकार साकार अनन्त अनह तु अवरन ।
सामि सरीखो सुकवि तु हीज आप जिसो तन ।
तु आप आप इनेक तवि प्रथिमि एक ससार पति ।
कूड नै साच करतार रा साधा सुणिजो एह सति ॥१५॥

सत सील सन्तोष विले अति साच दयावत ।
खिमावत अखिलिना सबल मन मा थारा सत ।
विले इग्यारस वरत भगति ऊपरि प्रभ भीजै ।
पिप्पल तुलछी पान राम या ऊपरि रीजै ।
गाइ नै डाभी गोपीचन्दण निति थारा नन्द नन्दना ।
ब्राह्मण निपट वाला विले ए गरीब गोविंदना ॥१६॥

गोविंदि रै कोड ग्राम कना कोइ नाम कहिजै ।
सामि कुणे री सामि राम कै ऊपरि रीजै ।
आप आप सहि आप निको काइ नारि निको नर ।
पेट पूठि नही पाऊ काह काया वाहा कर ।
नइणि नै स्रमण वेवइ निही कठै तात माता कठै ।
निगुण ना किणही जायो नही उठै आप आतिमि अठै ॥१७॥

उठै आप स्रव आप विसन वैकुठि विराजै ।
तीन भुयण मा त्रिगुण निगुण नागो नह लाजै ।
स्रव भूत स्रव सास नाम ग्रामह स्रव नीरह ।
स्रव आप स्रव वाप स्रव्र आचार सरीरह ।
स्रव वेद भेद आतिम सदा किसन न हुतो कहो कब ।
स्रव वीज खीज वलि रीज स्रव अवलो सवलो आप स्रब ॥१८॥

सव लहै कुण सुकवि स्रव स्रव हुंता न्यारो ।
ब्रमचारी गोविंदि परम लिखमी ना प्यारो ।

औ लिखमी अवतार सरब लिखमी सारीखौ।
जैं जायौ जगत नां अनन्त इहडो विधि ईखौ।
मोहणी रूप तुनां निमो विसन नमो तुं लच्छिवर।
ताहरे सीत चलणा तणी अव विलगी संखधर ॥१६॥

सख वडौ तुं संख सख आउध सवाहैं।
गदा पदम चक्र ग्यान विस्रव ऊपरि ले वाहैं।
आप आप सा इसौ आप आप ना उडाडै।
आप आप ना ध्रवै आप आप ना खवाड़ै।
आप री आप रीख्या करे खरा देव तुना खमा।
आप ना आप कोपै अनन्त आप निमो तु आतिमा ॥२०॥

॥ दूहा ॥

आप आप ना दुख दियैं, आप आप सुख आप।
ग्यान तुहारी एह गति, ब्रंभ सभ रा बाप ॥२१॥
रमै आप तु आप मा, नमै आप नां आप।
आप खवारैं आप ना, साहिब निमो संताप ॥२२॥
तू करता तुं भोगता, रहै अकिरिता राम।
विसव घडै भाजै विसव, विसव तणौ विसराम ॥२३॥

॥ कवित्ति ॥

विसव तणी विधि वाच विसव इणि भांति वणावै।
जगत रजोगुण जनम हुओ सतगुण हुलरावै।
भाखि सतोगुण भलौ खरौ कोई कहिजै खोटौ।
त्रिविध तणी चित्त तीन त्रिविध तामस गुण त्रोटो।
रजोगुण ब्रह्मगुण सातसी तिको ग्यान पतिसाह गिणि।
तामसी रूप सकर तणौ पति गुणा मा राम पिणि ॥२४॥

रामपति जगपति सति रुघनाथ कहै सति।
विद्या अविद्या बुरी एक अहिकार बुरो अति।

एक बुरो अहिकार भरम निरसो भाखीजै।
क्रोध कलह कुछि निहो दान अविगत दाखीजै।
ग्यान ना एक अजरो गरव ग्यान नाम गोविंद रो।
भगवत ज्ञान भगता सरसि राज समापो इंद रो ॥२५॥

इंद अनंत अणपार विसिनि ले रोम वसाया।
रोमि रोमि ब्रहमंड असख ब्रहमंड उपाया।
रोम रोम ऊपरो रहै सायर जल सारा।
एकणि रोम अनंत वसै कविलास विचारा।
इंदि नै अरक रहै रोम मा किसन नमो तुं काम नां।
आदेस ए आदेस अति राम तुहारे रोम नां ॥२६॥

रोम तणो रुघनाथ पार सिव सकति न प्रामै।
नरहर रै नाभ मं जोनि ब्रहमा व्रिप जामै।
रुद्र इग्यारह राम तुंहीज जगि ज्यग्ग महाजप।
महा तप तु मूल जोग अष्टंग अनै अप।
आकास तेज व्रिथिमी इनिलि पांच तत निसिदिन पणै।
महा तत घडै भाजै मुकद महातत तुंनां मणै ॥२७॥

मणै महा तत मद पाच तत चाकर पासै।
गग नदी गोवदि नाथ निति चलण निवासै।
सक कोड़ि तेतोस चरण राखै उर उपरि।
लिखिमी चाहै चरण परम रीजै इहिडी परि।
उपजै प्रेम मन उलसै वाला लागै लछिवर।
माहरै रिदै विचि मिडिया चरण तुहारा चक्रवर ॥२८॥

चक्र सामि सख सामि पदम पति अनां गदापति।
प्रीतवर पगरण भला फाविति इसी भति।
महि कट मेखल कहै कानि मकराइ कि कुडल।
उरि वैजती माल रिदै कुसटामिणि कमल।

निकलंक नाथ जिण नाम निजि सूरितिपाख सुहामण ।
भालीअल सदा देखैं भगत भाग तणा ल्या भामण ॥२६॥

भाग तणां भामण ल्यां भूधर दुख भंजण ।
विहला ना वीठला मुगिति सारूप समपण ।
साधा नां साजोति रांक सालोक लियै रस ।
सामी मुगिति समीपि मुझ समपौ जोडा जस ।
कोडि हेक जिगन दस कोडि तप सरब धरम तीरथ सिही ।
कलि मांहि हेक पीरदान कवि नाम सरीखौ कै नहीं ॥३०॥

नाम लियंतां नाम सामि सूझै सहि सूझै ।
राम तणै रस माहि सेस बूझै सिवि बूझै ।
परम तणौ रस पीयै, सदा सिनिकादिक सारा ।
ब्रहम तणौ रस ब्रहम ल्यै के ब्रहम विचारा ।
नाम नै चरण छोडै नहीं गग गौरि गावतरी ।
अहिल्या अनै तारा तवै सीत मात सावंतरी ॥३१॥

सावतरी सामि रा करै वाखाण किताई ।
रुखमागद इ विरीक साव नारद सवाई ।
पारासुर पैंहलाद सेस गंगेव महेसुर ।
अरिजण नै अकरूर व्यास रिषि वारद ईसर ।
बभीखण लियै ऊधव वकै अति उवारण अनतरा ।
जगदीस किया आपह जिसा भगत एह भगवतरा ॥३२॥

॥ दोहा ॥

भगत हुयै भगवंत निज, भगवत करै भगति ।
निमो निमो हूं न लहा, ग्यान तुहारा गति ॥३३॥
ग्यान चरित ग्यानह समंद, ग्यान तत त्रीअ नाम ।
ग्यान प्रवोध सवोज गुण, रीज करै बह राम ॥३४॥
ऊए प्राणी नां उयै अनत, वैकठि लियै वधाई ।
ग्यान चरित गुण गाइरे, ग्यान समद गुण गाई ॥३५॥

॥ कवित्त ॥

ग्यान समद गुण गाइ च्यार मुगितै हू चेडै।
ग्यान तत गुण गाइ सात सरगा फल भैडै।
ग्यान चरित गुण गाइ पाइ लागै परमेसर।
ग्यान बोध सुणाइ मोख पामै नर अमर।
पीरदान ग्यान पतिसाहना करि प्रणाम लहडा सुकवि।
ब्रह्मज्ञान ग्यान दरिसण वडौ मालहीयै हरि नाम मवि ॥३६॥

मवे नाम हरि नाम अघ एक मघ उचारे।
उतिमि एक अति उतिमि सदा चत्रभुजन सभारे।
अघ सुणै सहि कोइ अघ मन माहि मिणीजै।
उत्तिमि भुजन छै उतिमि रिदै विचि राखि रहीजै।
अति उतिम भुज न अई औ अई, रोम रोम ऊपरि रहै।
जीवतौ मुगिति देखै जिकौ, साधु सुख अजपा सहै ॥३७॥

अई औ अजपा जाप अई घण सामि तणा घर।
अई ओ सुख सरग अई निकळक बड़ा नर।
अत्री रुखेसर अइ, हरिखि करी मन मां हसै।
अई ओ इदि भगत वसुह ऊपरा वरिसै।
नद तणा वाल अईयौ निगुण, धन धन अइयौ चक्रधर।
महा भगति अई महादेवरा, अईयो दता ईसवर ॥३८॥

अईयो ईस अनत नामै कल्याण निरंजण।
देव किसन दीपान ग्यान दईतां ग्रव गजण।
अलख नील इनील विसव विमोह विज्ञानु।
जाणै सहि जीतूआ माल मेरो धन धानु।
ससार एह असगो सगौ दईवि आप वासो दियौ।
कलिमाहि दुख सिनेह क्यां कूड कूड साचो-कियौ ॥३९॥

कीयौ कूड़ सा साच इसौ संसार उपायौ।
जायौ सरब जगत अलख रहीयौ अणजायौ।

अलख नाम कुण लहै अनंत कहिजै केतो एक।
जुओ जुओ नह जीव आप वैराट इतो एक।
महाराज ग्यान एकोजमन मरै न तिल जितरो मिटै।
एतोज आप ओ एतनो, घणो हुये नह कै घटै॥ ४० ॥

घटै केम घण सामि आप एतो एतोईज।
किसनि सिरो काढियो तवै तेतो तेतोईज।
नरा नाह नीपनो पार पाडियो पुरुषोत्तम।
अगै आदि ओ आज अमर अमरा मां ओपम।
काळरो काळ जग प ळ कहि नद नद अणमोल नग।
जग(प्र)भूत जग वधू जगत जगत मार आधार जग॥ ४१ ॥

आप जगत आधार त्रिगुण राजा जग तारै।
जगत सुख जग दुख जगत करतार जुहारै।
जगवासी जग वीर, गे मनि पाप जगत गुर।
जग रूप राम मारण जगत, जग जीवन जग ईसवर।
जगत रै मोह जगदीस ना जगतनाथ जग माहि नर॥ ४२ ॥

नरा नाह जगदाह अलख अणथाह अपपर।
वाह वाह लीला विलास,विमल आणद लिखमीवर।
जगत ठाम जग सामि, जगत रोपण जग रजण।
जग वदण जग जेठ, जगत भेदण जग भजण।
जगदीस जयो तूं मूळ जग, जगन धिणी तू जोरवर।
जग माहि मरै जीवै जगत, निमो देव अरिहत नर॥ ४३ ॥

निमो देव अरिहत, पुरुष परधान पुरातम।
परमारथ परतत, परम अणपार पराक्रम।
तूं परमिति परतत, तू हीज पर देव पणीजै।
पर उपगारी परम, ग्यान पर रूप गिणीजै।
सुर जेठ अनै सकर सिको, अहि अमर मानव उरा।
परमेस निमो थारी पहचि, परै परा सिगळै परा॥ ४४ ॥

॥ दूहा ॥

परा परा सिगळां परा, तुं गरढो गोपाळ ।
नद महर रै वाळ तू चौद लोक रख पाळ ॥ ४५ ॥
ज्ञान सचर सज्ञान है, वड़ो ग्यान पतिसाह।
ज्ञान चरित मां कहि गुणी, ग्यान जड़ाउ जडाउ ॥ ४६ ॥
ग्यान गभीर गभीर सौ, उरव्ळौ कोड़ि अनेक।
पावक सां ऊन्हो प्रघळ कोडि थोक प्रभ एक ॥ ४७ ॥

कवित्ति

कोड़ि थोक करतार हेम हुंता ठाढौ हरि ।
कोडि जम है किसन किसन वाखाण इसौ करि ।
कोडि थोक करतार सव तीरथ पग भारी ।
अनाथ नाथ अनाथ ना करतौ नर सौ नि कीयौ ।
आपमा जोर सरसो अनत कोडि कोड़ि अधिकौ कियौ ॥ ४८ ॥
कोड़ि थोक करतार पवन हूंता वळ प्रघळ ।
कोड़ि वधतौ कोडि गगजळ हुंति निरमळ ।
अधिकौ कोड़ि अनत धरणि हुंता खिम्या धर ।
ऊंचौ कोड़ि असख वहत नीचौ कहि अवर ।
सरसती हुंति विद्या सिरै विमळ अकळ कहिजै विसन ।
सूर सां तेज विणियो सरस कोडि कोड़ि वधतो किसन ॥ ४९ ॥
किसन नाम कळ्पत करै कव्यिंत किताई ।
च्यारि खाणि चकचूरि करै मन हूंत कमाई ।
सहि वाजी सामटै अमर नर नाग उघेडै ।
हुयै आप हेकलो फू क सां अवर फोडै ।
महि गिलै मेह पाणी पवन, सूरिजि ससि भाजै सरै ।
त्रैभुयण नाथ विद्या तणी, धरणीधर मनछा धरै ॥ ५० ॥
धरै एह गिर धरण मोह छोवै माया सा ।
दया विहूंणी दई काम एकिणि काया सां ।

साद करै जम सरिसि महाप्रभ निवळ्या मारै ।
करै जम कूकूउवा आज कोई मूझ उवारै ।
जम-रा जम तूना जयो वडा धिणी तू वाह वाह ।
कोइ वियो जीव राखै कना महा प्रळै मा माहवा ॥ ५१ ॥
माहव-एक मरद देव कोई और न दीसै ।
लाख चौरासी जीव परम दाढा विचि पीसै ।
नीइ तुहारी नमो जुग अण लेखै जरिया ।
हो दुजा देवतां किसन वेसास म करिया ।
आपना आप मारै अनत इसौ ज्ञान महाराज रौ ।
माहरौ कत प्यारौ मनां श्रीय सुहावै बुरौ छौ ॥ ५२ ॥
बुरो भळौ नह विसन नाम नासति वहनामी ।
गुरुड सेस गिळि गियौ सेभ विण सूनो सामी ।
ईजिसी अगै जाणतौ किसन ते निहिडी कीधी ।
भाजि दीया सुर भूयण एक लिखमी सग लीधी ।
इनि मरै एक तू उवरै साध न दीसै कोई संत ।
ताहरी देव वसदेव तण उ मर ना तोवह अणत ॥ ५३ ॥
उ॑मर रा उवारणा हेक तु हु तो इ हु॑तौ ।
पुरिष नारि सहि पछै नाग कोई देव न हु तौ ।
नेह ग्रेह पिण निही मोह ममता नह माया ।
वाणि खाणि वापार काम नह क्रोध न काया ।
ताहरा चरिति कासिपि तणा हेक न जाणा मु॑ढ हु॑ ।
नाम ने ग्राम जइ आनिहीं तई आ आतिमि एक तु॑ ॥५४॥
एक अखिलि तू॑ एक किसन तु॑ अखिलि कहीजै ।
नीर खीर जद निही दान लीजै नह दीजै ।
जडाधार सुर जेठ निको कोइ दीह निका निसि ।
निका भोमि नह निहंग देस विदेस निका दिसि ।
नवकुळी नाग अठकुळ अनड सरव जीव नासति सिंही ।
उणि दीह एक हु॑तौ अनत नरिंदि इ दि जिणि दिन निही ॥५५॥

इ दि निहि नह अादि सीव्ळ असीव्ळनि को सुख।
दुडिदि चद नही डील भोग सजोगनि का भुख।
साच वाच सवाद वाद इहिकार निही वळि।
भुयण तीन ग्या भाजि गोम ब्रहमड ग्या मळि।
ताहरी खवरि न पड़ै त्रिगुण तिणि वेळा किहड़ो इ तंत।
ऊ घ मा काइ जागै अलख ऊभो काइ वैठो अनंत ॥५६॥

॥ दूहा ॥

ऊभो कांइ वैठो अनंत, निराकार निरधार।
पार नि को परमेसरो, वेद कहो सौ वार ॥ ५७ ॥

वेद न भेद न पर ब्रह्म, सहज न सील सतोष।
मेप नै माप नै महमहण, तु निगुरो निरदोष ॥ ५८॥

करम अनै अकरम किसन, त्रिनि नै चिति नै धोख।
वाप जिनेता वाहिरो, मोख नही तु मोख ॥५६॥

॥ कविति ॥

मोख खमो खम कद निगुण निरपख नरेसुर।
निरालव निरलेप अभ्रम अछेप सुरेसुर।
चिदाणद वह चतुर आप विणि पार अमूल।
सास आस विणि सदा एक एकु असतूल।
अण मरण ग्यान अण कसट अश अति उद्यास अनाथ अति।
अखंडित रूप अवरण अलख सरव भूंति आधार सति ॥६०॥

सरव भूरति साधार विसव भूरति निसवादी।
आदि पुरुष अविणास आदि बाहिरो अनादी।
आदि अणादि अनत आदि हुंतो औ आतिम।
तुं अरेळ अपरेत प्रभु अचेत पुरातम।
विगन्यान ग्यान तु हिज विपति तुं अछेद अभेद तन।
अविगत नाथ केवल अलख, पाप निही तुं कोइ पन ॥६१॥

पन प्रकास अविणास अलख उद्यास अपपर;
सरब वास बसास आस पूरण अति अमर
दास दास लीला विलास निगुण ग्रभवास निवारण,
ग्रब प्रास निसचरां नास इळा अघ जास उतारण
किणि ठौड़ि रहै जायौ कठं घणी पहुंचि दातार घण
विणि रूप रेख किणि दिसि वसै निमो निमो तुं नारीयण;॥६१॥
नमो नमो नारीयण इना किम जीव उपाया,
अकळ बुद्धि अहंकार नमो नर नारि निपाया,
कीयौ पाप पुनि कीयौ च्यारि खाणै वाणै चत्र
कीया सुख दुख कीया अनिलि कीधौ कीधौ अत्र;
त्रैभुयण कीया किम करि त्रिगुण जवन देवि सरि जाईया;
आदेश नमो तोबह अनत इतरा भूत उपाईया; ॥ ६२ ॥
इतरा भूति उपाय एक नवि इंद्री उपाया,
दस इंद्री दस देव परम करि घणी पठाया;
देवा इंद्री दुमेळ कीया भेळा करणा करि,
तूं सबळौ ताहरै सरब वसता एकण सरि,
निगम ही कीत माणो नही किसौ पार अणपार किरि;
ताहरै डील सबळौ त्रिगुण पग पाताळ स्रगलोक सिरि, ॥६३॥

॥ छंद हणूफाळ ॥

स्रगलोक सीस सुचग आदेस तोवह अंग,
परमेस पाव पताळ, कहि किसन घर टीकाळ,
ससि सूर लोचन साचि, चत्र वेद वायक वाचि।
वुद्धि ब्रह्म निसवावीस, अतकरण कहिजै ईस।
नदि अधिक नवसै नाडि, घन घन अंतर धाडि।
दधि कूख है जम दाढि गिणि सरब दांणव गाढ़ि।
है हंस माया हास, सहि पवन केसव सास।
ह्विदौ घरम विणियो रूप, मलोक छात्र अनूप।

जस भगति जादव जांणि, वणराय रोम वखाणि ।
वपु वरण वीरज वारि, नह वैर रामा नारि ।
करतार इंद्री क्रम, पळ में न दीह परंम ।
प्रभु तणै हाड पहाड़ि जपि अगन मुंहडौ जाड़ि ।
अति लाभ कहिये लोभ, सोय अहर साहवि सोम ।
महा तत्त चेत मंडाण, परमेस डील प्रमांण ।
पर मुख पाप पछाणि, वळि गयण बांह वखांणि ।
करतार मेह करति, व्रम चिहुँ रसा वरसंति ।
परमेस पार अपार, वैराट घट विसथार ॥ ६४ ॥

॥ कवित्त ॥

वडी देह वैराट, घाट तोवह घण नांमी ।
हूँ पापी हेकलौ, सुजस नह जांणा सामी ।
भगत भलौ नंद भाग भगत ग्वाळिया मणीजै ।
वडा भगत भगवान रा, रांम रीछा सिर रीजै ।
भील ही भगत थारै भला, कैये ना मोजां करै ।
हमां सत कूकि विरता हुयै येरै काजि अवतरै ॥ ६५ ॥

येरै काज अलेख, अनत फेरा अवतरिओ ।
भगतां कजि भूधरा, कव हैमर रौ करियौ ।
हस अनै वाराह, त्रिगुण अवतार तुहारा ।
तूं ना दीठौ तिका, जिका जीता जमवारा ।
नव खंड दीप सिगळा अनड़, वह पांणी सांबोड़िया ।
केई वार किसन कलिपत करि प्रयाग तणै वड़ि पौढिया ॥६६॥

प्रयाग तणौ वड़ि पौढियौ, पूरण ब्रह्म परमेस ।
आवी दाइ अतीत ना, सेभ्र कीओ ले सेस ॥ ६७ ॥

साहिव सूता सेससिरि, करम न दरसै कोइ ।
कान तणै मल सां किसिनि दैत उपाया दोइ ॥ ६८ ॥

आतमि देत उपाइया, पौरिसि बळ अणपार।
मघ कीटग जीपे कमण, मघ कीटग मेवार ॥ ६९ ॥

॥ कवित्त ॥

मघ कीटग दे मार हार देवता हुई हरि।
त्राहि त्राहि सुर तवे, किसन वेहिलो ऊपर करि।
व्रहमि जगायो विसिन, परम कोपियो ईसर परि।
महा कोप मन माहि, कघ केकांण जिसो करि।
वह सामि अने दाणव विन्हइ, घणो जोर जूटा घणो।
हेकला विढे के जुग हुआ, जळ मथीयो जळनिधि तणो ॥७०॥

जळ माहे जगदीस विढे मघ कीट विभाडे।
वतलावे वेसासि, पछे दाणवा पछाडे।
मघ कीटग रो मास करे धरतो करणा कर।
देवां ने तिण दीह, वडो सुख दिये विसभर।
सहि जाव ग्यान सनकादिखा जण२ सरिसो जू जूओ।
सुर जेठ भीड पडती समो, हस रूप ठाकुर हुओ ॥ ७१ ॥

हुओ देत हरणाख, व्रह्म ने सोच हुओ वळि।
समद सात साकीया, रेण ले गयो रसातळि।
इद्र वरण ओद्रके, वहत देवी घटियो बळ।
हुओ राम वाराह, जमी कारण मथियो जळ।
आधारि दाढ ऊपरि इळा, धरणी धरि तारी धरा।
हरणाख मारि जीतो हरी, प्रघळ जोर परमेसरा ॥ ७२ ॥

हेके परमेसर कछ हुओ, अवतार नमो हरिः।
इंद निवाजण अरक, अमर तेडिया अपपरि।
वाम तणो वासते, रांम मथीयो रेणायर।
दईतां रा तिण दिवस, वहत मन मोहे वायर।
विलौग्रे वार वळिराव वहि सुरां जेत सीता वरे।
रुघनाथ तिके दिन राह रो, घडसां सिर अळगो धरे ॥ ७३ ॥

अळगा वेद अनूप, राम ब्रह्मा सूं रहिया।
हूं वेदा वाहरू किसन नूं इण पर कहिया।
सोच घणौं अति सबळ, प्रघळ देवा नूं पड़ियौ।
हुवौ ब्रह्म बुध हीण, इसौ दाणव आ भिड़ियौ।
असुर नै कीयौ तीरथ अविल, समुद डोह अति कीध सर।
फुंक सू सखासुर फाड़ियौ हुवो मछ अवतार हरि॥ ७४॥

हरि नै प्यारौ हेत प्रथम पहिलाद पियारो।
पुणै प्रेम पहिलाद मुकदहु वेली म्हारौ।
तिण वेळा तुरत प्रभु थभ माहि प्रगट्टे।
इधकि हुई आवाज वडौ कोई ब्रहमंड फट्टे।
तेत्रीस कोडि लिखमी तवै हुऔ कोडि जमराव हरि।
आजरी घणु अध्रीयामणी नारसिंघ थारी निजरि॥ ७५॥

निजर नमौ नरसघ कोप दाणव सिर कीधौ।
लाधा थारा लखण, राम भगता सिरि रीधौ।
ग्यान आप गाजियो, हाथि हरिणाकस हिणियौ।
चू नाळि जिम चावियौ खरौ तै काळि जि खिणियौ।
करि कोप मुख रातौ कियौ तूं नरसघ न लाजियौ।
पहलाद हुवौ वालौ प्रभु, सगै भाई ना साभियौ॥ ७६॥

सगौ, तुहारै साच, कूड ऊपरि नित कोपै।
कूड साच तै किया इसा त्रिदि तूं ना ओपै।
वामण ब्राह्मण महा अविगत महाराजा।
आव आव आहचै, करै रावा इंदराजा।
वलि राउ जिग न कीधा वहत इंद्रासण डूलै अही।
वामणो राम आयो वहै छलिसै वलि राजा सही॥ ७७॥

वलि राजा वाधिवा हुयौ खाटरौ वडौ हरि।
आयो प्रोळि अनत, किसन इहडौ तोफौ करि।

वाचा ले वाधियो वडो ब्रहमंड विलागो ।
चलण हेक हरि चापियो भलो भूगोळ सभागो ।
हरि चलिरिण हुँति गगा हुई, साचा सां हिति साघतो ।
तूं आप आप वाघो त्रिगुण, वलिराजा नां वांघतो ॥ ७८ ॥

॥ दूहा ॥

वलि राजा ना वाधियो, रहे इंद को राज ।
कंटक गुर कांणो कीयो, सो वैराट सकाज ॥७९॥
धन धन गगा तूझ धन, निमो भगति तूं नाउ ।
प्रेम घणें सां परसिया, परमेसर रा पाउ ॥८०॥
तूंनाँ के कीघो त्रिगुण, कहि तू आयो काह ।
नाग सेस जाणे नही, रिषवदेव रा राह ॥८१॥

॥ कवित्त ॥

रिषव नाभ सुत निमो अलख अणजीत अणकल ।
ब्रह्मा सेस महेस दत जोगी थारा दळ ।
इसो आप अविघूत जिको अनसोईया जायो ।
वीठुल सा वादतै, गरब गोरखि गमायो ।
कमळी भगत जीतो कळ्ह त्रिपुरासुर जिसतांन तन ।
इमिरित वावि सोसी अलखि, विषभ रूप वणियो विसंन ॥८२॥

विषंभ प्रमेसर वाह, भीड़ सकर री भागी ।
प्रिथी दुहतें प्रथु निमिष इक वार न लागी ।
वासिटि इदि वाछड़ा दईत देवा गमियो दुख ।
राजि वडा पिथराउ, सरब जीवा दीन्हो सुख ।
सगर रै घणो ओळादि सिर, कपिलि महाप्रभ कोपियो ।
इंद रो कीयो ऊपर अधिक इया ग्यांन दे ओपियो ॥८३॥

इयां ग्यांन आपियो, महा ब्रह्मग्यांन कपिलि मुनि ।
कपिलि मात धन करम, पूत पायो अगलै पुनि ।

नर नाराइण निमो, ध्यांन धरियौ धरणीधरि ।
पेखि रूप परम रौ, प्रघळ कापियौ पुलिंदर ।
करतार भीर भगतां करै साधां रै साचो थश्रो ।
ग्राह ना मारि समपी सरग हाथी रौ साथी हुश्रौ ॥८४॥
हुश्रौ रांम दुजरांम ब्रह्म रै मन मां वेधौ ।
फरसी साहो फरसि, खरौ खत्रिश्रां सिर खेधौ ।
श्रो श्रलाह श्रणथाह निमो जम रेणां जायौ ।
देजां सरिसि वर दियण, श्रसख जिगि करवा श्रायौ ।
पिता री वेल करिवा प्रभु गह पौरिस मां गाजियौ ।
वाह हो वाह फरसा ब्रह्म, सहसबाह नां साभियौ ॥८५॥
साभि देत सांमळ्ळ, भीर समंपौ भगतां नां ।
रामचंदर राघवा, दियौ दरसण दसरथ नां ।
रुघनंदण रुघनाथ, निमो रुघपति नरेसर ।
रुघराजा रुघराउ भूतभव भेख विसभर ।
किसन रो सुरे दरसण कियौ कर जोड़े कीरति कहै ।
करतार काजि दसरथ कन्ही, विसवामिति श्राया वहै ॥८६॥
विसवामित्रि कारणे, प्रभु चडियो जिगि पालण ।
जां मारै तां मुगति, श्राज ताडका उधारण ।
श्रा श्रहिला उधरी, किसिनि पगि पावन कीधी ।
कीर गियो कविलास दान लेवै कठ दीधी ।
जगदीस जनक रै ज्याग मा श्रायौ वहै उतामळौ ।
भाजियौ धनख रुघनाथ भडि, सीत परणियौ सामळौ ॥८७॥
सीत परणियौ सांम, गरब दुजरांमि गमायौ ।
हुश्रौ श्रयोध्या हरख विळै कोसल्या वधायौ ।
श्रमर करै श्रालोभ मौहरि मंथरा नां मेली ।
के गहि मंथरा कहै, हिमैं हरि ना वन हेली ।
के गई श्ररजां करण, वडौ राउ दसरथ नां ।
दईव नां हिमैं वनवास दे, भोमि समापि भरथ नां ॥८८॥

भरथ पिता दुख भाळि हुओ वीठुळ वनवासी ।
सरगि गिओ दसरथ, अनत कीधौ अविणासी ।
सीता लखमण साथ, परम अे पदवी पाई ।
गोह भील गोविंद, रहे रन मा रुघराई ।
भाद्रवी गोठि कीधी भली, विसन थियो भोजन वडे ।
सिर जटा राखि दसरथ सुतन, चित्रकोट ऊपर चढे ॥८६॥

चित्रकोट सा चले व्याधि दाणव विधांसण ।
अगथि धनष आपियौ, मारि इंद रो रिपि रामण ।
सूपनखा रो स्रमण, नाक वाढियौ निभै नरि ।
निभौ अकलि रुघनाथ अनत पचवटी ऊपरि ।
खर सधर दैत दूखण तिसर, दही वेल दहसीस री ।
चउदह हजार खळ चूरिया, जैत जैत जगदीसरी ।

॥ दोहा ॥

जैत हुई जगदीस री, रावण रै मनि रीस ।
तूं मारै मारीच नो, सीत हरै दहसीस ॥ ६१ ॥

लिखमी ना हर कुण लियै, कुण जीपै करतार ।
कटक मारण कारणै, वीठळ कीयौ विचार ॥ ६२ ॥

किसन अनै लखमण कहै, करा महा जुध काम ।
सीता वाहर सामळौ, रोस घणै मां राम ॥ ६३ ॥

॥ कवित्त ॥

रामचद रिम राहि, आइ जटाइ उधारै ।
कमध छेदि कर कापि, तुरत सवरी ना तारै ।
धन सवरी रौ धरम प्रभु महाराज पधारै ।
वाळि बाण सावहै साध सुग्रीव सुधारै ।
सुग्रीव दुख टाळियौ सही, कहर वाळि सिर कोपियो ।
हरि मिळे आवि हणमत सूं अधक पराक्रम ओपियौ ॥६४॥

हणमंति किया हमल, सहल दांणव संघारे ।
ऊंघौ नाखि असोक, पछै हरि चलणि पधारे ।
मधसूदन मछरियौ, पाज बांधै दधि ऊपरि ।
साथि रीछ कपि साथि, किसन आयो पारभ करि ।
लाछिवर सहल भेळी लका,पळचर खेचर पोखीया ।
तेत्रीस कोडि सुर तारीया, मारि दैत ग्रह मोखीया ॥९५॥

असुर मारि इंदजीत मेघ महि रावण मारे ।
निसचर नीचा नाखि, सत्र इदतणा सधारे ।
रावण कुंभकरण, मार कीधा मळ-माटी ।
दीयौ वभीषण दान, खरी तै कीरति खाटी ।
सीता सहित कपि साथि सहि वैंकुंठनाथ वधाइया ।
चउदमै वरस वे चक्रधर, आप अजोध्या आइया ॥९६॥

आप निमो अवतार आज ऊधरी अजोध्या ।
जिगि कीधा जगदीश जीपि लवणासुर जोधा ।
च्यारि वीर चत्रभुत्र, लाछिवर जिसी लखमण ।
भरथ आप भगवत, समर परमेस सत्रघण ।
संखासुर गया सुर सारिखाँ, दान महा उत्तम दीया ।
करतार इसौ पीरदान कहि कई दैत तीरथ कीया ॥९७॥

निमो राम बलिराम भळै सकरखण भाई ।
निमो सेस सारीख, हाथि आवध ग्रहीया हळ ।
वडा दैत ग्या वहै, निमो बळभद्र महाबळ ।
रैवती-रमण सुत रोहणी, निराळ्व निगरब नर ।
काळ घण पूत बधव किसन, मयण रूप मदमाणगर ॥९८॥

मयण बाप महाराज, गदा सख पदम सवाहे ।
चकर भालि चत्रभुत्र, ओपि कुंडळ पति आए ।
आठ सिधि नव निधि, सु पिण लीधे साथै सह्ी ।
साथै सात सरग, विसन आया वसदे वहि ।

वसदेव घरे आया वहे, तु हीज रजोगुण सत तमो ।
देवकी वाळ घन देवकी, निमसकार तुना निमो ॥ ९९ ॥

निमो निमो नान्हिया, किसन कनहिया काळा ।
प्राण जसोदा प्रभु, विसन नंद आगण वाळा ।
सकटासुर साभ्रीयो तँईज मारीयो तिणावत ।
'पळ गमीयो पूतना, वडो मांडीयो सदाव्रत ।
रोज रा रोज गाजे असुर त्रीकिमि मारे से तरे ।
पालणे माहि हीडे प्रभु, घण नामी भगतां घरे ॥१००॥
भगते भी भाजियो, नद उपनंद निचीता ।
हर्से जसोदा हीयो, सरव प्राणी ग्रिह सूता ।
माटी खाये मुकन, देव नर नाग दिखाळे ।
मुंह मोटो महाराज, वसुह आकाश विचाळे ।
ओळमा किसन लावे इधक, छीका छोडण झालि है ।
व्रिज रे त्रिया आवे विढण, पूत जसोदा पालि है ॥१०१॥
पूत जसोदा पालि, करे चोरे घी चाटे ।
माखण लूटे महर, अधकि वाकळा उभाटे ।
किसन धवे कूकड़ा, वाट वांधे विगताळो ।
दही तणो ले दाण छाछि ढोळे छोगाळो ।
गुयाळिया साथि भूखो गयो धेन साथि धेना धणी ।
वांभण जिगन वोया वहत उधारी वाभणी ॥१०२॥

॥ दूहा ॥

वहन उधारे वाभणी, जोइ जीमे जगदीस ।
साच पियारो साइया, कूड़ करो की रीस ॥१०३॥

भगतां रा घट भांजिवा, आयो इंद अजांण ।
औ गोरधन उपाडियो, कर सखरो कलियांण ॥१०४॥

चरण नद ना ले गयो, व्रहम ले गयो वाछ ।
वरिणि व्रहिमि ही वाचियो, मिनिखि नही तूं माछ ॥१०५॥

॥ कवित्त ॥

माछ सरीखो महर, तुहीज वाराह जिसो तन ।
जादव रिमियो जेठ वाह मघवन विंदावन ।
व्रिज वेरां रा विसन, चीर झडपे व्रख वसियो ।
ऊंआं नां तूठो अनत, हुओ मन मांही हंसियो ।
वन माहि वजाड़ी वांसळी, महीआरे तु सा मिळे ।
आजरे घणे हुइ ऊलटे, व्रम मूरति सामे वळे ॥१०६॥

व्रम मूरति व्रजराज, निरति खेलियो निरतरि ।
राम वधारी रात, हुई जुग लाख तणी हरि ।
रास निमो रहमांण, मुगति दीन्ही महिलां नां ।
गोकळ मां गोविंदो, वळे मिळियो विहला नां ।
तोवह वखत ऊखळ तणे, सवळो राढ़ साधियो ।
जसोदा जोइ पीरदान जण, वहनांमी नां वाधियो ॥१०७॥

वहनामी वाधियो सु तन कमेर सुघरिया ।
हरि सारीखा हुआ पाप अगिला परिहरिया ।
दड़ काज्र जळ डोहि, नाग नाथियो निभे नरि ।
पुठे चढियो प्रभु, तुरत तिखराव गयो तरि ।
व्रिजराज जुओ व्रिजवासियां, मोहण रा निरखो मता ।
कमाळी ब्रह्म डडवत करे, देखण आया देवता ॥१०८॥

देव नंद रे दुवारि, करे ओळग कितराई ।
वैकुंठ आवी वहै, कमी न दीसे काई ।
गावे तुबर गीत वेद उचरे ब्रहमां ।
निमो नद रा नेस आज ऊतरे अक्रमां ।
किसन सिर फूल विरखा करे, अमर तमासे आइया ।
निहग घरि वीच मावे नही, सुरे विवांण सत्राहिया ॥१०९॥

सुरा तणे सिरदारि, असुर फाड़ियो अघासुर ।
पछे वगासुर पाड़ि वळे मारीयो वछासुर ।

रासि जसहि रहिचीया पलंब वुसट सापड़ियौ।
मधुवन मा माहवा, लाख देता सू लड़ियौ।
वोम सखचूड सरीखा वहे, धेनक सरिखा ढाहिया।
निसचरा घणां मोहिण नरद गोकल वंठे गाहिया ॥११०॥
गोकल मे गोविंदौ कंस मथुरा मा कोपै।
महा दैत मन मोट अधिक वळ ग्रहिया ओपै।
कंस नै नारद कहै दळै कान्हड देता ना।
उरा तेड अंथीयै, मारि वळिभद्र माहव ना।
उपनंद नद कान्हड कुंवर अैसहि दास अहीरिया।
कंसासुर कोप करि नै कहै, किसनल्याव अक्रुरिया ॥१११॥
कहै अेम अक्रूर, मरण माणौ घर मॉही।
औ देता रौ अत, सभा देसै सिगळा ही।
किसै जवानै करै प्रघट दाखियौ पहिलौ।
दैत भणै अकरूर विसन ना ल्याव वहिलौ।
अक्रूर चढै रथ ऊपरा, खडि आयौ गोकुळ खरौ।
पेखियौ गाय दुहतौ प्रभु, अई भाग अकरूर रौ ॥११२॥
अई भाग अकरूर, किसन मिळियौ सव कारण।
वहनामी बोलियो, मदन-मोहण कस मारण॥
ऊग्रसेन री आण, वसहि ऊपरा वरतै।
मात पिता ही मिळा चवै अै वेण चडंतै।
चत्रभुज नद साथै चढै, चढै ग्वाल वळभद चढै।
दीनदयाळ मथुरा दिसौ, खेध घणौ रथह खडै ॥११३॥
रथ ठाभौ रहमाण, मुणै अकरूर मुरारी।
करौ सिनान किसन, भलौ ऊजळ जळभारी।
जमणा मा जगदीस, सेस अहि ऊपरि सूता।
इमि दीठा अकरूरि किसन आदेस करता।
अठयासी सहस रिपि ओळगै सरब कोडि तेत्रीस सुर।
सलामां करै ब्रह्मा सिभू, मिनिख देव अहि लोक मुर ॥११४॥

मुर भुयणां रा महत तोब दरबार तमारा ।
कहै भेर किमेर, हैंमैं गिमि पाप हमारा ।
उदधि सात सिधि आठ अधिकि लोटै इंद्रादिखि ।
सहि नाचै सुर त्रीआं, राग ऊचरै द्वादस रिखि ।
छडकाउ करै वारह सघरा, वेद च्यार नव व्याकरण ।
किसन रा पाउ गगा कन्ही, आच जोडि ऊभै अरण ॥११५॥
अरण गुरड़ ओळगै, दिये परिकरमा दिणीअर ।
सिनिकादिखि समरा, विरिद दै बारट ईसर ।
किसन सामि रै कन्ही, सपत रिपि करै सलामा ।
जपै तिथकर जाप, तोब ताहरा गुलांमा ।
नाग सुरनाथ माणस नही, साचा ना दरिसण सहल ।
अकरुर भगत आदेसियौ, महराजा भामी महळ ॥११६॥

॥ दूहा ॥

महाराजा भामी महळ, नर सुर नागा नूर ।
कुशळ नही कंस केसरे या दाखै अकरूर ॥११७॥
चडि अकरूरि चलावीया मथुरा दिसा मुरारि ।
मिळीया परिगट राह मा, हुई धीक मन्हहारि ॥११८॥
प्रभु झड़िपिया पगरण कही कस रइ काह ।
नरहरि ग्वाळ निवाजीया सहिस मये सिर पात्र ॥११९॥
आए मथुरा मे अनंत, तोब पराक्रम तार ।
हरि लुटाडै हाटडा, वहनामी बाजार ॥१२०॥
माळी फूल समापीया, कुविज्या त्रिमो कपाळ ।
भगता सु भूधर भलौ, किसन दईतां काळ ॥१२१॥

॥ कवित्ति ॥

किसन दईता काळ, साम कुविज्या रो साथी ।
पाच मल पाडीया हेक तै हणीयौ हाथी ।
बाथा आयौ वाळ प्रभु चाणीरय कै ।
ग्वाळ अनै गोविंदे घनख भाजीयौ घकैहौं ।

अंकुर वैण साचौ अवल हरि रौ मामौ हारीयौ ।
किसन नां देखि कंस कांपीयो महल तणे विचि मारीयौ ॥१२२॥

महल तणे विचि मारि घणौं धीसीयो वडी घर ।
सहस आठ संघरै असुर सहि कीधा अमर ।
ऊघा देखि अलाह इळा उगरै नां आपे ।
वंभ संभ दे विरिदि सहस दस घेन समापे ।
अकरूर घरे आया अनंत विळै मात पिति विळकळै ।
कूबड़ी हुंति कीधी क्रिपा माहव भगता सा मिळै ॥१२३॥

मिळै सैण माहवौ दहे वसदेव तणौ दुख ।
मुंआ पुत्र मेळ्यिा सरस मां ना दोन्हो सुख ।
गुर रा बेटा गया प्रभु तूं लायो पाछा ।
ब्रह्म सुतन दस वळे अनत ने अरिजण आछा ।
मछकंद सरिस दीन्ही मुगति, काळ तणौ सिरि कोपियौ ।
जुरासघ इसौ सवळो जवन, लिखमी वर ना लोपियो ॥१२४॥

लिखमी वर लोपियो, लखण देवतां न लाघा ।
पांडव वाल्हा पाँच, मया तो ना वह माघा ।
प्रघळ चीर पूरिया, परम पेखियो पंचाळी ।
पांडव दाखै प्रभु, वेगि आया वनमाळी ।
जुजिठिळ भीम अरिजण जिसा, जण जीता अरि जेरिया ।
भीषम द्रोण दुरजोध भ्रिगि, खोहिण अठारह खेरिया ॥१२५॥

खोहिण खोहिणि खळा, सामि सांमठा संघारै ।
दियै सदामै दान, त्रिगुण त्रिघु राजा तारै ।
तरि तरि जमणा तणौं, कर कीळा करणाकर ।
छाया पाडळ सेझ, किसन तौवह राधावर ।
व्रिज तणौ देस तजियो ब्रहमि, अगै वाद तौ इंद सा ।
कुरखेत माहि मिळियौ किसन, निगुण जसोदा नद सा ॥१२६॥

नंद तणौ नर नाह, रीछ सां भिडियौ राघव ।
राम तणै कजि रांमि, निगुणि नाथिया बळव नव ।
इळा तणौ अवतार, सामि आणो सतभांमा ।
घर सिसपाळ सिंघार, रुखमणी परणी रांमा ।
कालिंद्री विदा भद्रा कुअंरि, कहि लखमणा क्रिपाळ रै ।
रीछड़ी नाग जीती निमो, पटराणै प्रतिपाळ रै ॥१२७॥

पटरांणै प्रतिपाळ, सील सहिजै सारीखै ।
मुद रुखमणी मात, आठ प्रभ सांमै ईखै ।
नरकासुर दीकरौ, महरि बूसट सां मारै ।
सोळ सहस अेकसौ, साम गोपिआं सुधारै ।
जदरथ सलव बुल बुल जिसा, दईत किता ही दोटिया ।
कोपियै किसन झाझा करग, बाणासुर रा बोटियो ॥१२८॥

बांणासुर वोटियो, साघ चेतियौ सदा सित्रि ।
दळै दैत व्रकदत, खळा ऊपरां हिमैं खित्रि ।
कासीपति कापियो, तास सुत सहर समापै ।
दहे दैत दीकरौ, अगिन क्रितीया ऊथापै ।
(तैं) कीया काम वहिया कटग, करता कितरा अेक कहां ।
ताहरा विसव रूपी त्रिगुण, नाथ प्रवाडा ना लहां ॥१२९॥

नाथ प्रवाड़ा नमो, विसन ताहरो वहै वस ।
अखिल रूप आतमा, अेक बाण सा गयौ अस ।
कलिजुग लागो किसन, वचन कहियौ नद वाळै ।
जुजिठळ म करे राज, हाल जाया हीमाळै ।
पाडवां सरग पोहचाडिया, पाच पदारथ पाइया ।
जगनाथराय जगनाथजी, अनत उडीसै आइया ॥१३०॥

॥ दूहा ॥

अनत उडीसै आइयो, श्री बहनांमी बुध ।
जै जीतौ खापर जवन, जग जीतौ विण जुध ॥१३१॥

वाजा अति वाजसी, भेर मादळ नै भूगळ।
काहळ सख अनेक, ताम घूजसै रसातळ॥
नीसाण रुहै कापै निहथ, सहि जाणि गाजे सघण।
वरघू दमाम करनाळि वह, घुरै ढोल कसाळ घण॥१४२॥

केई ढोल कसाळ, घरा ब्रहमड घडक्कै।
सुरणाये सालुळै, राग सीघूओ रहक्कै।
वीर हाक तिण वार, देव दाणव जूटा दळ।
वाजै घाउ निहाउ, हेक हथवाह करै हळ।
हीसुए विढै भड हस रा कुंत कुहाडै जुध करै।
त्रिधारा खडग वाहै त्रिगुण, त्रिगुण हाथि दाणव तरै॥१४३॥

त्रिगुण किलग रिणिताळ विन्हइ भिड़िसै अतळीवळ।
तरुआरै त्रिगडा, विळै दिढिसै नर विमळ।
कई ढळा काकरा, लाठी लोढा सा लडिसै।
सहिसै घाव सूरमा पुरिखि पडिसै गज गुडिसै।
किलग सा कळह करिसै कहर, फौंजां निकळंक फाविसै।
पहाडा हति लडिसै प्रभु, असुर अमांडै आविसै॥१४४॥

असुर अमर आहुड़ै, असख भड गुडै भिडै अत।
रुड मुड रडवडै, विमळ नदीआ वहिसै रत।
कंध सध कडिडिसै, हाड मुड़िसै हेकारा।
आविटिसै असराण घमक लेसै घोकारा।
चत्रभुज तणा वहिसै चक्र, पडसादा पडिसै पका।
मलेछा तणा मुडिसै मरट, घडा तणा अति घूवका॥१४५॥
घडा तणा घूवका, जवन दळ पडिसै जाडा।
अइयो निकळंक अलख मुरिडि नाखै खळ माडा।
केई गिलै क्रम कीच, हुवै दस कोड़ि पजाहर।
जवन दळां जग जेठ, विसन मारै वह्वाहर।
किळग रौ नास करिसै किसन, असरा नाद उतारिसै।
पचास कोड़ि दाणव-प्रचंड, सत गुरु आप सिघारिसै॥१४६॥

सतगुरु तणा हुसेन, भला दइता सां भिडिसैं ।
हणमत करिसैं हाक, प्रघळ पापी नर पडिसैं ॥
असरां रैं ऊपरा, दइव आपरा फिरैं दव ।
कूडा ना कापिसैं, प्रभु जण लड़िसैं पाडव ।
हरि साथि साव सवळा हुआ, जगजीवन तारण जगत ।
किलग ने कस भेळा किया, भूघर रा जीता भगत ॥१४७॥
भूधरजी नीं भूप, तना पूजैं दशरथ-तण ।
गुण गध्रप विणि ग्यान, जख कीदर पित्तर जण ।
केई देव रिषि कोडि, प्रघळ चारण सुख पायै ।
माहव नां मोतीये, ब्रह्म माहेस वधायैं ।
कळिजुग तणि जड काढिवा, आवो भलो अचकरी ।
फर वरी पहवि ऊपरि फिरैं, निमो फौज निकळक री ॥१४८॥
इणि निकळक नरेसि, भ्राति सिगळो ही भागी ।
हुआ हरखि ओछाह, जोति अति घरि घरि जागी ।
इळि नोळो अति अव, केई ऊगा कळिपतर ।
अन्न नीपिजसैं अधिक, प्रंज पालिसैं परमेसर ।
ससि नणी कलक जाइसे सही, गोतिम त्री अहिला लजा ।
वधायी प्रम पदमावती वळो सतवती सुरज्या ॥१४९॥

॥ दूहा ॥

अे सतवती सुरज्या, नरिंद किलग री नार ॥
इण निकळक रैं ऊपरा, अति आरती उतार ॥१५०॥

इम्या लेसैं उवारण, तू आतिम आधार ।
सावत्री साराहीयो, श्री निकलक अवतार ॥१५१॥

नीको जणरी नाम निज, परिणजे निकळक पात्र ।
सहि छात्रा ऊपरि सरैं, श्रिया कत रौ छात्र ॥१५२॥
रीत भली की रामचन्द्र, अधिक अमोलक ग्रेह ।
वमु हुं तणैं सिर वरससैं मागैं तारा मेह ॥१५३॥

माया सहि उतिम मधिम, प्रभु सरीखी पांति ।
आ अजरी लागे अधिक, भगतवछल नां आंति ॥१३२॥
खरतर लूकां तप रिखां, माहो माहि दुमेल ।
जैन धरम कीधौ जयी, गेम कपट रै गेल ॥१३३॥

॥ कवित्त ॥

गेम कपट रै गैल, धरम थमीयौ धरणीधर ।
अई बुद्ध अवतार, आव आलम ले अमर ।
इळा हुई अप्रवीत, दुजा धेनां वधियौ दुख ।
धरम सत धूजीयों, सरस पापिआं हुओ सुख ।
वधियौ व्याज, सच साकीयौ खुरासांण हुतां खडौ ।
तेत्रीस कोड चाडी तुरै, चचळ सेत ऊपर चडौ ॥१३४॥

चडि वेगौ चक्र धरि, करै काई ढील करत्ता ।
गळी वढै गाय रौ, वळै ब्राह्मण विरत्ता ।
अनत जणांरी आण धणी कर खबर धरम री ।
वेद व्यास री आण, आण वारट ईसर री ।
मेघ रिप अनै मामै घड़ी, धणी वाट जोवै धणी ।
तूं हमै जेज राखै त्रिगुण, तनै आण भगता तणी ॥१३५॥

भगतां कजि भूधरौ, कटक करिसै करुणाकरि ।
तीन भुवन तेड़स्यै, नाग देवता अनै नर ।
चळण करौ वाराह, वाह राज री वडाई ।
अणवर ब्रह्मा ईस, साथ पाडव सगळाई ।
मेघ रिष सीस करसै मया परमेसर गुर परणसै ।
विसंभर वास वेकुंठरौ, वळि राजा नां वगससै ॥१३६॥
वळिराजा नै वगसि कोड़ि इंद्रासण काइम ।
करिसौ फौजा कई, देव कद चडसौ दाइम ।
सतरि हजारहु सैन साम कदि लेसौ साथै ।
खड़ग त्रिधारौ खरौ, हमै कद ग्रहिसौ हाथै ।

करतार कोप करिसी कना, वळे साध कसिसे विसन ?
काळीगी दैत राजस करे, क दोयाड लडसी किसन ?॥१३७॥
किसन साथि सुर कोड कोड़ राजा के राणा।
कोड सेख कापड़ी, कोडि मुहम्मद मुल्लाणा।
मूसा कोडि मरद्द, पीर पेकब्बर प्रघळ।
कोडि रीछ कपि कोडि, दईव ताहरा निमो दळ।
सुर जेठ कोडि गिरवर समद, इद्र कोडि रुद्र कोडि ग्रहि।
लेखता ग्रत लाभै नही, काइमि दळ ग्रणमार कहि ॥१३८॥
काइमि कळक रिसै कव्हि, साथ वलिभद्र वभीषण।
भरथ साथि भीषम, साथि सुग्रीव सत्रघण।
हरि साथै हणमत, वहत जोधार महावल।
सात सरग हिज साथि त्रिविधि ससार तळातळ॥
नवनिधि नवैइ ग्रह नाथ नव, जोगी ग्रति गोरख जिसा।
पछिमि सा प्रभु खडिसै पवग, दळ चलिसै पूरब दिसा ॥१३९॥
पछिमि तणौ पतिसाह सेन मेळ्यिा सप्राणा।
परमेसर परठिसै, पूरब सामहा पियाणा॥
सोनै वास सुवास, फूल ग्रहि वेल तणै फळ।
पीपळ तणै पहप, सुजळ जलनिध तणौ जळ।
हाथणी तणै पय होयसी, धरि सिणगार सु धारसै।
निकलक तणै ऊपरि निपट, इमिया लूण उतारसै ॥१४०॥
इमिया लूण उतारि, ईयै निकळक रै ऊपरि।
सत धरम सतोष, किसन ऊपरा चमर करि।
ग्रौ ग्रवतरियौ ग्रलख, किसन रै कांने कुंडळ॥
कलिंग सीस करतार, ग्रनत चढियौ ग्रतळीबळि।
ब्रहम कीच सरिस ध्रवसै विसन, ठावा राखस ठेलसै।
पळचर ग्रनेक भ्रख ग्रामसै, खेत उजेणी लेखसै ॥१४१॥
किसन उजेणी कलिंग, ग्राम सामहा ग्राहुडिया।
नारद हसियौ निपट, जवन नै निकळंक जुडिया।

तूं अेकल मल आतमा, तू सवलो ससमाथ ।
तीन भुवन अेवे तना, नाग नरा सुर नाथ ॥१५४॥
ग्वाळ साथै गोविंदो, गोविंद साथै ग्वाल ।
तूं स्याळां ना सूर करे, सूरां करै ले स्याळ ॥१५५॥
मरद भाल महिला करे, महिला करे मरद्द ।
तू आगे दसरथ तणां, राकस थाये रद्द ॥१५६॥
असुर मार तू आतमा, निमो तुहारा नाम ।
मारे ता समपे मुगति, राकस तारे राम ॥१५७॥
अधम करे अन्याय अति, नाखै नही नरिंग ।
साध रहै ससार मा, राकस रहै सरिंग ॥१५८॥

॥ कवित्त ॥

राकस रहै सरिंग, घणौ गरढौ घणनांमी ।
तू सीले साहिवा, जूं न रिणि अन्तरजामी ।
तूं न्यायी नारियण, अेक तू नहीं अन्याई ।
गरव पहारी ग्यांन, भरत सत्रघण रो भाई ।
सुहिद्रां वीर सरवरो सदा, भद्रा तणौ भरतार भड़ ।
सिव तणौ मित्र सुर जेठ रो, विसन करा कुण तूझ वड़ ॥१५९॥
विसन तूझ सिव ब्रह्म, अेव करता पड सूका ।
दैत तणै पहलाद, नाम ताहरा न मूका ।
अरिजण बळ आखियो, सामि तूना नह छोडां ।
तुझ तणै तुडतांण, हमै कुण करिसै होडां ।
सत नै धरम सतोष सहि, सीळ साच सगळा सधर ।
तत पाच तीन गुण महा तत, अेवे तोना सखवर ॥१६०॥
सख तुहारै मुकरि, वळै चक्र पदम विराजे ।
हरिणाकस ना हणै, ग्यांन पोरस करि गाजे ।
हुओ सीह हैरान, देव सहि तोहा डरिया ।
दाणव सहि दाटिया, अेक पहिळाद उधरिया ।

गोविंदा नमो किम करि ग्रहै, तीन भुयुण रा राय नां ।
तू करै वेल ईसर तणी, तूं मुरडे महमाय नां ॥१६१॥

तूं मुरडे महमाय, रुद्र मरतौ रखवाळै ।
तणौ सुग्रीव तुरत, तू हीज सवळौ दुख टाळै ।
तू पतिसाहा पतसाह, तू हीज राजा तू राणौ ।
तूं गोकळ रौ ग्वाळ, किसन नद रै कमाणौ ।
जगदीस ग्वाळ जीवाड़िया, दहन पियौ भौ डारियौ ।
पहिळाद सरिस चाटै प्रभु, तैं अवरीष उधारियौ ॥१६२॥

तूं अवरीष उधार, जो न तजसै थारा जण ।
तू हूँता श्रीकमां, बहत प्रांमीयौ वभीषण ।
तू ब्रह्मा रौ तात, नमो नारीयण तणौ नभ ।
हुग्रो वडौ लहणियौ, पांच पांडव सरिस प्रभ ।
गुर तणा पुत्रजमपुर गया, सहल मात कीधा समा ।
जीवाडी त्रिया जैदेव री, तैंहीज मुग्रोडी त्रीकमा ॥१६३॥

तू त्रीकम दातार, ग्रटळ ध्रू कीधौ ग्रमर ।
दसरथ रा दीकरा, कीयै पहिळाद फुलिंदर ।
भलौ कमाळी भगत, किसन सरिखौ ले कीधौ ।
रुखमांगद ना राम, दान वैकंठ री दीधौ ।
ग्रंम्हाना मौज दीन्ही इसौ दूजौ कुण हुइसै भलू ।
पीरदास सरिसि तूठौ प्रभु, चौरासी कीधी चलू ॥१६४॥

चौरासी चक्रधर, घणौ वालौ रिजियो घण ।
मैं नह भजिग्रौ निगुण, तना तजिग्रौ दसरथ तण ।
ग्रति कीधौ इनिग्राउ, कदे तीरथ नह कीधौ ।
हुँ इहड़ौ हरि हरे, दांन ग्रन दान न दीधौ ।
पापरै सगि वैठौ प्रभु, कहौ मूझ ग्रकरम किसौ ।
मोकळा जीव मैं मारिया, हूँ ग्रयाण ग्रणवूझ इसौ ॥१६५॥

हूं अयाण अणबूझ, अघळ कपटी वड पापी।
कामी क्रोधी कहर, विळै पर निंदा विआपी।
अति लोभी लालची, कूड अधिको मन काळो।
मुझ तणे महाराज, दई भ्रम रो देवाळो।
बुधहीण विळै सत बाहिरो, तु अजरो वाल्हो टको।
हेक तो दया आवे नहीं, पीरदास मूरखि पको॥१६६॥
मुरिखि मन माहरो, चरण चाहै चत्रभुजरा।
किम करि भेटिस किसन, कटक आडा अक्रम रा।
सिध सरीख ससार, प्राण डाचा मा पडियो।
नर किम कर निसरीस, जरू ले ताळो जडियो।
नारगी भुगति करि नेह निज, इतो पाप कीधो असन।
नेंडै निराट देखै नही, कोडि कोस अळगो किसन॥१६७॥
किसन किसन कहि किसन, हस वड पाप हरैसै।
किसन किसन कहि किसन, किसन किल्याण करैसै।
क्रिसन कहता किसन, देवळै दरसण देसै।
किसन क्रिपाल क्रिपाल, राम पातिग नै रेसै।
करतार घणू कासू कहा, वडा देव वांमण व्रपा।
केसवा रखै कुमया करै, किसन हिमै करिजो क्रिपा॥१६८॥
क्रिपा करै सो किसन, हमै रीझसो घणी हरि।
नरा नाह नरसिंघ, प्रभु पहलाद तणी परि॥
दरिसण देसो दई, मया करिसो मो माथै।
तिम मोनां तूठसो, प्रभु जिम तूठा पाथै।
हेक औ सोच मोनै हुओ, घणो जोर वळवंत घण।
माहरै पाप छै मांकळो, तोसा किम झलिसै त्रिगुण॥ १६९॥
तू वव्हिीणो त्रिगुण, सही छे पातिग सवळो।
तू अणरूप अकाज, निगुण अभ्यागत निवळो।
हाथ नही ताहरै, पाव बाहिरो प्रमेसर।
पेट पूठ नही पाव, नाक बाहिरो किसो नर।

पीरदास तणौ अक्रम प्रघळ, सिचिओ घणौ सुधारियौ ।
आंगिमिणि न आ अनतरै, हरि पातिगि साहारियौ ॥१७०॥

हरि किम करि सारिसै, प्रभु अणपार पराक्रम ।
सरग समापै सहज, किसन कहता गिओ अकरम ।
ओ अतळीवळ, अनत, नाम वैराट कहाणौ ।
पार अपार अपार, घाट अणजीत घडाणौ ।
सुर जेठ करै सेवा सदा, अेवा निति राखै सभू ।
पीरदास नाम पावन परम, ओ पतीत पावन प्रभू ॥१७१॥

॥ दूहा ॥

ओ पतीत पावन प्रभु, इणिरौ करौ उचार ।
इणि रौ नाम कल्यांण छै ओ अरिजण रौ यार ॥१७२॥

ओ गोकुल मा खेलतौ, कहर खीजतो कस ।
ब्रह्मा इक ओ वडौ, हुओ अमोलिक हस ॥१७३॥

हस हुअै रिखव हुओ, हुऔ ओ हीज हैग्रीव ।
हुओ राम लखमण हुओ, जाणौ छै सुग्रीव ॥१७४॥

॥ कवित्त ॥

जाणौ छै सुग्रीव, इयैरा दरसण आछा ।
आलम रहियो अकळ, ब्रह्म जद लेगौ वाछा ।
तू ना भुजिसै तिकै, वसै वैकुठ विचाळै ।
भगतवछळ भगवत, प्रभु भगतां पण पाळै ।
पीरदास वडौ रस परम रौ, चारण इमरित चाखियौ ।
निस दीह भजन जगनाथ रौ, ईसर बारठ आखियौ ॥१७५॥

ईसर बारट इसो, रमै बैकठ मा रामति ।
ईसर बारट इसै, ग्यान गोविंद जिसी गति ।
ईसर बारट इसै, अलख राखै सिरि ऊपरि ।
ईसर बारट इसै, अधिक मानियो अ.परि ।

तू हुओ दास ईसर तणौ, मनछा वाछा दोष दहि ।
किसन रा पाव भेटण करै, गुर ईसर रा ग्यान ग्रहि ॥१७६॥

ग्यान चरित छै अगम, नाग देवता न जाणै ।
कितरै वरसे किसन, जोड ब्रह्मा क्यं जाणै ।
कितरौ छै करतार, कही हिव करिसै कासूं ।
लाछ न जाणै लखण, नमो निरकार निरासू ।
पीरदास अेम दाखै प्रभु, कूडै काल्है कांकनां ।
रिणछोड़ राय हो राघवा, रीझ समापै राकनां ॥१७७॥

रांक सरिस दे रीझ, अखिल काइ खीज करै अति ।
वडौ विहळ हूं बुरौ, पीर सा रीस किसी पति ।
भगत वछ्ळ दे भगति, भगति समपी हू मामी ।
रात दीह रहमाण, घणौ समरौ घणनांमी ।
बैकुंठ न मागा लछिवर राज न मांगा इंदरा ।
मांगीयौ दान दे मूझ ना, भगति समापै भूवरा ॥१७८॥

भूधर नमो भगति, करै सुर जेठ कमाळी ।
भूधर नमो भगति, प्रथम अति करै पचाळी ।
भूधर नमो भगति, भरथ सत्रघन री भारी ।
भूधर नमो भगति, प्रघळ पहिळाद पियारी ।
करतार कोयडो कियो, दईव निमो तू दाव ना ।
पीरदास नमो परमेस ना, वसुधा नमो वणाव नां ॥१७९॥

वसुधा नमो वणाव, नमो ब्रह्मांड तणौ वप ।
सूरज ससिहर नमो, तूझ वासदे नमो तप ।
नमो वाण चत्र खांण, नमो बैकुंठ वणाणी ।
नागदेव दधि नमो, नमो परमेसर प्राणी ।
महाराज तूझ माया नमो, नमो नमो तू हीज नमो ।
करतार पार जांणै कमण, नमो नमो नरहर नमो ॥१८०॥

निमो निमो जगनाथ, वडौ ठग हुम्रौ विसंभर।
काठी झाली किसन, भगति नह समपै भूधर।
मनछा क्रम सूझ ना, वळै वाचा क्रम वसियौ।
क्रम ना अति कोपियौ, क्रमे ले मूना कसियौ।
भगति रौ, सहो समैं भाजियौ, वभ सभ थारे वंदा।
माहरै अंदर माहे अतर, गरव किया मैं गोविंदा ॥१८१॥

गरव कियौ ले ग्राम, पासि अभिमान रहै पिरिण।
अेक रहै अहंकार, गेम पातिग कन्हैं गिरिण।
पाखंड मा करो पीर, सुमन राखौ भाखौ सति।
किसै वडाया करौ, इतौ तोफान करौ अति।
विन भजन कहै तूं विसनौ वडौ थूल सरिखौ वछा।
पीरदास कूड वोलै प्रभु, दास नही कहैं दास छा ॥१८२॥

॥ इति श्री ग्यान चरित सपूर्ण लिख्यौ छै सवत् १७६१ ॥

गुण पातगि पहार

॥ दूहा ॥

अति अनूप आखर अविलि, सरसति करौ पसाउ ।
हीगलाज सुप्रसन्न हु, पछिम तणा पतिसाह ॥ १ ॥
समति समापे सारदा, देवि दिया रौ दन ।
पुरिषोत्तम रौ जस पणां, सरसती सुप्रसन्न ॥ २ ॥
औथीअँ साहिब उपना, भोमि निमौ भाद्रेस ।
पीरदास लागै पगे, ईसाणद आदेस ॥ ३ ॥

धन धन जीवा रा धिणी, साहिबि तुं सुभिवाण ।
मुंना तुं वाल्हौ मुकर, ईसरजी री आण ॥ ४ ॥
तुंना भजि भजि त्रीकमा, ऊत्ररिया अणपार ।
भिणि रे भिणि भगवत भिणि, पिण पातिग पहार ॥ ५ ॥

माहव मोहण महमहण, कहि केसव करतार ।
करणाकर केवल किसन, पातिग तणौ पहार ॥ ६ ॥

विसन देव पूरण ब्रह्म, नरहर सरव निवास ।
अंतरजामी आतिमौ, नाराइणि अघ नास ॥ ७ ॥
पारि उतारै पाप ना, ग्यान वसारै ग्राम ।
हेकोइ तारै हसना, नाराइण रौ नाम ॥ ८ ॥
अजामेल अमरापुरी, वसियौ थारै वास ।
सवरी गिनिका सारिखैं, पहितै गोविंदि पासि ॥ ९ ॥
सिवि संकर ना सापियौ, दीयौ ब्रहम ना दान ।
नाम तुहारौ नारीयण, भुजण दीयौ भगवान ॥ १० ॥
साहिवि तोना समिदिसै, आठइ पोहर अलाह ।
ऊआं उधारै आतिमा, औ जोइ समद अथाह ॥ ११ ॥

प्रभ आधारे प्राणीयो, नाम तुहारो नाऊ।
बोढे मत खाटै विरिदि, दुतर छै दरीयाऊ ॥ १२ ॥

तोरि तारि कासिप तणा, विसन तुहारी वार।
औ किमि कर तरिजै अनत, सागर कहर संसार ॥ १३ ॥

तारण नाम तुहाइलो, अईयो केवळ आप।
औ भवसागर आतिमा, तु वेडा डड वाप ॥ १४ ॥

अहि सारीखौ विसव औ, रखवाले श्री रग।
तना न भुजिसै त्रीकमा, भ्रखिसै तिका भुइगि ॥ १५ ॥

पीरै सां पुरिसोतमा, हिमै करोजै हिति।
भगति दिवारौ भूधरा, नाम लिवारौ निति ॥ १६ ॥

कान्हइया थारा करम, वाह वाह जदवंस।
इणि ससार हुँता अनत, हुँ वीहा हरि हस ॥ १७ ॥

देव हिमै कीजै दया, वडा धणी रिणि वाढि।
औ ससार कोहर आवसि, कोहर हुँता काढि ॥ १८ ॥

भमतौ राखे भूधरा, जगजीवन धण जाण।
धणी तुनां हुडसै धरम, तारै तो तुडिताण ॥ १९ ॥

तारिस तौं मिळसे तुना, तू तारिस तो तारि।
भगतवछळ दाखै भगत, वारै तौ जम वारि ॥ २० ॥
कितराई दोरा करै, दियै घणा नां दोस।
भूत तुहारा भूधरा, साहिब राखै सीस ॥ २१ ॥
हरि दोरौ सोरौ हुयै, लाछि तणा कर लाजि।
तु सिगळा मा त्रीकमा, नरहर जीव निवाजि ॥ २२ ॥
अरज करा छा आपना, धणनामी निरघोख।
प्राणी प्राणी ना प्रभु, मुकद समापो मोख ॥ २३ ॥
जर तुहारो जांणीयौ, हुयै दईता हार।
कैरै कहियै केसवा, तु लागै करतार ॥ २४ ॥

भिले ठगारा भूधरा, साध गरीव सुधार।
मतिहीणा मुंठा मिनिखि, जुठा देव जुहार ॥ २५ ॥
सिवि थारो करिसे सुजस, पिणिसै अरिजन पाथ।
तोव तोव तुनां त्रिगुण, निमो निमो स्रवनाथ ॥ २६ ॥
निमो निमो नाराइण, भगवत निमो विभूति।
तुझ तणी वसदेव तण, कुण जाणै करतूति ॥ २७ ॥
सिवि कि जाणै साकडो, उरलो छं अणपार।
बंभ कि जाणै वापडो, परमेसर रो पार ॥ २८ ॥
इद न जाणे ओछडो, समद न जाणे सुद्धि।
लिखिमी ही लाभै नही, वहनामी री बुद्धि ॥ २९ ॥
निगमि वखाण न जाणीयो, वहनामी मा वाप।
महाराज करजो मया, अलख वडा छौ आप ॥ ३० ॥

॥ अथ झंपाताली ॥

अलख वड़ा छौ आप स्रव बाप थे अेकला।
अधिकी गरढा घणौ, तना तोवह अला।
निगुण निराकार, निरभेद तु नामडा।
कीया सहि काम, वे काम तै कामडा।
एक एको जिए कोजि अइयो अलख।
लीया अवतार किमि करि असी च्यारि लख।
सरग रा धिणी सिवि सकर माछर समो।
आपना आप मारण करै आतिमो।
विसन अण पार सहि आप आपणि वरै।
कान्हईयो आप सां आप कीळा करै।
घणो थोडो तु हीज निमो भाजण घडण।
करण अतह करण पांच तत उपाअण।
माडिओ ब्रहम जद महा तत मांडिओ।
भूतरा जीक ना भूत सहि मांडियो।

प्रभू तु अकिरिया क नाकरता पुरिपि ।
सही अण सही वासिष्ट तणों बडो सिखि ।
नमो निरगुण सगुण नारीयण निर्भ नर ।
वीर सुहिद्रा तणा रुक्मणी तणा वर ।
रूप अणरूप बैकठ तणा राईया ।
भामणा लीया भगता तणा भाईया ।
धणी थारी पहची वात थारी धणी ।
त्रोडि नार्खं असुर भीर भगतां तणी ।
अनत दावै विना वाळि ना आहणौ ।
पूत्र भगता तणौ भगत रै प्राहणौ ।
जिनिखि राज माई भलौ जिणियौ जगत ।
भगत पति ताहरै हुये सुसरौ भगत ।
नारीयण तण आदेश हो भरहरा ।
भगत रै ऊपरा हीज रै भूधरा ।
हेत भगतां सरिसि भगत देखै हसै ।
खरौ करि खेद काइ भगत हुता खसै ।

भगत सा आवि वातां करै महाभड,
अकल रहियौ सदा सही रहियौ अघड़ ।
धणी रामति करै आवि भगतां घरै,
कमल लोचन कृपा पीर ऊपरि करै ।
खरा थारा चलण पयाला मेक षट,
प्रभू पूरण ब्रह्म सरग माथौ प्रगट ।
किसिन दीपायण इणि भाति कीरति कही,
सहस कर तुहारै चद लोचन सही ।
सपत दधि कूख नैं दिसै थारा स्रमण,
नाडि नवसै नदै तु हीज तारण तरण ।
विराजे भलो घर माहि बैठो विसन,
कोहिक जिण भेटिसैं पाउ थारा किसन ।

आतिमा राम घट माहि दीसै इसौ,
जिकै हा गति हुयै तिकै दरिसण जिसौ।
इनोइति माहि परमेस परमेस अस,
हीयै हीयै वसै हीयाली तणौ हस।
झाझडा तणै उरि झाझ नामो झिखै,
वडो जण निरखिसै दुलभ दरिसण विखै।
सेव थारी दुलभ वरण नारद सरिसि,
एक त्रिपुरारि सुर जेठ स्रेवै अविसि।
सदा मद स्रेवसै तना आवइ सकति,
भाग हुइसै जिका जुडिसै भगति।
भागइ विरी करौ कना इदरो भलो,
टळि गयौ परो जमराउ वाळो टलो।
वखत सवरी तणौ वखत गजरी वळे,
वहत ध्रम जागियौ परौ पातिग वळे।
अनत रै नाम सा भगत तरिया अनत,
सरगि साचा गिया सदामौ वडौ सत।
तै हिज तै ताहरा ताहरा तारिया,
माहवा चकर सो 'दईत सहि मारिया।
थूळ ऊथापिया साध नै थापिया,
इदरा राज इदि सरीखा आपिया।
जडग नीचा गमै ऊधरै भगत जण,
सामी पीरो कहै निमो अशरण शरण।
अइ अवरण वरण निमो निर दोष अज,
धिणी सिगळ्व तणौ प्रभु धख पख धज।
नाथ अवाथ निराळव तु नारीयण,
सदा सिवि तू हीज तु भगत कीधो सघण।
चक्रधर निमो चक्रभुज तु हीज चिदानंद,
विमळ ब्रह्म ग्यान स्रव ज्ञान तु गोपि व्रिदि।

परा सिगळा परापर ब्रह्म पारब्रम,
काहि नाउ पाया ते हीज अकरम करम ॥
दोस काइ परमेसर इतौ जीवा दियै,
लाछि वर तु हीज तु खाचि पातिग ळियै ।
माहरौ आतिमो महा मूरिखि मयण,
तु हारै वातिडै तुहीज जाणै त्रिगुण ।
दईव रौ दईव तु सबळ दाणव दळै,
तना दीठौ समौ तुरत पातिगि टळै ।
केई फेरा पियै तु हिज इमिरित कुओ,
हेक दइतां तणै साल तूं हिज हुओ ।
घणौ बळ तुझ माह कहा कासु घणौ,
तू हीज दशरथ तण दईत दईता तणौ ।
दईव दईतां सरिसि धरिणि हेठा दियै,
लाछि वर दईत रौ मास झडपे लियै ।
समदरै ऊपरा पानि वडरै सूअे,
जारावग दईत साभळौ रिमियौ जुअे ॥
खळिकियौ रगत मध काट हुंता खिसै,
वाह जी वाह ब्रह्मा तणै उरि वसै ।
पति रै झूझना निमो तो वह पणा,
गोन्विद पराकम पहिचि कितरी गणा ।
मुकद मधकीट नां मारि समपै मुगिति,
वडा दातार कुण लहै थारी विगिति ।
जेठ सुर जेठ रौ सौच करिवा जुओ,
हेक दिनि वडौ दातार हासौ हुओ ।
नरिंदि चौथो प्रभु नारसीघ नाहरू,
विळे परमेस वेदा तणौ वाहरू ।
ब्रहमि पीधा निही वेद चत्र वाळिया,
अधिक चारण तणा वचन अजूआळिया ।

काछिवा निमो वहरूप थारा किसन,
वाढिया राह सहिदेव जीता विसन।
मोहणी रूप हुइ दईत मन मोहिया,
समद मथियो सही प्रमेसर सोहिया।
वाह हो वाह वाराह थारी वडिमि,
कोई हरिणख सरिस वड़ो जुध कीयो किमि।
दीह कितराइ लड़ियो निमो देवता,
सवळ हरिणख जिसा किसै भव स्रेवता।
भगत रा सामियै असुर कद रा भगत,
राकसा न मारत घणो तुना रगत।
जवन दल सिरि सिरिणि खेत रिमियो जठै,
अधिको तीरथ हुआ अविलि पगिपति उठै।
प्रभु कुण जाणिसै साचरी पारसी,
निमो थभि नीसरे गाजियो नारसी।
निमो नरसीघ नरसीघ थारी निजरि,
वुड वुसै दईत ना वाक फाडै वजरि।
भलो हो भलो पहिलाद थारी भगति,
सामि तु साहसै श्रीयाघूजै सकति।
भलो हो प्रभु हरिणाख नां भीडिया,
कीया आपह जिसा नरगराकीडीया।
नाभ रे रिषभ नां घणो भुजि नारीयण,
मिनिखि जोमण टळे अनेनुहु अमरण।
पियि अवतार अवतार दत परमरा,
धरा राविणी हरि ऊपायण धरमरा।
वाह अवतार कासिपि तणा वामणा,
भगत थारा लियै सदामिदि भामणा।
धिणी थारा लिया मामणा फरस घर,
कोई खत्रीआं तणे सीसि धिखीयो कहर।

सघारे सहस बाहु तणा दैत सहि,
मौज थारी निमो दुजा ना दीध महि।
भगत थारा जिके तिका दरसण भयो,
जमदगन तणा जगदीस तुंना जयो।
विभाडी रेणका वडो कीधौ विघन,
जमदगन तणो परमेस माडे जिगिन।
सपूत्रां छात कुल अति तु वाच सुध,
जनिमिग्रौ राम दसरथ घरे करण युध।
जनिमिग्रा भरथ लखमण कुअर जाइया,
ग्रहे परमेस दशरथ घरे ग्राइया।
रामचद ग्रजोध्या माहि राघव रमै,
निमिरिए व्रह्मा करै ग्रावि नारद नमै।
कहो किरिए भाँति रा धरम दसरथ किया,
हमै भगता तणा घणौ ठरिया हिया।
ताडिका तणा जोनी सगट टालीया,
पहिलडै पवाडै लिगन ना पालिया।
गई ग्रहिल्या सरगि कीर साथे गियौ,
धनख भाजी घिणी लाछि पिरिणे लीयौ।
लिग्रौ वनवास हव दईत मारे लिग्रौ,
दुसटीग्रा तणी वभीषण ना दीग्रौ।
पगारी रेण सा ऊवरै पाहणा,
प्रभू भीला तणी सीम मा प्राहणा।
ज्यानखी निमो लखमण तरगस जडै,
चक्रधर सही चित्रकोट ऊपरि चड़ै।
व्याधि दानव पडै वन माही त्रिसन,
किताई रिखा रै घरे रहीयौ किसन।
निमो गोदाउरी नदी थारा निमव,
सांम ने तुहारै कहौ कदरौ समध।

हरे हरि पेखीयौ वन पावन हुओ,
जवन खर त्रिसररौ कीयौ घर जूजूओ,
हरि तणी सीत ता आवि रामिणि हरी,
फौतरा क्रस तणी अकुलि तिणि दिन फिरी ।
धिणी धिखीयो कहर वतप हाथे धरै,
मछिरियो [illegible] आज रामण मरै ।
हरि तणौ साथि के [illegible] हुआ,
भगत सहिति रिखि इन्दजीत वाली भूआ ।
बाँधिओ समद घर असुर रौ वोढियौ,
रामचदि आवि राकस घणौ रोढिओ ।
पाडिया दईत सहि खाटियौ प्रवाडौ,
सुरा रा धिणी तु सुरा ना सवाडौ ।
पालटे लंक गढ घरे आयौ परम,
कोई इणि अजोध्या तणो धिरियौ करम ।
धिणी ब्रह्मा तणो धानंतर वेद धन,
मरै सहि सगर राऊ वरै कपिल मुनि ।
वडौ अवतार बलिराम वसदेव रौ,
हले खलही वियाईयै ई ज हेवरौ ।
कंस उर कापियौ गयौ घर कस रौ,
देवकी तणै घरि जनिमीयौ दीकरौ ।
कारण भूत नर नाह जायौ किसन,
वडा भगता घरे हालि आयौ विसन ।
वधाई हुई भगता घरे वधाई,
जसोदा जोइ हे समद री जमाई ।
नंद उपनद नवनद ही निरखियौ,
पछै परमेस ना ब्रिज मां परिखियौ ।
श्रीयावर सामलो हुओ गोकलि छतौ,
मुकु द नां मारिसा कंसि कीधौ मतौ ।

अलख करिवा प्रविति नदरो आगणौ,
प्रभूरो जसोदा वधायो पालणौ।
वडौ जस खाटियौ सगठ दाणव वहै,
त्रिणावत त्रोडियो कंस आधी कहै।
कन्हईयै कन्हईयै कस कासू कीयौ,
पूतना तणौ सहि रगत मु हडो पीयौ।
ग्वालीया साथि चारे प्रभू गाविड़,
मरै दुख माहि दईतां तणे मावड़।
वांसलै वजाड़ ब्रिज माहि विसन।
रास कीला रमै करै कीला किसन।
साप नां नाथि आयौ घरे छोकरा,
दही रौ दाण ले नंद रा दीकरा।
तै हीज कंस राऊ रा दईत सहि त्रोडीया,
छाछि रै काजि छीका घणा छोडिया।
ज्ञान माता कहै गौलिया गौलिया,
वेन नव लाख रा दूध कइ ढोलिया।
वाधिया जसौदा ऊखळे वलि वधण,
तुहारै वातड़ म्हेइ लाधे त्रिगुण।
गरव ब्रह्मा तणौं इन्द्र रौ गालियौ,
चरण लागौ पगे नद ना वालियौ।
हेक दिन पलव तु आगली हारियौ,
मुकद मामौ भलौ मुथुर मा मारियौ।
व्रिज तणौ देस तजियौ नमो वीठळा,
भिले दुआरामती महल भुजिया भला।
मह महमहण निमोगोपे सकल माणीया,
रुखमणी परणिया आठ पटराणीयां।
कौरवा ऊपरा कोप कीधो कहर,
पांडवा तणौ वेली हुआं प्रमेसर।

निमो हो निमी तै घणा कीधा निगुण,
पचाली सरिस तें पूरिया पगरण ।
पराकम निमो पद वंन वाळा पिता,
अनरज पोतरो अधिक जाया इता ।
थुळ थुळा घरे पाप प्राखड थुओ,
अतरजामी विळै ऊडीसै वुध हुओ ।
अधिक अभमान तोफान उठाडिया,
जगत जीयौ परो ज्या ... . ।
प्रवाडा तणौ लेखौ किसौ प्रमेसर,
नरिंदि घोडै सेतिलै निर्भै नर ।
काळीगे ऊपरै करै काइमि कटक,
राकसां हुँति रहमाण लीजे रटक ।
विलव के ही करौ हेमैं परमेसवर,
पालट परो उपराघ ब्राळौ पहर ।
अथरवण वेद रौ करौ ऊपर अलख,
खसौ असराण सा ख्याल जोयै खलक ।
मुगला तणौ करि आभरण मोहणा,
पलक हेक हुओ मेघा घरे प्राहुणा ।
त्रिधारौ खडग वाघा परौ त्रीकमा,
आव हो आव घोडै चडौ आलमा ।
वडा पतिसाह करि किलग सा वेढडी,
महमहण हमै पिरिणीजिजै मेघडी ।
आजि रै बाधियौ कडी तरगस अभिगि,
प्रिथी रै धिणी ससमाथ चडियौ पविगि ।
पाच कोडै मिळै सात कोड़ै प्रघळ,
वार नव कोडि मिळ्यिा कटक महावल ।
साठि दस हुसेनी सहस मिळ्यिा सही,
तेर कोडे हुआ तुरत हणामत तही ।

वापडे कोडि हेक पीर घोडे चडे,
वीर वह मीर के किताई वडवडे ।
पछिम पतिसाह खडिसे कटक पाधरो,
खेचरां भूचरा तणौ मेळौ खरो ।
खेतपाळां तणौ साथ सार्थे खिलै,
हरि तणौ कटक काळीग ऊपरि हिलै ।
भुलौ है भुलौ भगवान थारा भगत,
वभीपण जिसा वळिराम सरिखा वहत ।
मिळे दळ मोकळो कोडि अपछर मिळै,
भूत भगवान सा भूत साचा भिळै ।
निमो नरनाह निकळ क चडियो नरिंदि,
साथि सातइ सरग साथि सातइ समद ।
सहस कर कोडि सिव कोडि इ हि सामठा,
आज सहि किलग रै ऊपरा ऊलटा
हेक हरिचद जिसा कोड़ि हरिचद हुआ,
दोटि सा असुर परमेसि दीन्हा दूआ ।
मुहमदा अली मुंसा मिलै मोकळा,
डाकिणै प्रामिसै मांस वाळा डळा ।
धू घडे आज व्रम कीच पिणि आपसे,
अधिकि सुख वाभणा साधुआं आपसे ।
पाडवा सरिसि परमेसवर पूछिसै,
मान गमान तोफान नां मूछिसै ।
महा सेतान हुई से परो माजनै,
सुख कीओ धेन रै मेघ रै साभनै ।
दईत रै राज मा परै वरताहि दुख,
सील नै साच सत धरम रै हुये सुख ।
अहो दाणव किलग अलख आया अही,
मुरज्या कही सो वात जाणे सही ।

आक नीबा तणो ध्राख अघ केरड़ा,
घिरिणि नीली हुइ धानरा ढेरडा ।
साहिवै तणै सत आठ सहिनाणीया,
फळी वह भाति अहि वेलि फुलाणिया ।
चदमा तणौ सहि मेहणौ चालिऔ,
मेघ रिषि तणै घरि प्रमेसर माल्हिऔ ।
आहणौ हुऔ साघां घरे पिताई,
कालरा मांहि ऊगा कमळ किताई ।
हाथिणी साढि रौ दूध पालट हुऔ,
कहै ससि लोक औ समद इमिरित कुऔ ।
थले हीरा हुआ थले मोती थिया,
लाछिवर तणौ हव नांम मरदा लिया ।
वाभणा तणै घरि नूर वरतै वहत,
जिसै कलगना आज चडिया भगत ।
आज उजेणमां उभै दळ आहुड़े,
खरा भड़ रायरा खेंग आया।
राण रहमाण सुरताणं पुरिषा रतन,
किलंग रै ऊपरा चालि आयौ किसन ।
हरिखि हुइ जोगणी ताम नारद हसै,
कांइमै त्रिधारो खडग कडिया कसै ।
वाजिया धनख सुर संख वह वाजिया,
वरिणि पुड घूजिया गयण पुड गाजिया ।
वणी रै हुकम सा वहत मादल घुवै,
हूआ वरघू सवद देव दाणव हुवै ।
सालले सीधूऔ राग सरणाईया,
भलाई आज भारथ करी भाईया ।
मेह मेहा सरिसि आवि जूटा मोहरि,
वाण वाणा सरिसि वोटिया वहादरि ।

घणी करि जोर असराण जूटा घणो,
तो वहो त्रिधारो खडग निकलक तणो।
डहिकिया डमरू दात दांते डसै,
खाग खागा सरिसि खान खाना खसै।
वाथ वाथां पड़ै वाण वाणा वणण,
मिलिकि मिलिका मिळै असरां मरण।
वाजिया भला रिणि खेत मा वीरवर,
गाजिया रामचद किलग करता गमर।
भाल सा वालिया किलगना भाटिया,
काल रै कालि कालीगना काटिया।
काइमा देव साधा सरिसि काहला,
वसुह मा चालिया रगत रा वाहला।
अघळि रिणि खेत मा जवन पाथा पड़ै,
दईत सहि धरिण रै ऊपरा दड़दड़ै।
मरडकै कलायै हाडा आडा मुडै,
गिलै ब्रम कीच सहि कोड कूडै गुड़ै।
धरिणि रै ऊपरा धडा रा धूवका,
धिणी कुण भालिसै हे मै थारा धका।
धिणी जीवा तिणं धीक साधी वीया,
हला सा ताणीया हीसु एही विया।
आलमा निमो इलि भार ऊतारिया,
मारका दइत सहि किलग रा मारिया।
पहाड़ां हेठि दीन्हा परा पापिया,
इन्दरा राज वलिराउ ना आपिया।
थूल ऊथापिया साव तै थापिया,
किलग रा सेन तरूआरि सा कापिया।
खली रै वासतै खाड सखरी खणी,
धोख रिखां कन्है आवि वैठा धणी।

वेद च्यारइ अनै ब्रह्म वाखाणीयो,
जडाधर सरीखें प्रमेसर जाणीयो।
पेख पारबती अनै पदमावती,
अनत रै ऊपरा उतारौ आरती।
अहिल्या गाईया गीत उतावला,
प्रभुराग रीवा तणं धर पावला।
जमा गोरजा घणौ साराहियौ,
अलख ना भलाई भला आराहिया,
पीरि रासै विणी पाटि वेठा परम,
वरिणि नीली हुई घणौ वधियौ धरम।

॥ कविति ॥

वधे धरम सत वधे, साच सतोष सवाई,
जती सती जोगिया, भजन अब तुठौ भाई।
भजन नमो भगवान, साध ब्रह्मा सिवि सकर,
समरड तीनइ सकति अलख आदेस अपपर।
आदेश करै तुना अमर नाग करै आदेस नर,
पीरीयौ दास कासु पणै चतर नमो तु चक्रधर।
इति श्री पातिग पहार सपूर्ण समाप्त॥ श्री॥

डिंगल गीत

।। गीत अठताळो ।।

लालस पीरदांन रो कहियौ

कायम आवसै एक कळ्ह करिसै, धरिण नीलौ रूप धरिसै ।
मचीएा री धणी मरिसै, चोरिण ना चरिसै ।
सही पातिग विना सरिसै, भूत भूंडी डंड भरिसै ।
तुरत वाभण गाड तरिसै, मेघडी वरिसै ।। १ ।।

ओडिसै कालिंग टल्ला, हिमैं हुइसै हळ्हला ।
महमहण एकल मल्ला, सात्र वासला ।
आविसै रहमाण अल्ला, ढळिकिसै अणपार ढला ।
प्रमेसर वांधिसै पला, भूधरा भला ।। २ ।।

घातिसै तोफान घांणी, पीलिसै काढिसै पाणी ।
प्राखियौ सारंग प्राणी, सूरिज्या राणी ।
अगै काइ रीछडी आणी, भगत्त वछळ वात भाणी ।
जादिवै री अकलि जाणी, मेघडी माणी ।। ३ ।।

मूंस ईसा अली मूगळ, सेख साथै मीर सवळ ।
पीरजादा पडित प्रघळ, आदिमा उजळ ।
दईव करिसै एरसा दळ, विडग सेत इ नेक विमळ ।
चढै आलम पृथ्वी चळ चळ, क्रिलग रो कमळ ।
ग्यांन साथै भगति गाजी, वडी वाउल पछै वाजी ।
भूधरा करि दैत भाजी, राक सहि राजी ।
तू हिज़ रोटी दीयै ताजी, वहत राखै अमा वाजी ।
पीर आगिम कहै प्राजी, साधुआं साजी ।।

॥ चोपई ॥

काइम राजा आवहु राण, जांणां हूंकी तू घणजाण।
परो चढे नी पुरुखि पुराण, रेवत रै ऊपर रहमाण ॥ १ ॥
पहली वहिली पवग पलाणि, ईसा मूंसा मुहमंद आंण।
खूटविहो असुरा री खांणि, मेघां री कन्या ना माणि ॥ २ ॥
आवौ ःउरा प्रमेसर एक, हिंदू तुरक हुवै नी हेक।
नरहर गुरहर तुंहिज अनेक, तू राखै गाइया री टेक ॥ ३ ॥
भाइया री वेगी करी भीर, वडा धणी सुहिद्रा रा वीर।
मारि परा दइता ना मीर, पुणं चौपई वारट पीर ॥ ४ ॥

॥ दूहो ॥

कीरति कही कुराण मां, मिरिगजै वरग मंजार।
राजा किन्या रासि रै, देव तिको दातार।

॥ सोरठा ॥

मळिया मेछा माण, पापी चौकस पीलिरा।
आलम जी री आण, आज हुई इळ ऊपरा ॥ २ ॥
नरिंद किलग नै नाथ, खड़ि खडिसै रिण खेत मे।
मीग तू ससमाथ, सतगुर तूं सबळो सही ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

एक एक डनेक, एक अविगत उद्यासी।
मामौ कै मारियौ, मुकद कै मारी मासी।
कुणवौ कै कूटियौ, कुणै दहकंध नां दहियो।
तू गरढौ गोडियौ, कुंणै थारौ जस कहियौ।
पीरदांन कहै आदेस प्रभु, सूघर थे तौ भांड हौ।
ताहरै जानि तुरका तणी, मेघा रैं घरि माडहौ ॥ १ ॥

॥ गाहा ॥

पछि तणौ पतिसाहो, साधा सरिसि तारिसै साहिबि ।
नारिसिंघ नर नाहौ, रेवत सिरि चडिसै रहमाण ।

श्री रांमजी सती छै श्री

श्री रामजी

॥ गीत अठिताळो ॥

॥ लालस पीरदांन कहै ॥

देव दांणवे वडवडौ दावौ, लाख कोडे कटक ल्यावौ ।
धिणी जीवा तणा धावौ, भगत्ता भावौ ।
जुडण जाबूदीपि जावौ, ढीक करिजौ कळ्ह ठावौ ।
आव आवौ आव आवौ, आलमा आवौ ॥ १ ॥

चडौ वेंगा सुरहि चेळा, साधुआ करिजे सचेळा ।
लाछिवर सं देह लीला, किसन करि कीळा ।
भलां आया हुआं भेळा, खत्री खेतल तणा खेळा ।
महमहण रा असंख मेळा, मूंमणां मेळा ॥ २ ॥

ईस अणवर ब्रह्म अत्ती, जान साथै कोड जत्ती ।
ग्यांन विणिया कान्ह गत्ती, साध मिळि सत्ती ।
परणिजै त्रिभुवनपत्ती, भगतवछळ एण भत्ती ।
मेघ किनिया रूपमत्ती, राम सां रत्ती ॥ ३ ॥

दईत पडिसै घणा दडदड, रुंड राकस तुंड रड़वड़ ।
खाग खासा वहै खड़खड़, त्रिगडा त्रडत्रड ।
किलग ना कूटिसै कड़कड, भूक हुइसै किलगरा भड ।
जवन काढै जवन री जड़, आलमौ अणघड ॥ ४ ॥

लाछिवर हव लाख लसकर, घोडिला रौ करौ घूमर।
धिणी नीली करीजै धर, पोखिया पळचर।
फवै फौजा चीध फरहर, साहिबा सिणगारसी धर।
पणौ पीरौ निमो नरहर, सामि तू सधर॥ ५॥

॥ गीत लालस पीरदान कहै ॥

सत धरम तणौ कजि आव वडा छत्त, ग्यान रहौ गतिवाळौ ग्रामि।
गिर भाखर वाळा गोसाई, सेतलै चडि प्रिथिमीरा सामि॥ १॥
करिहो कोप हिमैं करणाकर, वाभण दोरा अतळवळ।
कळस थपावि धरमरा केसव, प्रिथमी रै ऊपरि प्रघळ॥ २॥
न्याउ करण नां आव वडा नर, गरढेरा दईता ना गोडि।
घेन निवाजि हिमैं कांधो धर, छोगाळा व ळ बधण छोडि॥ ३॥
राजेसरा प्रथमी रा राजा, नरहर गुर लिखमी रा नाह।
आव उरौ काइ ढील करै अति, पीर कहै मोटा पतिसाह॥ ४॥

॥ लिखतू लालस पीरदान ॥

॥ गीत लालस पीरदान रौ कह्यौ ॥

राघव देखि " " राजा, भरत सत्रघण लक्षण भ्राजा।
राज करसै राम राजा रामचद राजौ।
प्रमेसर वाधिसै पाजा, लोपसै दधि तणी लाजा।
साधुआं रा दीह साजा, वजाडौ वाजा॥ १॥
तुरत ही गुरु दोख टाळण, प्रभु चडियौ जगन पाळण।
जयौ दाण(व) वस जाळण, विदेही वाळण।
गरव फरसै तणौ गाळण, आपरौ सुसरौ उलाळण।
त्रक आयौ वेघ चाळण, असुरां उदाळण॥ २॥

वनवासी विसन विणियौ, जिकै श्रै संसार जणियौ ।
गोहि अगिलै जनमि गिणियौ, भूधरौ भणियौ ।
हेक दाणव व्याधि हणियौ, खरां त्रिसरा मूळ खणियौ ।
लाछि वर सिर सूप लुणियौ, सात्रवे मुणियौ ॥ ३ ॥
सवळि दांणवि हरी सीता, मुरह भुवणा तणी माता ।
जीव एक जटाइ जीत्या, प्रभू रा प्रीता ।
वरसि के वन माहि वीता, ग्यांन गोंविद रूप गीता ।
राकसा रा नेस रीता, आतम अजीता ॥ ४ ॥
परम पद सुग्रीव पाया, कीध कटके वळि काया ।
लकारै कांगरै लाया, हणमत हलाया ।
गोंविदै रामण गुड़ाया, जीपिया दसरथ जाया ॥
अयोध्या मे धणी आया, ब्रह्मा वधाया ॥५॥
ळाछवर रो नाम लीजै, कोई उत्तम काम कीजै ।
दुरवळा नै अन्न दीजै, भूधरो भीजै ॥
·· ··कमण वीजै, वेल नू हवै······· ·जै ।
पीरदास प्रणांम कीजै, रामचन्द्र री जै ॥६॥

गीत ॥लालस पीरदान रो कह्यौ॥

धर रे धर ध्यान धणी धरणीधर, अति अवतिरचौ फिरिचौ अंस ।
परहरि रे परहरि रे प्राखंड, हरि हरि कहि रे हरि रा हस ॥१॥
किंहिक भजन करि किंहिक दया करि, किंहिक धरम करि हुअै कल्याण ।
किंहिक सरम करि जीव नरम करि, इतौ थूळ काइ हुअै अजांण ॥२॥
राजा राम भजन साराजी, भजियां इज देखिस भगवान ।
आठेइ पहर धणौ उळावे, कान्हईयो कान्हइयो कान्ह ॥३॥
गोकळ माहि खेलियो गोंविद, आप सरीखा किया अहीर ।
कहतौ रहे तिकै ना कवियण, परमेसर परमेसर पीर ॥४॥

॥ गीत साणोर ॥

लालस पीरदान रो कहियौ ॥

पंहलाद समरियौ आयो जगपति, चत्रभुज निमो भगत रो चाड ।
बहनामी रै दाढ तणौ बळ, हरिणख तणौ जाणिसै हाड ॥१॥
पडियो असुर ऊपरा पडिऔ, कोपिऔ ओपिऔ निमो कंठीर ।
झाभै त्रिसळै दंत झरिडियो, वडियौ मास भरथ रै वीर ॥२॥
हरिणाकस निरदळियौ हाथै, गिळियौ गुद्र नमो व्रम ग्यान ।
लिखमी धूजि निमै पाइ लागी, भलै भलै दरसण भगवान ॥३॥
वामण देव भयाणक विणयो, निमो निमो नरसिंघ नरेस ।
सुप्रसंन हुए जगतगुर सामी, पीरियो दास कहै परमेस ॥४॥

॥ गीत ॥

लालस पीरदान श्री परमेसरजी नू कहौ

वाराह नर ना.... , अजि राजिया पराक्रम वाह ।
दात्रिडिआळ वडौ तू डारण, तूं एकलमल भूत अथाह ॥१॥
ले गयौ दैत रसातळि लखमी, ग्यौ अतलोक तणौ सहि ग्राम ।
रेण तणौ तू धिणी राजियो, रेण उरी लै आतम राग ॥२॥
जळ मांही पैठौ जग जीवन, असुरा तणी भाजिवा आस ।
ताहरौ जाणियौ हुऔ त्रीकमा, प्रिथी मडागी कोड पचास ॥३॥
दीह किता लडियौ दाणव सू, हो ! हरिणख रा मारणहार ।
पीरियौ कहै नमो चक्रपाणी, किलरा युद्ध कीधा करतार ॥४॥

गीत लालस पीरदांन रो कहियो।

साहिब नां जोड़ि घणं गुण सखरा, सुरिख रीझै .... साचि।
बांभण देव तणो तू बारट, वाम ... तणो जस वाचि ॥
सूरति खूब वणी कासिपिसुत, वेद चियारुइ वाणी वाह।
इसी भांति सा आज आतिमो, आवै बंळि रै द्वारि अलाह ॥२॥
बळि राजा छळियो बहनांमी, निबिळै सै दोइ त्रिख नाखि।
एक कीयै तै इदरै ऊपर, एक सुकर री काढी आखि ॥३॥
अति रीझाइ अम्हारा आतमि, गाइ रे गाइ वामण रा गीत।
वप वैराट सरीखो वांमण, पीरिया करि वांमण सा प्रीत ॥४॥

गीत पीरदान रो कह्यो।

बहनामी आप निमो सिधि वाबा, सुकर नही चत्रभुत्र ससमाथ ॥
भगति दिवारि भरथरा भाई, नाम लिवारि हिमै जगनाथ ॥१॥
जगपति कुंण थारी गति जाणै, अकलि तुहारी एक अनेक।
जुध वाहिरो जगत सहि जीतो, तू राखै भगता री टेक ॥२॥
दळिदि कबीर तणो तै दहियो वसियो भगत सरग रै वीच।
चौर कांइ भगता रै चडियो, खाधो काइ करमा रो खीच ॥३॥
सतजुग मां मिळियो सिगळा ना, कळिजुग माहि सुधारण काज।
गोविंद तू तूठो गिनका ना, मीरा नामि लियो महाराज ॥४॥
समपण सरब उड़ीसा सामी, वाहर हो वाहर व्रिजराज।
बुध अवतार पीरियो बारट, सजिया सो कीजै सिरताज ॥५॥

॥ गीत पीरदान रो कहियो ॥

करी कोप करणा करण, कट मोटी करी,
कांही कै थापि उथापि काँही ।
मेघड़ी पिरणि वसदेव रा माहवा,
माहवा आ········ ··· ·········ही ॥ १ ॥
चचळे चडावै········ ··· · · · · ·चडी,
टोघडे निवाजण · ······ ·· · ·टापौ ।
त्रिधारी खडग ना बाधि कासिपि तणा,
किलंग रै ऊपरा हिमैं कोपौ ॥ २ ॥
दान मागै प्रभु अत्रीरी दीकरौ, वाज सिणिगारिजै सेत वाराह ।
पुकारै साध पीपळ हुओ पुकारै, पुकारा साभळी वडा पतिसाह ॥ ३ ॥
पछिमिसां आव तू ल्याव पाडव प्रभू, महमहण ताहरा असख मेळा ।
वाधिया काइ वळिराउ रा वेलियां, भूधरा करौ पहिळाद भेळा ॥ ४ ॥
ग्यान गरुआ विणी गोविंद गोसाई, दाणवा ऊपरा दिओ नी डांण ।
क्रिपा करिजे किसंन पीर चाकर कहै, आलमा काइमा तुहारी आण ॥५॥

॥ गीत पीरदान रो कहियो ॥

मिळै कोडि तेत्रीस सुर भीमरै माडही,
अधिकि आणद कना अधकि औछाह ।
जानि उग्रसेन वळिभद्र जिसा जानिया,
विद्रवा तणी घर हुओ वीमाह ॥ १ ॥
साभिया दंत साळै दिआ सेहरा,
वाजिया गाजिया केई वाजा ।
वांधिया मौड ब्रहमा पला वाविया,
रुखमणी पिरिणिया रांम राजा ॥ २ ॥

निरखियो भीम सखे भड़े नारीयण, देवता देवतां तणौ डाडो।
विसन नर रइ णि री वाह मूरति छि करतार लाडी ॥३॥
इदि अहल्यै उधारण ऊरा, गौरिज्यिा लूण उभारै।
छात्र त्रिहलोक रै छोडिया छेहड़ा, त्रीकमों पिरिणियो संत तारै ॥४॥
हाटडै हाटडै लोक सहि हरिखिया, गोखडै गोखडै गीत गाया।
सामि पीरे तणौ ववावी हे सखी, लाछिना किसन पिरणीजि लाया ॥५॥

१२—गीत पीरदांन रो कहियो

दरसण देवण रै भाव रो

ओळिखिओ परौ तनां म्हे अविगत, गोकळग्राम तणौ तू ग्वाळ।
माहवा नांम तुहारौ मीठो, दीठौ दीठौ दीनदयाळ ॥१॥
अरिजण रा टळिया उपराघा, खळ खाधा पावक-भखण।
वहनांमी मत राखौ वावा, लाधा म्हे थांरा लखण ॥२॥
छता हुआ किमि रहिसो छिपिया, घट मांही अजुआळ घणौ।
कोमळ पग कांना मां कुंडळ, तोवह दरसण तूझ तणौ ॥३॥
चरण तुहारा दीठा चत्रभुत्र, मुख दीठौ दीठौ कमळ।
प्रीतवर दीठौ परमेसर, दईतां ऊपर करो दळ ॥४॥
ईसाणंद वारट आराधै, भल गुण थारा व्यास भणै।
वालमीक तूं नां अति वाल्हौ, पीरदास अरदास पणै ॥ ५ ॥

१३—गीत सपंखरौ

अवतार स्तुति

भले भीमरा जमाई निमो वाई सुहिद्रा रा भाई,
पुत्रेई कमाई पाई ध्रूवकाई धीक।
राजाई कहीजै किनां पातसाही थारी रांम,
ठगाई तुम्हारी निमो ठकराई ठीक ॥१॥

दईवांण सुरतांण दीवाण तूं ही ज देवा,
माडिया मडांण केई समंद मथांण ।
कुरवाण रहिमांण कुराण पुराण कहै,
आपरी कल्याण दाण उग्रसेन आंण ॥२॥

राखसा पथळ राम महल आकास रेण,
मचीरणा रा सल सामी मांडि युध मल ।
लिखमी टहल करै अहल न आवै लिगी,
पंचाळी अलज पळ मिळे थारौ मल ॥३॥

गोपाळ व्रिजरा वाळ गोवाळ गोवाळ गति ।
छोगाळ छत्राळ साई प्रतिपाळ साच ।
जादवां उजाळ नमो विरुदा विसाळ जूना,
डांग:धारी काळ माथै ससिपाळ डाच ॥४॥

जोईयौं जवने विंदे गुंडिदां गुंडिदे जूटे,
कंस रे नरदे कही हलां तणी हीव ।
चीतारै दुंडिदै वदै चरणारविंदे चाहै,
गोविंदे भगते गीदै तारीया गरीब ॥५॥

निरकार निरद्वार दईतां संघार निमो,
आदेस अपार पार अवतार अंस ।
साधुआं सुधार सामी आविस्यै निजारसाह,
काइमौ नंदकुआर, कस मार कंस ॥ ६ ॥

हैग्रीव वाराह हस ग्राहनां अथाह गति,
पातिसाहा पातिसाह अणथाह पीर ।
दईतां री हीयै दाह आविस्यै अलाह देखौ ।
निलाह सलाह निमो नर नाह नीर ॥ ७ ॥
साधुआं सुधारौ सही पापिया विसारै परा,
संभारै चीतारै तिका तारै सिरताज ।

जवनां उवारे मारे जुध मांन हारे जद,
पसारे समद माथे परवारे पाज ॥ ८ ॥
सांमिरे रुखम साळा काळा काळा जिके कान्ह,
सधारे सिंघाळा भाई कसवाळा सेख ।
दीसता दीनदयाळा चिरिताळा निभो देव,
अकरूर आळा भिळे तमासा अलेख ॥ ९ ॥
नारसिंघ थारो नांम फरसराम निवाजे,
देखतां दुवारिका धांम सदामे रे दाम ।
सत्य रांम रुघराम लिखमी वामे सहेत,
गोविंदा तुहारो भलें वैंकुंठ री ग्राम ॥१०॥
तूं हीज अकाज काज भगतांरी लाज तनां ।
विसारियो केम परी विजराज वाज ।
आविस्यै अनत आज गजराज उधारिवा,
निध माथे गाज करे निपाइयो नाज ॥११॥
सास सासि विखे थारो जस वास करा सामी,
तनांई न जांणे जास तिकां थारो तास ।
ग्रभवास टाळे परा जमवाळा प्रास ग्यान,
आपरा पगां री राखे पीरदास आस ॥ १२ ॥

१४—गीत पीरदांन रो कहियो

हैग्रीव, वाराह, धरणीधर नरसिहा री स्तुति

अविधूत अलेख अलाह अपंपर, सिगळाई देव तुहारा संत ।
अत्री तणे घर रा अजुआळा, अनसोईया वाळा अनत ॥ १ ॥

कांइ हो कृपा करीस कद केसव, कूंड म दाखवि साच कहि ।
प्राणीया हिवे भगति करिय, तणा गुण दाखि रहि ॥ २ ॥

समति करंतो रखे समासे, कमति करतो ढील करि ।
कवीयण माथे किहक क्रिपा करि, हैग्रीवा वाराह हरि ॥ ३ ॥

ध्रम मूरति वाळा धरणीधर, नरहर तूझ तणौ कोइ नाम।
अनंत भगति जिणिसां उधरिया, पीरिओइ तिणिनाँ करै प्रणाम। ४।

१५—गीत पीरदांन लालस रो कहियौ

साहिवा रै सहि थारी सारो, वडा धिणी जम प्रासै वारौ।
खोटी वात ससारीइ खारी, आतिमा मुंनां पारि उतारौ ॥ १ ॥
विखै ससार तणौ रस वाल्हौ, केसवराइ हुओ हूँ काल्हौ।
परमेसर पातिगनां पालौ, हरि रै गोढै झगडै हालौ ॥ २ ॥
केहिक होवै तौ सुकिरिति करिया, जरणा रै वातां सहि जरिया।
डाकण छै ममता थी डरिया, त्रीकम साँ कितराई तरिया॥ ३ ॥
त्रीकम अरज करां छां तूनां, मोटी अकलि समापे मूनां।
जादवराव निमो जर जूनां, वैकंठ मां राखे वे खूना ॥ ४ ॥
अविगत नाथ परम पद आपे, सावा ना साज ....।
असरां एक इनेक उथापै, थर करि लंक वभीखण थापै ॥ ५ ।
जपती रहि दसरथ रौ जायौ, थांभौ फाडि भगत नां थायौ।
लाछि तणौ वरि चलणै लायौ, पीरीअै ई परमेसर पायौ ॥ ६ ॥

१६—गीत पीरदांन लालस रो कहियौ

असुरां नै सघारण रो

मधकीटक मीत वडा जुध मांडण, गांजण असुर उधारण गोह।
रांमण नै महिरांमण रेसण, दईतां तणौ मरण री डोह ॥१॥
खंड डंडूळ सरीखा खाफर, वळै अंगासुर कस वहि।
कितरा दैत कूटिया केसव, कवियण दाखै साच कहि ॥ २ ॥
वळिराजा वांधण वहनामी, प्रांधण वेढि किलग सा पीर॥
समरासुर सगठासुर साझण, भारथ करण भगत री भीर ॥ ३ ॥
वांणासुर सरिखा हटिया वळ, नरकासुर गिळिया निरकार।
किमि करि पीर करै करणा कर, कळ्हा री लेखौ करतार ॥ ४ ॥

१७—गीत सांणोर पीरदांन रो कह्यौ

थाहर देवण रो

.... अंतरजांमी, वहनांमी दे आव ... .. वाज ।
गोविंद मेर सरग रा ग्रांमी, भामी हो भांमी सुभराज ॥ १ ॥
राजि रा पाउ पताळ तणी रुख, मसतक सरगा जिसौ मडाण ।
राजरा छूमण दिसे रुघराजा, मन ससिहर कुखा महिराण ॥ २ ॥
असट कमळ विचि वास आपरो, वळिहारी हो वळिभद्र वाप ।
आनरी भगत करैं छंं अरजां, आपरो रूप दिखाळो आप ॥ ३ ॥
राजिरो पार न जांणां रावव, आपरै नाम तणो आधार ।
थांहरां वीच पीरना थाहर, दोजे हो दीजै दातार ॥ ४ ॥

१८—गीत पीरदांन रो कह्यो

अवगत री स्तुति

महाराज तणै कहिजै कस मामो, नरकासुर वेटो निज नेह ।
सुसरो रीछ रुखमयो साळो, अविगत तणै गनाइति एह ॥ १ ॥
सुहिद्रा विहिन वाप तो वसदे, कोसिलि मात निमो करतार ।
भांमिणि सीत द्रोपदी भगतिणि, जांमिणि कुण हो साह निजार ॥२॥
रुखमणो राजि तणो पटराणी, दईता हुंता सदा दुमेळ ।
प्रम परवान वात ना ब्रह्मा, मुहमद ... .. . मेळ ॥ ३ ॥
किण रो मोत कुण रो केसव, वहनांमी सिगळां रो वाप ।
पीरियो करि थारो परमेसर, अविगत नाथ वडेरा आप ॥ ४ ॥

१९—गीत पीरदांन लालस रो कहियौ

मेह वरसावण रो

हुयै परा हरीयाळ हरीआळ करि मनोहर,
जायै पातिगि परा धरम जागै ।
जीव नव खंडरा रिजकि मागै जुओ,
मेह करि गावडै घास मागै ॥ १ ॥

वंस अजुआळ प्रतिपाळ थे वीठला,
रांमचंद राजि मुर भुवण राईआ ।
पुरांणा डोकरा अरज सांभळि परी,
भांजिहो भांजि भेचक भाईया ॥ २ ॥
केई सरवर भरो नये सुभर करो,
क्रिपा करि क्रिपा करि किसन कलियाण ।
मेह री ढील राखो हिमैं महमहण,
आप ना सरव भगतां तणी आंण ॥ ३ ॥
करो जगि छेळ हव छतो हू केसवा,
नवे घातो नदे निरमळा नीर ।
धणी सुर जेठ·········· ··· ···ण····ध्रवो,
प्रमेसर राज नां पयंपे पीर ॥ ४ ॥

२०—गीत पीरदांन लालस रो कहियो

इग्यारस रै व्रत रै महातम रो

मुर दईत जागियौ भुवणां माही, देवां रै ऊपनो डर ।
हर सुर जेठ करै सहि हेला, वहिलो आवै लाछिवर ॥ १ ॥
देवां री तिण दीह डोकरै, परमेसर सांभळि पुकार ।
निसचरना किमि करि निरदळियो, इग्यारसि अईयो अवतार ॥ २ ॥
एकादसी उधारण आवी, जीवडां ध्रम असमेघ जिसौ ।
इग्यारसि करिसै उधिरिसैं, इग्यारसि रो वरत इसौ ॥ ३ ॥
राति नै दीह भजन मां रहिजे, दिनि वारिस रै देसै दान ।
इण जुगरी वेड़ी इग्यारसि, गोविंदा तिके प्रामिसै ग्यांन ॥ ४ ॥
पख पख मांहि हुवै पुन प्रघळा, पीर पतग रै जोडै पांण ।
सिगळाई परमेसर सरिखा, इगीयारसि थारा अहिनाण ॥ ५ ॥

२१—गीत लालस पीरदांन रो कहियो (श्री गंगसांमजीरो)

किम तरिये भव हव कासूं करणी, निज निसतरणी थारे नांम ।
घणियां जेम उवारी धरणी, सरणी तूझ तणी गंगसाम ॥ १ ॥
संमरे ब्रहम.... ....न, धन मुरधर तणी धर ।
मा ....माह वडा, चलणी थारी ज्रकधर ॥ २ ॥
आलिम साह पारवती ओपे, रुखमणी रांणी पासि रहे ।
ओ गंगसांम विराजे आछो, देखे जिहांरा दळिद्र दहे ॥ ३ ॥
भूलिज्यो मति कदेई भूधर, जोइ लेखे राखे विजराज ।
तूझ तणो निसदीह त्रीकमा, मुजरो पीर करे महाराज ॥ ४ ॥

२२—गीत पीरदांन लालस रो कह्यौ

भगवान री स्तुति रो

नारी अहिला सरीर सिला, कीर ना तारियौ थेंहो ।
दातार अदला देव, चाव धारी चिति ।
हलाहला आया हालिम, हला स हल्या हुआ ।
महा प्रभु आप मला, भला भला मित ॥ १ ॥
पेहळाद गांन पला, अला अला कहो आप ।
राजिरां भगतां माथै राकसांरी रीस ।
ताहरां नां दिये टला, विशननु होमवला भुजाडंड वीस ।
अगासुरां बुगासुर कंसासुरा उवेढिया ॥२॥
निसाचरा प्रसासुरा अचासुरां नांखि ।
त्रत्रासुरा वाणांसुरा दीया वाहि ।
आपरा भगता दिसी आँखि ॥ ३ ॥
उळाविजे अविणास अम्ह आस एह आछे ।
नितो निति रहाविजे नेम ।
वेद व्यास वालमीक सुखदेव दास वाला ।
प्रभु रे चितिमां वालो पीरदास प्रेम ॥ ४ ॥

२३—गीत जाति अठतालौ

लालस पीरदांन रौ कहियौ, भगतिदान देवण रो

जगपति नान्हीयौ वसुदेवि जायौ, वड़े भगते थाळ वायौ ।
हरिख हरिख हुलरायौ, ग्वाळीये गायौ ॥
प्रघळ दैतै दुख पायौ, निसचरां ना सुख नायौ ।
कंस मन मो हुयो कायौ, आलमौ आयो ॥ १ ॥
मेघ इंद रो मद मुडियौ, चक्रधर रै विरिद चढ़ीयौ ।
प्रगु सखरो थाट घड़ीयौ, विलोणा वड़ीयौ ॥
जवनं सां नित नित युडीयौ, पलव ऐकणि चौकि पड़ीयौ ।
लाख दैता हूंत लडीयौ, कंसरौ कड़ीयौ ॥ २ ॥
हालियौ अकरूर हड़वड, विमळ वोरी हुंति वड़चड़ ।
कस ऊपरि गयौ कांन्हड़, नंद रौ नांन्हड़ ॥
भगतवछळ भूवरो भड़, जो औ काढे कस री जड़ ।
पीटिया सहि दईत पड़ पड़, भोरीया भड़ भड़ ॥ ३ ॥
मात पित सां हुआ मेळा, कूबड़ी मा कीध कीळा ।
लाछिवर री निरखि लीला, लाछिवर लीला ॥
ग्रक्क नाथण हार चीळा, किसंन रमीया रास कीळा ।
निमो हो नीळ नीळा, पंगरण पीळा ॥ ४ ॥
मारि तारो तुरत मासी, पिता री काटेयी प्रासी ।
वामणी द्वारका वासी, ... ॥
किसन चहिनै गया कासी, असुर का..........णासी ।
खरी दीजै भगति खासी, दान कवि दासी ॥ ५ ॥

२४—गीत सांणोर, लालस पीरदांन रौ कहियो

श्री नरसिंघजी री स्तुति रो

पहिल्राद समरियौ आयौ जगति, चत्रभुज निमो भगतरी चाड।
वहनामी रै दाढ तणौ वळ, हरिणाख तंणौ जाणिसे हाड ॥ १ ॥
पड़ियो असुर ऊपरा पड़िओ, कोपिओ ओपिओ निमो कंठीर।
झाझे त्रिसळे दंत झरिड़ियो, वड़ियो मांस भरथ रै वीर ॥ २ ॥
हरिणाकस निरदळियो हाथे, गिलियौ गुद्र नसो अमन्यान।
लिखमी धूजि निमे पाय लागी, भिळे भिळे दरसण भगवांन ॥ ३ ॥
वामणदेव भयांणक विणयो, निमो नमो नरसिंघ नरेस।
सुप्रसन हुए जगत गुर सांमी, पीरियो दास कहै परमेस ॥ ४ ॥

२५—गीत

लालस पीरदांनजी रो कहियो ॥

गंगा सिनान रो

ओ करा वदगी तुम्हारी वाप,
आपो आप ध्यान करा, जाणोओ अजपा जाप।
न जांणीओ जाप, अस्वरां उथाप आप महापाप परा मेटो ॥ १ ॥
समद तरीजो केम जीवना संताप, राकसां नां अ रीठौ पइठौ।
भीतरा प्रभु दीठौजी, घट मां दीठौ दीठौ दीठौ देव ॥ २ ॥
माहरे तूं मात ताति, ताहरौ भुजन मीठौ।
सवाहो नही पीरदास सामळेरी छेव ॥ ३ ॥
गंगरो सिनांन करे, ओणरो निवास ग्रहै।
प्रागरे सिनांन कियां पातग पहार प्राण नीड वड़ा छौं ॥ ४ ॥

—पीरदांन लालस

२६—गीत

रुखमणी परण लाया तिण भाव रो

गुरड़ि चड़ी नी ग्यांन, वळिभद्र रथ चढीया वहसि ।
जादव सगळा जांन, परणेवा आयौ ॥ १ ॥
हाथे मिळिया हाथ, लवगे मांडहो छाईयौ ।
सहि देवां री साथ, लेवा आयौ लाछि नै ॥ २ ॥
केसव राज कुंआर, रांणी अई ओ रुखमणी ।
अलख तणो अवतार, सखरो लाडो सांवळो ॥ ३ ॥
गोविंद आयौ ग्रेह, भुजोओ आंगण भीम रौ ।
नर हर वाळो नेह, रांणी जांणै रुखमणी ॥ ४ ॥
नांन्हड़ थारै नारि, सोळह सहस नै एक सै ।
पीर न जाणै पार, तूझ तणां वसदेवतण ॥ ५ ॥

२७—गीत (प्रणाम)

देवा दातारां झूझारां वेदा च्यारां अवतारां दसां,
धारा हिरा वारागिरा रूप धांम ।
सतीयां जतीयां सारां सूरां-पूरां रूखेरा,
पीरा पेकंबरां सिधां साधकां प्रणांम ॥ १ ॥

२८—गीत लालस पीरदांनजी रो कहियो

स्तुति

निमो ईस्वरी, अनत नाम हीगळाज निरंजणी,
वड़ा देव मेकदत संभु नाथ वछ।
अकल संमापो आई देवी राजि कीजै दया,
कथणी अनत करा कहा मछ कछ।
विरोळिओ जळाकार वाळिग्रा आपरा वेद,
साभियो फूक सासाँ...... ....।

२९—चौमासौ

गुहिरो गुहिरो गरजोयो, रेणा करिस्यै रूप।
वसधा माहि वरसिस्यै, श्री आसाढ़ अनूप॥ १॥
चद्राउळि री चूडिली, राधाजी सो रास।
सहीयां नां प्यारो सही, माहवा श्रांवण मास॥ २॥
भूधर वरसै भाद्रवो, सेहिरे वीज सिळाउ।
जेथी तेथी जादवो, कांन्हड़ करै कळाउ॥ ३॥
सांभळिजो वसुदेव सुत, आसु मास अरज्ज।
कर जोड़े पीरो कहै, गोविंद करो गरज्ज॥ ४॥

३०—कवित्त

आलमजी रा

हरि पैडी हरिद्वारि, नीर सोरंम रै वाह्या।
मकै मदीनै मांहि, प्राग वड़ दरसण पाया॥
गया कोड़ि गोमती, कोडि जिग तीरथ कीजै।
कोडि वार दस कोडि, दान गावतरी दीजै॥
इंद्र दमण उड़ीसै वीच अति, गोविंद गोवद गाईया।
हो पीर लाय इतरो हुयै, आलम चोरै आईयां॥ १॥

रहमांणी राघवी पारि पैहिले पहचाया।
क्रिपा करतै कान्ह अतघ संसार तराया॥
आज भलै वातडै, आज रविवारू ऊगौ।
आज हुऔ आणद पाप नाठो पंन पूगौ॥
सेतलै तणा दरसण सहो, पीर कवेसरि पाइया।
धन घडी आज मुहरत धन, आलम चोरे आइया॥ २॥

भिले भिले भेपगां, सरव ग्रह हुआ सवाडा।
भिले भिले भगवत, प्रघळ ताहरां प्रवाड़ा॥
असर कमळ विचि एक, मांहि वैठो महाराजा।
दिलि भीतरि देवता, रहै रांमइयो राजा॥
प्रम तणौ नांम रे पीरिया, जिकु स सखरो जाणिया।
कलांण तणा चरणा कने, आलम चोरै आंणिया॥ ३॥

प्रथिमि उडिसै धाह, थाह खरसांणि उरेरो ।
दोडै नी दोड़ि रे, घोड़ वडगड़े घणेरो ।
आवै रथ आहचौ, हाथ वाहिरा क.................हल ।
तूं धानतर धणी, भला थारो दाखे भल ।
कवि तणो पुत्र साजो करे, कवि थारै रे काम छै ।
हरिदास ईए यारे हुओ, आलम आवै आहचै ॥ ४ ॥

सिधि सागर सारखा, वांण गगा वहतेरा ।
पंच तीरथी प्रिघळा, सेतवंदह सह तेरा ।
कासी सरखा किता, जमरण सरसती सिगळा जळ ।
परव तोया अरण पार, चित्रकोट उद्याचळ ।
वदरो केदार सरीखा वहत, खांरालंभ राखण खरा ।
उआरणै करै तीरथ इता, आलंम चोरै ऊपरा ॥ ५ ॥

———

परिशिष्ट १

३१ परमेसर पुरांण के छूटे हुए पद्य

पद्य सं० ६१ के वाद

साघा माही सोहियो, आसागिरि तूं आज।
वड हथ सोढा वैरिसी, जोई वारठ जसराज—६२

पद्य सं० १०१ की १ लाईन के वाद

पुरी दमोदर पीर नां, त्रीकम पारि उतारि—१०४
वीरो सचियो वीर वर, तमण हरै ना तारि।
सुंदरि जेठी सारिखै, मलिसै जमै मंझारि—१०५

पद्य सं० १०६ के वाद

भोळी गति रा भाईया, अलख पधारै आज।
मिलका घर वे सामीया, सेसा ना सुभराज—११०
गोसांई साई गहन, तखति वैसि तुड़िवांण।
काइमि राजा न्याउ करि, राजि वहा रहमाण—१११

पद्य सं० १०९ के वाद

गति मा आपो गोविंदो, दईतां रौ घरि दुक्ख।
बांभण पीपळ रैं वहत, सुरहि घेनरौ सुख—११४

पद्य सं० ११३ के वाद

कितरी...........................या, कहि मुंनां करतार।
नर हर हुं स.................नही, अइयो पिथ अवतार—११९
तैं पहिळादो तारियो, असख वार अपरंम।
प्रथळा दइत पछाड़िया, कान्हड़ तणा करंम—१२०

नंद महर रौ नांन्हीये, गोविंदि चारी गाइ।
निसचर वाळौ नेस मां, लखमण दीन्ही लाइ—१२१
वेरीयां नां हळ वाहिया, वळिभद्र वुध विरदाळ।
के ए कीधो कपट, ज्यान धरम जंमजाळ—१२३

पद्य सं० ११७ [illegible]द

कुण थारी कीरति करै, निहचळ थारी नांम।
तूझ तणैं वारट तिणैं, रावा सांभळि रांम—१२८
गति मा राखैं गोविंदा, जयो अजंपा जाप।
पगे लगाड़ो पीरना, वारट छे मां वाप—१२६

(सा० रि० सो० कलकत्ते के सं० १७१२ वि० गुटके से)

———

परिशिष्ट २

गुण छभा प्रब

गाहा

सरसति सुमति संमपि सुर सामिणि,
गोरि तरणी[1] हंसागांमिणि ।
कोमळ काया कश्रारी कामिणि,
ब्रहमाणी दे वरदाइणि ॥ १ ॥
ब्रहमाणी देवी वरदाता,
मो वर देश्र[2] सरसती माता ।
तै वरदाया देव विरवीयाता,
तो वरणवियै देवि विघाता ॥ २ ॥
वेद वदन तोरो वघवाणी, वघवाणी दे श्रविरल वाणी ।
रखण लाज पंडवा राणी, पणां सकत हूं सारगप्राणी ॥ ३ ॥
पग पूजिया परम पंचाळी, पचाळी पति लज्याळी ।
कीध श्रकथा नथण काळी, ताइ मति सारि वदां वनमाळी ॥४॥

छंद मोतीदांम

तो वदा वनमाळी श्रादि विसन, पचाळीय पूजि किसंन प्रसंन ।
पंचाळी पूजे पाउ परंम, घरम तणे घरि श्रादि घरंम ।
श्रागे एक वार कहै जुग एम, जुजठिळ ज्याग किया बळि जेम ।
रायां सेंह रूप जुजठिळ राव, कियो द्रिगविज कथन कहाव ।
श्रंनोइनि राणी राउ इनेक, सुर नर श्राइ मिळे सवमेक ।
श्राया सहि सेण दुजोवण श्राव, रायां वळ रखण पोखण राव ।
दजोवण सनघि दुसासन, कंणे घु रखण कोप करन ।

मूल प्रति मे इस प्रकार है—
१—नरनी, २—वदेश्र,

सारिखा डाहिली अै ससिपाळ, भेळा दोइ लाख मिळे भूपाळ।
भगता हेत छूवै भगवांन, करे भिकाळ[3] चत्रभुज कान।
गायै मुगधा मुखि मगळ गीत, गंमागमि अवप न्यान संगीत।
वड़ा रिख वेद वदै तिण वार, हुतासण होमि इंमृति अहार।
सहुँ इळ साजन सेण समाज, विलोक विलोकति राज विराज।
महामिण माणिक राजमहल, नवला चित्त चिरति नवल।
इसा मय दांणव आइ उकत्ति, महल विणाया माया मत्ति।
जळे थळ जाम थळे जळ जेम, उपाया माया मंदरि एम।
महा कीय देखित भुलीय माहि, चक्रवति भूलि गयो सब चाहि।
दुजोवण भूलिवणी सब देखि, विचखण भूलो लेख विसेखि।
निरखे आगणि आछा नीर, धरे पग[4] पाछा ताम अधीर।
वलेत भीत भुरजि विचाळ, कटकेय पाथर वीच कपाळ।
आयो दुरजोवन देखि असीध, कौतुहळ हास पचाळीय कीध।
दुन्है कर ताळीय ताळी दीघ, सुखो सुजिपति हसत सवेअ।
हसी पंचाळीय भोळी होइ, कितु कळि होइण हास्य कोइ।
टहटह भीम खिले परि तांह, ऊपनौ वस विरोध अथाह।
मडाणौ मूळि कळेस मडाण, रीसाणौ दूत दजेवण राण।
वेसासौ हासो एह विणास, ... ।
खरौ लोय लागौ वेण खटक, हुए दिल खाटो जीव हटक।
हुए व्रिष वेण हुए वह हांणि, जाळोवळ सांप लगो अंगि जाणि।
चड़े मुखि क्रोध किया चखचोळ, वहादर दूखांणौ जळवोळ।
भुठठे डसण काठा भीड़ि, सजोधन सोच सको जस भीड़ि।
राया चोय पकति वैठौ राउ, निहाळेय घोमक उर न्याउ।
निहाळे आडी दीठ निभंत, वळि भरि कावळ्यिौ वळ्वित।
रवि तळि" समै ध्रमराव, पूजे परपोतम उत्तम पाव।
कथूरी कुंकम केळ कपूर, पूजे परपोत्तम पाउ पऊर।
पखाळे जीह नमी जळ पाउ, चरचे। चदण कुंकम चाउ।

३—भिचाळ, ४—धरेप।

पहप परमळ श्रीफळ पान, भगत जगत वदै भगवांन।
जुजठळि ज्याग तणै फळ जीत, प्रवति हुयौ पग पूजि प्रवीत।
समै तिण काळ चड़ै ससिपाळ, वडो सुर बोले बोल विसाळ।
जुजठिळ भीम अनै अरिजंन, करौ पग पूज[५] अहार किसन।
राज सज्याग विषै ध्रमराज, अहीरां पूज सपेखी आज।
वदै विस वैण इसा विस लोउ, सुणै सुजि राणा रांउ सकोइ।
सुणै सुजि बैठा सामि सरोर, वचन-वचन हसै वळि वीर।
अरिजन ताम लगे तन आगि, मरोड़ै मूंछ न बोलै मागि।
कहै निज नाथ सुणै सह कोइ, लहेसी लेखा पाखै लोइ।
वदै व्रिष वाणी वारोवारि, सिरजण हार गिणै सुविचार।
गणता सौ लग संख्या गाळि, पणै पैंहलौ हरि बोल स पाळि।
इसै ओघांण थकै मु विमेक, अरिजन गाळि दई तब एक।
अरजण गाळि सुणै आवाज, रिदै वह रीस चढ[६] व्रिजराज।
करे करि चक्कर कोप कराळ, कियौ ससिपाळ तणौ तद काळ।
हयो पैपाति मिसो मिस हाथ, निमो वनमाळी काळीनाथ।
निमो नरपति सहसर नाम, पथारीय सारी कीध प्रणाम।
समै तिण राणा राव सकोइ, वदै गुण नाथ तणा विस लोइ।
भलौ दिन आज अमीणो भाग, जोयै परतकि पुरिख जियाग।
सहुँ मिळ सीख करै सप्रसन, वळे पग पूजे आदि विसंन।
विसनोई सोख करी तिण वार, वळे भुज भूखण कंस विडार।
वळ्यो दुरजोधन लेह विरट्ट, मिटे घट हैंता मांण मरट्ट।
कहै दरजोधन एम कथन, सुकनीय सिनध ......दूसासन।
करौ बुधवत इसी बुधि कोइ, पचाळीय लोपा लाज पळोई।
इसौ अम्ह एक कियौ अपवाद, खरौखर डकै वैण विखाद।
वळै जद वैर पंचाळोय वैण, निसा सुख नीद करा तद नैण।
सुकनीय जपै राउ सरिस, महा मतिवत करां मिजलिस।
करां कळ कावळ कूड कपट्ट, बुलाव पाँडव देशा पट्ट।

५—पू, ६—ध्रा

जुजठळ हारि विसा इम जोइ, विहाणे दूत रमै विस लोइ।
जुजठिळ भोळौ ठाकुर जाणि, न जांणै दूत विद्या निरवांणि।
रतन हर निज ता पद राज, विहांणै लूटि लिया गज वाज।
पचाळीय तागि लियां ध्रुवपांणि, विमालिनि घात सघात विहाणि।
रंमे छळ छेतरि सां ध्रमराव, इसौ चिहुंये मिळ कीध उपाव।
चियारै चौपडि खेलण चाव, रची मनि वात जुजठिळ राव।
कहै दुरजोधन एह कथन्न, विनै विध पडव पेम वचन्न।
अभै भड चोपडि खेलण आव, रजे म ताम जुजठिळ राव।
जुजठिळ कीध कुमति जिकोई, होवे सुजि हुवणहारी होई।
विधाता लेख लिख्या चत्रवेंण, तिसौ जळजोग मिळे दिन तेण।
लिख्या क्रमि लेख तिसी बुध लेय, वइठा चोपडि खेलण वेय।
रव तळि कैरव पाडव राव, भेळा मिळ दूत रंमै दोइ भाव।
जुजठळि पासि नही अरिजन, सहदेव[७] न भीम न कोइ सजन।
सुकनी माथै पारिख साखि, रव तळि राउ विहुं मिळ राखि।
कहै दुरजोधन एम कथन, सुणो ध्रम राजा ध्रम सुतन।
जुजठिळ हारै खेल जिकोई, वहै वनवास वदे विमलोई।
वरस दवादस श्रीवनवास, अकचन छोडि खवास अवास।
जुजठळि नाहि न भाखे जीह, दुरमति प्रापति थी तिण दीह।
हू वाळ मडे वे होड-होडि, किया मनरथ मनोरथ कोडि।
दुजोवण कूड़ रमै रस दाखि, सूकनी[८] कूडी पूरै साख।
जुजठिळ जीपै खेल जिकोई, तवै दुरजोधन जीता तोई।
सुकनी वाद वदै वह सद, जुजठिळ हारविया जन पद।
हुई जुजठिळा माथै हेळ, खिलै दुरजोधन जीता खेल।
जुजठिळ राउ दजोवण जीत, किया पंचाळीय चीर पुनीत।
पथारी आयौ राव पळोयि, जुजठलि वैठा हेठौ जोइ।
गाढौ दरजोधन काढै गात, छत्रपति छाह वैराजा छात्र।
दुजोवण रूप हुयौ तै दीह, जपै[९] जिम आवै नावै जीह।

७—सदेव, ८—सूपनी, ९—मिमै।

जुजठळि राउ राज थळ जोइ, धणी धण खोइ खड़ा मुख धोइ।
हरू नर तन जनपद हारि, बैठा क्यां काह हिमें[९] दरबारि।
चजो निज पास भुजो वनवास, अकचन डूगर जास अवास।
चही पथि लागै वारो बार, बइठा कासु वधे बार।
हासे रिम हाथो ताळी होइ, पंचाळी माथे मीट पळोइ।
कहै दुरजोधन एम कथन, दुरग दुबाहा दूसासन।
जुजठळि राउ तणै घरि जाउ, अठै पचाळी पाकडि आउ।
हसी पंचालीय पूजवि हास, कुभाखति पूछाँ वैण विकास।
दुसासन ऊठे ताम दुरति, करे तसलीम करेवा क्रित।
मलपे राज महला माहि, चले मुख चख पंचाळी चाहि।
दुसासण मुख पंचाळी देखि, विळकुळि उठी ताम विसेख।
निरमळ लेकरि गंगा नीर, वधे मुख वाणि वदती वीर।
दुसासण गाळि हिये चढ़ि दिद्ध, करगहि केस अक्रषण किद्ध।
पचाळीय पेटि विरट पडेह, चद्राइण पाणि विवांण चड़ेह।
भई भैभीत भयौ चित भ्रम, किसी दिसीया कुण पाप करम।
मोरो उपराव किसो इळ माहि, दइव तणै इम आयौ दाइ।
पंचाळी पाकड़ि[१०] वांह पगार, वळे उणिहीज पगे उणि वार।
पंचाळीय केह करै विलपात, लगावत जात दुसासन लात।
सतीतन-नाभ वैसे सास, विसासो पडव पच विणास।
पंचाळी वात विचारि परोगि, अरजन भीम नही आरोगि।
अरिजन साजो नाही आज, इसीपरि मो सिर होत अवाज।
वदै पचाळीय दीन वचन, दुरातम देवर दुसासन।
विना उपराध विरोध मि वीर, किसु करया तैं वैण कंठीर।
दुसासन वेण विषे वल देय, लिये जिमदूत चल्यो-जम लेय।
दुळे दोड रांणीव "आमुय धार, वेवटै डोरोय मझ वाजारि।
सदा सुभवतीय सीत-सुरख, महा पनवंतीय पालर मुख।
मुखे गळवती आदि महेस, पुळी परिहथि वजार प्रवेस।

१०—पापाकड़ि।

वाजारीय लोक हजार विच्यारि, हुवा हेक कौगति देखणहार।
वदै नर एम सिको विसलोय, हरीहर असीय केण न होय।
पंचाळीय लार लगै अरणपार, करै नर नारीय हाहाकार।
अखत्र अध्रम वडो उतपात, वडीयणिचंत अछाजति वात।
चद्राणिण पाकडीयां परि चोर, जुलमीय लेह चल्यो करि जोर।
पंचाळी माथै हाथ पसारि, दुसासन ल्यायो राज दुयारि।
पथारीय आयो वाह पळोइ हैरान पथारी सोरीय होइ।
मोटा मडळीक पथारीय माहि, चवै मुख आहि इसीपरि चाहि।
जुजटिळ भीम अनै अरिजन, निहाळै नीचा ढाकि नैयन्न।
पितामहि भीपम द्रोण पळोइ, ढंढाळै खोणि खत्रीवट खोइ।
करै मुख झखो ताम करन,.....................................।
करै हाकार भला करतार, ...।
सती दुसासन सगठ साहि, मरोडै मूंछ पथारीय मांहि।
सजोधन राउ कहै दिन साइ, पधारीय पचाळी पन पाइ।
घण सुरही ताय सोचि घड़ीय, चद्राणिण खोळै आइ चडीय।
तुहारै खोळै मेलै ताळ, चड़ेसी भीम गदा चडाळ।
दुजोवण देवर खवरदार, गमै तिम वोल न वोल गिमार।
भणै जग तात वडेरो भ्रात, मंगणेजै भोजाई जिम मात।
मोरै नह पंच भ्रतारीय माइ, सती गघारीय जगि सराइ।
पंचाळीय आज इसेपर जाइ, पुजा वह प्रांमिस जीभ पसाइ।
विमासण छोड़ि दुसासण वीर, चंद्राणिण काढ़ि कहा तम चीर।
वडा रजपूत किसी हव वाणि, पंचाळीय पोढि इसे अविसाण।
वसत विसुति वेगा कर वाहि, मोरै फुरमाणि पथारीय माहि।
हुयो दुरजोधन एम हुकम, हजूरिज हुंता एह स हम।
वदै दूसासण वारौवार, पचाळीय पलव छांडि पियार।
सिर घट घूंघट घट सरम, हमै पट ओढत जोत महंम।
अरिजन भीम तणौ आसारि, न छूटिस नारिस अंखि निवारि।
जुजठिळ सार लिगार म जोइ, हिमै करतार न आडो होइ।

कहां करतार सकूड़ म कथि, हिमै इण ताळ चड़ी इण हथि ।
जपै दुसासन होइ जिकोइ, सभालेय उपरि सापर सोइ ।
अंमीरां ऊपरि छै धुरि आज, रवि तळि एक अछै व्रिजराज ।
अछै व्रिजराज भगत अधीस, विसव आधार विसवा वीस[११] ।
उवारै तुझ इसौ कुण आज, रामां थळ छोड़ि गियौ व्रिजराज ।
दुनी सोहि देखै धोळेइ दीह, बीहावै अबल एह अबीह ।
पचाळीय आकुळ व्याकुळ पांणि, रूठौ दुसमण दजोअण रांण ।
गमे पति वैठा धीण गगेव, देखै सिर ऊपर सूरिज देव ।
हुवंता देखि सती परि होल, हुयौ हथणापुर हालकहोल ।
पचाळीय देखे एहा पार, विखो[१२] आइ वणे इण वार ।
विणठो दाउ हमैं विसलोइ, हरी काइ प्राण मुगति न होइ ।
प्रमु कीय पारथ भीम पचार, हथौहथि दीध जिन्हा हथिआर ।
कहै पचाळीय काह करेस, दमोदर मदर ओखामडळ देस ।
हुरमति इजति रखणहार, विसंभर वेग लडो इण वार ।
अविसर हाजिर नाहीय आज, रुखावर वेग लडो विजराज ।
करै कुण सार पखै करतार, विसन अधार जिसी तो वार ।
पंचाळीय जपै जीवन प्रांण, अहो प्रम तुझ तणा अविसाण ।
निसु ग रखे लज लोपै नाथ, सुता सिर ऊभा सामि सनाथ ।
रावा त्रिभुवन छपना राउ, अम्हीणे ऊपरि सापरि आउ ।
पथारीय देखै देखै पथ, हुई हव कथ-अकथा हथ ।
धरै कहि केम पंचाळीय धीर, विलगीय चीर दुजोवण वीर ।
पंचाळी खालीय पडव पाथ, अनाथ हुई हुं नाथ अनाथ ।
सुता सरणागति साम सरीर, विसभर वाहर धारय वीर ।
अम्हां अवळा वळ तोरो आज, रहै निज लाज सोतो विजराज ।
निरवळ नारि पुकारै नाथ, सदुखा साद सुणे ससमाथ ।
समै तिण सूतो सेझ संमारि, मुकंद मुरारि समद मझारि ।
गोमां उपकंठ समदा गांम, सुतौ श्रीय सु दरि मिंदरि सामि ।

११—ईस, १२—विमो ।

विसन विसव तणौ विसतार, नीरोतरी सूतो नीद्र निवार।
पचाळीय लोचन लोचन लोई, हुई अति आतुरि अै परि होई।
हुऔ अति आकुळ व्याकुळ हंस, वेसासो नायो कस विघंस।
पड अति अंखीय असुय पात, विमासत जात अजोचत वात।
वदे लोचतीय लोचन वाम, नाराइण निगण तिगुण नाम।
दमोदर सुदर दीन दयाळ, गदाधर गोवर नद गुवाळ।
वईकंठ धाम विषै जगवास, पिता महा नाभ पदम प्रकास।
हरी हरिणख विडारण हार, सखासुर मारण वेद सकार।
विरोलण सायर आदि विसन, रांमा रभ लेवण लंभ रतन।
नरसिंघ भारीम्र वामण नाम, किया पहिलाद किता सुभ काम।
अहो दुजराज प्रताप असख, सहसारजण भजण सख।
रवी रुघवस तणा रवि रांम, विधांसण कुंभ जिसा वरियाम।
विधांसण रांमण लक वरीस, अजोध्या नाथ भगत आधीस।
हिण्यो कपि वालि सुग्रीव हकारि, वडा गिर तारण वघण वारि।
जिनै ध्रुय वालण जीपण जग, नवै ग्रह छोड़वणा निवळग।
निरगुण अगण खेलण नद, चिरति अंणकल गोकळ चद।
सकोमळ कोमळ लज्ज सरोर, विनोदीय व्रम कमोदीय वीर।
वळिभद वीर महाबळि वंत, अगासुर काळ वगासुर अंत।
हरी सगठासुर भजणहार, पलंव पहारण ठीक पहार।
वडा सुरसइ पछाड़ण वोमि, भुजां वळि पाड़ण ताड़ण भोमि।
विडारण केसीय कंस विडार, भुजोनीय भोमि उतारण भार।
विंद्रावन पावन लील विलास, रितपति रंमण मडण रास।
कळा निज नाथ क्रिपानिध कांन, भला भगवत भला भगवान।
भला भगवत भगतां भीर, गिनाणद मोखण ग्यान गहीर।
भला थिर थापण ध्रुह भगत, पिता पदमन असख प्रवित।
भला गज मोखण लछी भ्रतार, हरी पैहलाज उधारण हार।
उधारण हार अगे अंबरीख, सांई दुरसा [?] देवण सीख।
वळे अवतारी आदि वराह, मही दाव डोहण ग्री मुख माहि।

भला कळिपतर चुतरभुज, विचब्रण रखरण लज्या व्रिज ।
अगे तैं इंदर ग्रब उतारि, एकरा गोकळ गाम उवारि ।
वळे छ्ळ गोकळ वीजोय वार, हथौहथ पावक पीवण हार ।
वळे नद नदनतें नंद वालि, देवा तनयां विह देव दिखाळि ।
वळे लछ वेळा लीला व्रम, वळे[13] देवा तन दाखिस व्रंम ।
वाणासर हंदो छेदें बाह, त्रईकम देव स दीठे ताह ।
दीठौ पच पडव देवातन, जु तैं लाखा ग्रहि कीध जतन ।
देवातन देव सदामाव दाखि, सुरति संमति भरें तैं साख ।
तुहारौ देव स देवातन, जसौदा दीठौ जग जीवन ।
देवकीनद तणै दरिवारि, मुरपुर दीठा मुख मझारि ।
किठीग्यो मोरी वार किसन, तुहारोइ देव स देवातन ।
वळे ले दळ देव तुहारीय वार, किसूं सुखि सूतोइ नीद करार ।
निरंतर अतरजांमी नाथ, सरोतर वात नही समराथ ।
विसमीय वार अछै वळिवीर, चंडाळ विलगै चोटीय चोर ।
सुतौ की जागि हमै घंणसाम, करमि यकारां आविस काम ।
रटतांइ पचाळीय विजराज, इसौ सुणियौ भरि नीद अवाज ।
समै तिण जगे कन छछोह, सतावीय उठे लज्ज समोह ।
सेझसण हुंनाय सामि सनाथ, हुया हरि ठाइ नीछटि हाथ ।
कियौ हाकार विवारें किसन, महा हुइ आकुळ व्याकुळ मंन ।
रामा कहितास खमा विजराज, भए अति आतुर चातुर भाज ।
पचाळीय भीड पडी पैछाणि, पलंग तजी तद सारगप्रांण ।
घरे मिन सौच तजे मन घाम, तजे कमळा कमळापति ताम ।
इसा हरि आतुरि आतुरि ऊति, पुळे पंखराउ विलगा पूठि ।
लिखमीय भुलि गई घस लोई, किठी गौ नाथ निरंतर कोई ।
निकदर वीरोय नाथ निरत, कलपति सांमा सौच करंति ।
चडे नन चद दुडदोइ चख, इसा हरि धाया आप अलख ।
की जां मगन पग न कोई, विमासणि गोपि करे विसलोई ।

१३—वगे ।

हुई वह लछीय हारोहार, विमाणसण गोपि करै तिण वार ।
निकु गुरडासण बैठा नाथ, सुखासण रेवत रथ समाथ ।
पयादोइ नगै पाउ परम, वहै अति आतुर चातुर ब्रम ।
विमाळ न कीध न ताळ विमाळ, चत्रभुज धायो छूटी चाल ।
खगेसुर छेतरियौ पग खेह, निरंतर धायो एम नरेह ।
वदा तांई वैण किती एक वार, आयौ हथिणापुर पंथ अयारि ।
कुसमथळी हथणापुर केथि, तईकम आइ पोहतो तेथि ।
पीतंवर धारीय चकर पाण, सवे अटपटीय पाघ सुहांण ।
महोरति आंखि तणै अध माहि, आपांणांय दीध दीदार स आइ ।
पचाळीय दीध दीदार प्रिथम, परै करि धीरज दीध परंम ।
दीदार स पच पडवा दीध, क्रिपा निज नाथ क्रिपा वह कीध ।
दजोवण देखै नाहि दयाळ, छभा विच ऊभा कान्ह छोगाळ ।
निकु दुसासन देखै नाथ, समै विच ऊभा सामि समाथ ।
वदै दरजोवन एम विसेख, दुसासन काह रह्यो हव देखि ।
पचाळीय पलवि छोडि पलीत, देखै पच पडव देव दईत ।
मोरै मुख आगळि देव मझारि, निरखै लोक नगी करि नारि ।
निरखै लोग लगै नख चख महा सहि सूरति सुंदरि मुख ।
अजाई ताई मुझ अछेह, न भागोइ नीधक छाती नेह ।
वदु ताइ वैण किती एक वार, धरे सोइ चीर सरीरां धार ।
नवौ तै माहि वळे नवलग, रुळै पग लग सपोत सुरंग ।
न दीसै चख न मुख न नख, सती मन माहि हुयौ वह सुख ।
हुया हरि लज्या रखणहार, किसनइ मन प्रसंन करार ।
दुसासन हाथ पसारै दोई, वळै तै चीर लिया विसलोई ।
वळे वप ताईय होइ विभति, भलै रग पोति भलेरीय भंति ।
चद्राणिणि नख सिखा लग चीर, सोहै हंज पख सरीख सरीर ।
सोई दुसासन सगठ साह, वहादर खाचि लियौ वळि बाह ।
वळै तै माहि पसाइ विसन, वणे वप अंबर मेघ वरन ।
वरी करि कढेइ वारोवार, हथोहथि पूरेय पूरणहार ।

निनाणंय सो लग चीर नरेह, लिया दुसासण दाव लहेह ।
अजाँ पचाळीय गूँघट ओट, करै हरि रखीय कपड़ कोट ।
कहै दुसासण कारण कोइ, अजा ही नगीय नारि न होइ ।
तंणौ घणसाम वणै वप ताण, इसौ निज नाथ तणौ अवसांण ।
जंण जंण साजण दूजण जोई, हुयौ दलगीर सगा गुर होई ।
मिजालस मंडीय माहो मांहि, चत्रभुज आयौ औसर चाहि ।
भगता भीड़ पड़ी तव भीर, सदानो आयो साम सरीर ।
कहै इम राजछभा सह कोई, हरी विण औ कुण कारण होई ।
लोपै कुळ कुण पचाळीय लाज, रहावण सामरथी विजराज ।
पचालीय चीर परम पसाई, अखूट अतूट हुआ इळ माहि ।
हुया दुसासन थाकिय हाथ, न थाकौ गंवीय गोकळनाथ ।
दजोवण दूरि स भूर सदत, कहै इम भीखम काल कयत ।
हमै घणियाइ हुईसै हद, सहसबळी बहसै वह सद ।
तिसौ छै पै कर नाखिस तोड़ि, मरघड़ नाखिस हाड मरोडि ।
दुसासन दूरि हिमै दुसमन, पितामहि भीखम ध्रोण प्रसन ।
भली जरणी कीय पारथ भेम, तवै तारीफ पितामह तेम ।
साचा सूं साचो सामि सुरत्त, विसंभर राखण संत वरत्त ।
सती चौ सत रहै रवि साखि, रहै जिम राखण हारै राखि ।
किसंनाइ जपै वाप किसन, भली परि राखीय त्रेण भवन ।
किसन किसना स्याहित किव, दजोवण मुख न जोवण दिव ।
भगता भीड पडी भगवान, किया नह अखीय आडा कांन्ह ।
किया नह अखिय आडा क्रग, जसोदानदन जीवन जग ।
देवकीय नदण दीनदयाळ, छभा छळ रखण कान्ह छोगाळ ।
पंचाळीय राखिय लाज परम, सवाई राखै तेम सरम ।
जंपै हरिदास अजंपाइ जाप, मोरी पति राखिय मां वाप ।

इति श्री छभा प्रव सपूर्णम्—

लिखत लालस हरिदास । वाचै तिणनै रांम रांम वाचिजो जी ।

। श्री । समत् १७७···मिती फागण वदी १० । श्री ।

पीरदान-लालस-ग्रन्थावली

अनुक्रमणिका



शब्द-कोष—

अ

अंकुर (६२)—अक्रूर ।

अंत (३६)—नाश ।

अंबर (४७)—आसमान ।

अंबरीप (६६)—राजा अम्बरीप । यह सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु की २८ वी पीढी मे हुआ था । यह परम वैष्णव था अत इसकी रक्षार्थ विष्णु के चक्र ने दुर्वासा ऋषि का पीछा किया था ।

अंम्हाना (६६)—मुझको, हमे ।

अई (३६, ४५, ६०)—अहो, अरे ।

अईयो (३५, ४५, १०२) —अरे ।

अकरम (२३, ४६, ६६)—अकर्म, पाप कर्म, दुष्कृत्य ।

अकरमी (४१)—अकर्मी ।

अकरूर (६०, ६१, ६२)—देखो 'अक्रूरिया', अक्रूर, श्वफलक और गोदिनी का पुत्र एक यादव ।

अकरूरि (६०)—देखो 'अक्रूरिया' ।

अकल (७१)—व्याकुल ।

अकलि (१००)—अक्ल, बुद्धि ।

अकाज (६६)—१ न किया जा सके ऐसा महान् और कठिन कार्य, २—विना कारण ।

अकिरिता (२७, ३८, ४२)—अकर्त्ता

अक्रम (३७, ५६, ७१)—अकर्म, पाप, दुष्कृत्य ।

अक्रुरिया (६०)—अक्रूर । एक यादव का नाम, लोक प्रसिद्धि के अनुसार यह श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव के भाई थे । कंस की सभा मे असम्मानित होकर रहने वाले व्यक्तियो मे इनका भी नाम है । परन्तु

इनके पिता का नाम तो श्वफलक था और इनकी माता का नाम गोदिनी जब कि वसुदेव के पिता का नाम देवमीढ और माता का नाम मारिपा था। संभव है दोनो निकट संबंधी और एक ही कुल के हो जिस से अक्रूर, कृष्ण के चाचा कहलाये।

अखंड (३५)—अटूट, अविच्छिन्न, पूरा।

अखियात (३०)—अद्भुत।

अगथि (५६)—अगस्त्य।

अगन (५१)—अग्नि।

अगम (३५, ३६)—अगम्य, जहाँ जहाँ पहुँचा न जा सके।

अगलैं (५४)—पूर्व के।

अगादि (४६)—पूर्व का।

अगासुर (४, १००)—अघ नाम का एक दैत्य जो कंस की खास मंडली का असुर सेनापति था तथा जिसे कृष्ण ने मारा था। इसे वकासुर और पूतना का छोटा भाई भी वतलाया जाता है।

अगासुरां (१०२)—अघासुर नामक असुर।

अगै (३५)—अगाडी, आगे।

अग्रंमुं (२८)—अगम, ईश्वर ?

अघ (५०, ७४)—पाप।

अघड (७७)—वह, जिसकी रचना न हुई हो।

अघासुर (५६)—अघ नामक असुर (राक्षस)

अचासुरा (१०२)—एक असुर।

अछती (१६)—गुप्त।

अछतो (३८)—गुप्त, गायब।

अछेद (४६)—अछेद्य।

अछेप (४, ४६)—अस्पृश्य, स्पर्श रहित।

अजपा (३४, ३५)—वह जाप जिस के मूलमंत्र हंस का उच्चारण श्वास प्रति श्वास निरन्तर होता रहता हो, अजपा, हंस मंत्र।

अजपा (४५)—उच्चारण न किया जाने वाला तान्त्रिक मंत्र।

अजमाल (१६)—अजमाल नाम-धारी।

अजरी (६४)—चंचल, उत्पात करने वाली।

अजरौ (४३, ७०)—ब्रह्मा (अज) का।

अजाच (४०)—अयाचक।

अजामेल (७४)—कन्नौज निवासी एक ब्राह्मण जिन्होने आ-जीवन न तो कोई पुण्य कार्य

किया था और न ईश्वराराधना ही।

अजायौ (२)— अजातः, अजन्मा।

अजीत (३५)—वह, जिसे कोई विजय नही कर सके, अजयी।

अजीता (९३)—अजयी।

अजुआळ (९७)—उज्ज्वल (प्रकाश) (१०२)—उज्ज्वल करिए, वश को उज्ज्वल करने वाला।

अजुआळा (९९)—उज्ज्वल करने वाला।

अजू आळिया (७९)—उज्ज्वल किये।

अजे (२९)—अभी तक।

अटल (३७)—दृढ।

अठै (४१)—यहाँ।

अडियौ (२९)—अट गया, भिडा।

अड्डर (१२, ३७)—जवरदस्त, वलशाली।

अणकल (७, ५४)—समर्थ शक्तिशाली वीर।

अण (अणजीव ?) (४०)—नही। (४९)—विना, रहित।

अणकल (२७)—समर्थ, शक्तिशाली।

अणघड (९१)—अनगढ।

अणजायौ (४५)—अजन्मा।

अणयाह (९८)—जिसकी कोई सीमा न हो, अपार।

अणथाह (५५)—अथाह, अपार।

अणपार (१४, २८, ३५, ५२)—अपार, असीम।

अणवूझ (६१)—अल्पज्ञ, अज्ञ, अनजान

अणभंग (७)—वह जो कभी नाश न हो

अणमोल (४६)—अमूल्य।

अणरूप (२७, ३५)—अरूप, विना रूप का।

अणवर (१३, ६४)—विवाह के अवसर पर दुलहा अथवा दुलहिन के साथ रहने वाला सखा या सखी।

अणवौ (३१)—'लाना' का प्रेरणार्थक रूप।

अणसही (७७)—अनुचित।

अतरी (२१)—ज्ञानी।

अतळीवळ (६६)—अतुलित, वलशाली

अताग (८)—त्याग रहित अथवा अत्याज्य।

अति (४२)—अत्यन्त।

अतीत (३५)—निर्लेप, विपम, पृथक।

अत्र (५०)—यहाँ।

अत्रीरौ (दीकरौ) (९६)—अत्रि ऋपि का पुत्र दत्तात्रेय ऋपि।

अथरवण (३१)—अथर्ववेद।

अयाह (३६, ७४, ९८)—अपार, असीम।

अदल (२७)—न्यायशील।

अदला (१०३)—(अदलादेव)—न्यायकर्त्ता।

अद्यान (५०)—उदासीन ।

अध (४५, ८६)—नीचे ।

अधक (५६)—अधिक ।

अधकि (२३)—अधिक ।

अधम्म (४०)—अधर्म, पाप ।

अधिका (३८)—अधिक ।

अधिकि (२०)—अधिक ।

अधिकेरा (३८)—विशेष, अधिक ।

अधिकौ (२५, ३६, ४७, ७०) अधिक,

अध्रम (४६)—अधर्म ।

अनड (३०, ४८, ५१)—पर्वत ।

अनमा (४० —अन्य मे ।

अनरज (३०)—अनिरुद्ध, प्रद्युम्न के पुत्र और श्रीकृष्ण के पौत्र ।

अनसोड्या (६६)—अत्रि ऋषि की पत्नी अनसूया ।

अना (४३)—और ।

अनिलि (५०)—अनिल, हवा ।

अनील (३६) (अलील)—लीला रहित, रंग ?

अनु (७६)—१. अग्र, २ अन्य ।

अनूप (३८, ५०, ७४)—अनुपम, अद्भुत ।

अने (४६)—और ।

अनेक (६०)—बहुत ।

अनै (२६, ३१, ३८, ४३, ४८, ४६, ५३, ६४)—और ।

आपां (८४)—आपन, आप, स्वयं ।

अपंपर (२३, ४६, ८८, ६६)—अपरपार, असीम, महान् ।

अपपरि (७१)—ईश्वर ।

अपराध (२३)—गुनाह ।

अपरेत (४६)—निर्मोही ।

अपार (२३)—असीम ।

अप्रवीत (६४)—अपवित्र ।

अबखौ (१०)—कठिन, दुरूह ।

अबदाळ (१६)—महान उदार । मुसलमानो द्वारा माने जाने वाले महान ईश्वर भक्त जिनकी सख्या तीस मानी जाती है—उसी तात्पर्य से उपमित यह शब्द बना है ।

अबाथ (७८)—बिना बाहु ।

अबाहं (२७)—बिना भुजा का ।

अभिंगि (८४)—अभग, वीर ।

अभियागत (५)—(स० अभ्यागत), सम्मुख आया हुआ ।

अभेद (४६)—अभेद्य ।

अभ्यागत (७०)—अतिथि, संन्यासी, फकीर ।

अमर (३८)—देवता ।

अमरण (८०)—अमरत्व ।

अमरां (२०)—देवताओं ।

अमां (८६)—हमारी ।

अमाटैं (६६)—हमारे यहाँ ।

अमूल (४६)—निर्मूल, आदि रहित ।

अम्य (१०३)—हमारी।
अम्हा (१६)—हमरे, मेरे।
अम्हाना (७)—हमको।
अम्हारा (६५)—मेरा, हमारा।
अम्हारै (७)—हमारे।
अयाण (६६, ७०)—अज्ञानी, अल्पज्ञ, अज्ञ।
अयिरल (३४)—धारा-प्रवाह।
अरक (४३, ५२)—सूर्य, अर्क।
अरजाँ (३१)—पुकार प्रार्थनाएँ।
अरण (६१)—(स० अरण्य), जंगल, सन्यासियो का एक भेद।
अरथ (३५, ३८)—अर्थ।
अरदास (१५, ८७)—प्रार्थना, अर्ज-दाश्त।
अरसु (२६)—ढीला पडना या करना देरी लगना।
अरि (३६, ६२)—शत्रु।
अरिजण (५, ३४, ४४, ६२, ६८, ७१, ६७)—अर्जुन।
अरिहंत (४)—वीतराग, जिन।
(३३)—ईश्वर, अरिघ्न, शत्रुविनाशक।
(४६) अर्हंत (भगवान जैन)
अरेल (४६)—नही जीता जा सकने वाला। अजित
अलख (२३)—अलक्ष्य, ईश्वर।
अळगा (५३)—दूर।
अळगो (५२, ७०)—दूर, पृथक।
अलज (६८)—लज्जापहरण।
अला (१०, १०३)—ईश्वर, अल्लाह।
अलाह (३, ७, ७४, ६५, ६६)—ईश्वर, परमात्मा, खुदा।
अलेख (७, ३४, ३६, ६६)—अलक्ष्य, अपार।
अलोक (५०)—१ जो दिखाई न पडे, २. वह स्थान जहाँ कोई आदमी न हो, ३. ऐसा जीव जो मरने के बाद अन्य किसी लोक मे न जाय, ४. मनुष्यो का अभाव।
अल्ला (८६)—ईश्वर।
अवतार (३६, ४२)—विष्णु का संसार मे शरीर धारण करना अथवा पुराणानुसार किसी देव विशेष का मनुष्य शरीर धारण करना।
अवतरियो (६३)—अवतार लिया।
अवदाळ (१७)—देखो–'अवदाळ'
अवर (३६)—अपर, अन्य।
अवरण (४६)—वर्ण या रग रहित।
अवरन (७, २७)—वह जिसका कोई रग न हो, अवर्ण।
अवल (६२)—सर्वश्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, अव्वल।
अवलो (४१)—वाकुरा।

अविगत (३४, ४३, ५३)—वह जिसकी गति (लीला) का पार पाया न जा सके।
अविणास (२७) – वह जिसका नाश न हो, अविनाशी।
अविणास (४६, ५०, १०३)–अविनाश
अविणासी (२६)—अविनासी।
अविद्या (३५)—अज्ञान, मूर्खता।
अविधूत (५४, ६६)–अवधूत, सन्यासी, मस्त फकीर।
अविसि (७८)—अवश्य।
अविल (३५, ५२)—अखड।
अविलि (७४, ८०)—धारा प्रवाह।
अष्टंग (४३)—अष्टाग।
असख (६६)—असंख्य।
असख (असंख) (४७)—असख्य।
असटंग (३५)—अष्टाङ्ग।
असट-कमल (१०१)—अष्ट कमल। योग के षड्कमल तो हिन्दी मे भी मिलते हैं परन्तु राजस्थानी मे आठ हैं।
असतूल (४६)—स्थूल।
असन (७०)—भोजन करना, भोगना।
असमेध (१०२)—अश्वमेध यज्ञ।
असरण (४०)—जिसका कोई शरण नही।
असरा (१२, ८७, १००)—असुर, राक्षस।
असराण (८४, ८७)—असुर, दैत्य।
असरै (१६)—असुर, राक्षस।
असीळनि (४६)—अशीलता।
असोक (५७)—अशोक वृक्ष।
अहर (५१)-अधर, (नीचे का) होठ।
अहल (६८)—हिलना, कांपना, जोर पडना।
अहारिणि (१६)—आहार करने वाली
अहि (२०, ३६, ३८, ४६, ६०, ७५)—नाग, सर्प।
अहिकार (४२, ४३) – अहकार।
अहिनाण (१०२)—चिन्ह, निशान।
अहिवेलि (८६) – नागवेल।
अहिला (५५, ६७, १०३)—गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या।
अहिल्या (२, ४४, ८१, ८८)—गौतम ऋपि की पत्नी अहिल्या।
अही (५३)—शेषनाग।
अहीर (६३)—(सं० आभीर), वह जाति जो गाएँ, भैंमे रखती है तथा उनका दूध वेचने का काम करती है, ग्वाला।
अहीरिया (६०)—अहीर का तुच्छता-सूचक शब्द।
अहे (३२)—यह, है।
अहो-निस (३)—रातदिन, अहर्निश।

आ

आगणै (२६)—आगन, प्राङ्गन।
आगळी (८६)—अगुली।

आण (५) —आज्ञा, शपथ ।
(३५)—ला
(६४, ६८, १०२)—शपथ, आज्ञा ।
आणि (३५)—लाकर ।
(३७)—लाओ ।
आणी (३०)—लाया
आंणे (२६)—लाता है ।
आणी (१२, ३१)—लाओ ।
आसु (२१)—इनसे, इसलिए ।
आहचै (३०, ५३)—शीघ्रता, त्वरा ।
आईनाथ (१६)—देवी दुर्गा ।
आउच (२६, ३६, ४२)—आयुध, अस्त्र-शस्त्र ।
आकरी (१२)—भयंकर, जबरदस्त ।
आखर (२३, ७४)—अक्षर, वर्ण ।
आखा (१७)—कहे
(३०)—कहता हूँ ।
आखियौ (६८, ७१)—कहा
आखीयौ (३८)—कहा ।
आखै (२५)—कहता है ।
आग्राजै (१६)—गर्जना करती है ।
आघी (१५)—दूर, पृथक ।
(८३)—सामने, आगे ।
आच (६१)—हाथ
आचार (४१)—व्यवहार, चलन ।
आछा (६२, ७१)—अच्छे, श्रेष्ठ ।
आछै (१०३)—(सं० अस्ति) है ।
आछौ (२६, १०३)—अच्छा, उत्तम ।
आठइ (३४)—आठ ही ।
आडा (८७ —पडा ।
आण (७४)—शपथ ।
आतिमा (४२, १००)—आत्मा ।
आतिमाराम (७८)—आत्मा ।
आदमा (३१)—आदम ।
आदि सकति (२०)—आद्या शक्ति ।
आधार (४६)—सहारा, आश्रय ।
आनिंहि (४८)—अन्य नही ।
आपना (४८)—आत्मन्, अपना ।
(७५)—आपको ।
आपमा (४७)—आप मे ।
आपरा (३६)—आपके ।
(६६)—अपने ।
(१०३)—अपने ।
आपरै (३२)—अपने, निज के ।
आपरौ (१०१)—आपका ।
आपह (४४)—अपने ।
आपि (३७)—स्वय, दीजिए ।
आपिया (७८)—दे दिये ।
आपियौ (५६)—दिया ।
आपै (२, ३२, १००)—अर्पित करता है, देता है ।
आफे (३)—अपने आप, स्वयमेव ।
आभरण (८४)—पालन-पोषण, परवरिश ।
आया (१०३)—आये ।

आराध (२३, २६)—आराधना, प्रार्थना।
आराधा (२१)—प्रार्थनाएं।
आराधियौ (३४)—आराधना की।
आरावीं (२१) आराधना की।
आरावै (९७)—आराधना करता है।
आराहिया (८८)—आराधना की।
आराहै (२६)—आराधना करते हैं।
आराह्यौ (२)—आराधना की।
आरोगिजै (१७)—भोजन कीजिये।
आलम (६, १०, ७१)—संसार, दुनिया, विश्व।
११, ८९, ९०)—ईश्वर, प्रभु।
आलमडा (१४)—ईश्वर, आलम।
आलमा ८४, ९१, ९६)—ईश्वर।
आलमौ (९१)—ईश्वर।
आळा (९९)—के
आलिमसाह (१०३)—शिव।
आलेभि (५५)—विचार।
आवास (३६)—निवास।
आवि (५६)—आकर।
आविस्यैं (९८)—आयेंगे।
आविस्यै (९८, ९९)—आयेंगे।
आवी (११)—आई।
(१०२)—आई।
आस (२३, ३६, २७, ९४)—आशा।
आसरौ (१०)—आश्रय, सहारा।
आहणौ (७७)—मार डालता है, मारता है।
आहुडिया (६५)—भिड़े, युद्ध किया।
आहुडे (६६, ८६)—भिडते हैं।

इ

इन्द (६, ३६, ४३)—इन्द्र।
इन्दजीत (५७, ८२)—इन्द्र को जीतने वाला रावणपुत्र महावली मेघनाद, इन्द्रजीत।
इन्दतणा (५७)—इन्द्र के।
इन्दरा (७२, ७८, ८७)—इन्द्र का।
इन्दरै (९५)—इन्द्र।
इन्दि (२८, ४३, ४९, ७८)—इन्द्र।
इन्द्र (८३)—देवराज, इन्द्र।
इम्वरीक (२)—सूर्यवंशी एक पौराणिक राजा, अम्वरीप।
इम्विरीक (४४) अयोध्या का एक सूर्यवंशी राजा, अम्वरीप।
इ मिया (१९)—उमा।
इ हि (८५)—यही।
इ (१००)—ही, निश्चयार्थ सूचक अव्यय, ही।
इआरै (१४)—इनके।
इग्यारसि (१०२)—एकादशी।
इण (५३, १०२)—इस।
इणि (४२, ६७, ७५, ७७, ८२)—इस।
इणि परि (२३)—इस पर।
इणिरौ (११, ७१)—इसका।
इतरा (१०, ५०)—इतने।
इतरी (२०, ३९)—इतरी।
इतरौ (३९, ४०)—इतना।

इता (८४)—इतने ।
इतौ (४५, ७०, ७३, ७९, ९३)—इतना ।
इधक (५९)—अधिक ।
इधकि (५३)—अधिक तेज ।
इना (५०)—इतने ?, इला, पृथ्वी ।
इनि (३८, ४८)—अन्य ।
इनिआउ (६९)—अन्याय ।
इनिलि (४३)—अनिल, हवा ।
इनील (४५)—अनिल ।
इनेक (३, २४, ३६, ४१, १००)—अनेक ।
इनोइति (७८)—इनोइनि = अन्योन्य ।
इम (४०)—इस प्रकार ।
इमि (२०, ३८, ६०)—इस प्रकार ।
इमिया (६५)—उमा, पार्वती ।
इमिया (१३)—उमा, पार्वती ।
इमिरित (८६)—अमृत, सुधा ।
इम्यां (२३)—उमा, पार्वती ।
इम्या (६७)—उमा, पार्वती ।
इया (५४)—इनको ।
इयै (५, ६)—इस ।
इयैरा (७१)—इसके ।
इळ (५, ९०)—इला पृथ्वी ।
इळा (५०, ५२, ६२, ६३, ६४)—पृथ्वी, इला ।
इळि (६७, ८७)—पृथ्वी इला ।
इसाणद (१)—ईश्वरदास बारहठ ।
इसौ (४५, ४७, ४८, ५३, ५७, ६२, ६९, ७१, ७८, १०२)—ऐसा ।
इहडा (२)—ऐसे ।
इहडी (४२)—ऐसी ।
इहडौ (५३)—ऐसा ।
इहिकार (४९)—अहंकार ।
इहिडी (४३)—ऐसी ।
इहिला (६)—गौतम ऋषि की पत्नी का नाम, अहिल्या ।

ई

ईद (३९)—इन्द्र ।
ई (१००)—भी ।
ईखै (६३)—देखती है ।
ईखौ (४२)—देखिये, देखें ।
ईता (२१)—इतनी ।
ईयै (६५)—इस ।
ईस (६४)—महादेव, शिव ।
ईसर (३८, ४४, ६१, ७१, ७२)—हरिरस के रचयिता ईश्वरदास बारहठ ।
ईसर (६४)—ईश्वर ।
ईसरजी (७४)—ईश्वर, परमात्मा ।
ईसवर (४५)—ईश्वर ।
ईसा (९०)—ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध महात्मा ईसा ।
ईसाणद (७४, ९७)—बारहठ ईश्वरदास ।

उ

उआरणा (३६, ६७)—वलैया, न्यौछावर।

उकति (२३)—उक्ति।

उकत्ति (३४)—उक्ति।

उखिरणै (२८) उठाकर।

उगरै (६२)—उग्रसेन, कंस का पिता।

उग्रसेन (५, ६६)—कंस का पिता, मथुरा का राजा।

उचरा (३८)—उच्चारण करें।

उचार (७१)—उच्चारण, जप।

उचारे (४५)—उच्चारण किया, उच्चारण करके।

उछाळी (१४)—दो, वितरण करो।

उछाह (६)—उत्सव।

उजाळ (६८)—उज्ज्वल।

उभाटै (५८)—उछालते, बांटते।

उठाडिया (८४)—उठाये, उत्पन्न किए

उठै (४१)—वहाँ।

उडाडै (४२)—उडाड देता है।

उण (३६)—उस।

उणहार (३५)—सूरत।

उणि (६, ४८)—उस।

उणिहारि (३२)—समान।

उतामळी (५५)—शीघ्रता पूर्वक।

उतारिसै (१२, ६६)—उतारेगा, मिटा देंगे।

उतारै (२०)—आरती करता है।
(३२)—दूर करे।

उतिमि (३८, ४५)—उत्तम, श्रेष्ठ।

उत्तिम (२८)—उत्तम, श्रेष्ठ।

उथापि (६६)—उथापन करके, उन्मूलन करके।

उथापै (१००)—उन्मूलन करता है।

उदाळण (६२)—उन्मूलन करने को।

उदास (३५, ४६)—उदासीन, विरक्त

उदासी (६०)—विरक्त, उदासीन।

उधरिया (२, ६८, १००)—उद्धार किया, मोक्ष दे दी।

उधरै (३६)—उद्धार किए, उद्धार करता है।

उधार (३६)—उद्धार।

उधारण (१, ५, १००)—उद्धार करने को।

उधारी (५८)—उद्धार किया।

उधारै (१८)—उद्धार कर देना।
(२६)—उद्धार करता है।
(५६, ६६)—उद्धार किया।

उधिरिसै (१०२)—उद्धार होगा।

उवेडिया (१०३)—विदीर्ण कर डाले, मार डाले।

उवेड़िसै (१२)—उन्मूलन करेगा, उखाड देगा।

उवेडै (४७)—उवेडता है।

उपजै (४३)—उत्पन्न होते हैं।

उपना (७४)—उत्पन्न।

उपराध (३५)—अपराध।

अपराधा (६७)—अपराध, दोष।

उपरि (४३)—ऊपर, पर ।
उपाग्रण (७६)—उत्पन्न करने को, उत्पन्न करने वाला ।
उपाइया (२०, ५२)—उत्पन्न किए ।
उपाईया (५०)—उत्पन्न किए ।
उपाडियौ (५८)—ऊपर उठा लिया ।
उपाडे (३०)—उठा लिया ।
उपाया (१६, २१, ४३, ५०, ५१)—उत्पन्न किये ।
उपायौ (४५)—उत्पन्न किया ।
उवारी (१०३)—रक्षा ।
उभै (८६)—उभय, दोनो ।
उयौ (४४)—वे ।
उर (४३)—हृदय, वक्षस्थल ।
उरळौ (२७, ४७, ७६)—चौडा, विस्तृत ।
उरा (११, ४६, ६०)—इस ओर ।
उरि (४३, ७६)—उर मे, वक्षस्थल मे, हृदय मे ।
उरी (६२)—यहाँ, समीप,
उलसै (४३)—प्रसन्न होता है, उलसित होता है ।
उलाळरा (६२)—उल्लसित करने वाला ।
उळाविजै (१०३)—गाइये । सुमिरण करिये ।
उळावै (६३)—भजन करे, सुमिरण करे ।
उवरै (४८)—वच गया, वच जाता है
उवारण (३३, ६७)—वलैया ।
उवारणा (४४, ४८)-वलैया, न्यौछावर
उसास (३६)—उच्छ्‌वास ।

ऊ

ऊंआ (५६)—उन ।
ऊंधौ (५७)—औधा, उलटा ।
ऊआ (७४)—उनकी ।
ऊए (४४)—वे ।
ऊखले (८३)—ऊखल मे ।
ऊगा (११)—उत्पन्न हुए ।
ऊग्रसेन (६०)—महा पापाचारी राजा कस के पिता उग्रसेन ।
ऊधा (६२)—उद्धव ।
ऊचरै (६१)—उच्चारण करते हैं ।
ऊडीसै (८४)—भारत के एक प्रान्त का नाम जहाँ भगवान वुद्ध का जन्म हुआ था, उडीसा ।
ऊथापिया (७८, ८७)—उन्मूलन कर दिये ।
ऊथापै (६३)—उन्मूलन किया ।
ऊधरा (३८)—उद्धार हो जावे ।
ऊधरिया (७४)—उद्धार कर दिये ।
ऊधव (४४)—उद्धव ।
ऊन्हो (४७)—उष्ण ।
ऊपनो (१०२)—उत्पन्न हुआ ।
ऊपर (६७)—ऊपर ।
ऊपरा (३१, ३२, ६३)—ऊपर ।
ऊपरा (३६, ४५)—ऊपर ।

ऊपरि (२०)—रक्षा, सहायता।
(३८, ४१, ४२, ४५)—ऊपर।
ऊपायण (८०)—उत्पन्न करने वाला।
ऊभ (१४)—उभय, दोनो।
ऊभैं (६१)—उभय, दो।
ऊभौ (११, १२)—खडा।
ऊलटा (८५)—उलट पडे, युद्धार्थ आक्रमण किया।
ऊलटै (५६)–उलटा, विलोम, विरुद्ध।

ए

ए (१५)—हे, यह, है।
(३१, ५६)—यह
एक (३७)—एक।
एकल-मल (२७)–ईश्वर का एक नाम।
एकलमल (४, ६८, ६४)—पारब्रह्म, विष्णु, सर्व शक्तिवान, अकेला ही कइयो से युद्ध करने वाला।
एकलमला (१०)–ईश्वर का एक नाम।
एकिण (३०, ४७)—एक।
एतलौ (४६)—इतना।
एतोज (४६)—इतना ही।
एतौ (४६)—इतना।
एथि (१६)—यहा।
एथीयैं (१३, १४, ६०)—यहाँ।
एम (३७, ५३, ६०)—इस प्रकार।
एरसा (८६)—ईर्ष्या।
एह (३, ३५, ४१, ४२, ४४, ४५, ४७, ६७, १०१, १०३)–यह, ये।
एही (८७)—यही।

ऐ

ऐ (६)—ये।
(६३)—यह
ऐनैं (८८)—और।
ऐसहि (६०)—ऐसे ही।
ऐह (५)—यह।

ओ

ओ (३)—अरे, वह।
ओखा (३०)—ऊषा—बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध को व्याही गई थी।
ओछडी (७६)—छोटा, तुच्छ।
ओछाह (६७)—उत्सव, हर्ष।
ओछेरी (४०)—लघु, छोटा।
ओण (७, २५)—चरण, पैर।
ओथि (३०)—वहा।
ओथी (३०)—वहाँ।
ओपम (४६)—शोभा देता है।
ओपि (५७)—शोभित होकर।
ओपियौ (५४, ५६)—शोभायमान हुआ।
ओपै (५३)—शोभा देते हैं।
(६०)—शोभित होता है।
(१०३,—शोभायमान होती है।
ओळखियै (२)—पहिचाना जाना।
ओळखियौ (३४)—पहिचान लिया, समझ लिया।
ओळखै (३५)—पहिचानता है।

ओळगै (६०, ६१)—स्तुति करता है (करते हैं)।

ओळभा (५८)—उपालंभ।

ओळिखिओ (६७)—पहिचान लिया।

औ

औ (३, १२, २६, ३४, ४२, ४५, ४६, ४६)—यह।

(६३, ८६)—अरे।

औछाह (६६)—उत्साह, हर्ष।

औयीऐ (७४)—वहाँ।

औद्रके (५२)—भयभीत हुए।

औळग (५६)—स्तुति, यशोगान।

औळ्गू (३)—स्तुति करूं, यश वर्णन करू।

क

कइ (८३)—क्या।

कटक (५४, ५६)—असुर, राक्षस, शठ

कटग (२२)—बाधक, विघ्नकर्ता।

कंठीर (६४)—सिंह (नृसिंहावतार)।

कंत (३६)—कांत, पति।

कंध (४)—स्कन्ध, कन्धा।

कंमरा (१६)—कौन।

कंस (३६, ६०, ६१, ६२, ६७, ७१, ८३)—मथुराधीश उग्रसेन का पुत्र और श्रीकृष्ण का मामा कंस, जिसे मारकर श्रीकृष्ण ने उसकी कैद से अपने माता-पिता को छुड़ाया था।

कंसवाळ (६६)—कंस के।

कंसार (१२)—एक प्रकार का व्यंजन-विशेष।

कसाळ (६६)—वाद्य-विशेष जो झाझ से बड़ा होता है।

कंसासुर (६०)—देखो 'कंस'।

कंसासुर (१०३)—देखो 'कंस'।

कंसि (८२)—देखो 'कंस'।

कछ (५२)—कच्छपावतार।

कजि (५१, ८२)—लिये

कट (४३)—कटि, कमर।

(६६)—नाश

कटक (६४, ७०, ८४, ८५, ६१)—सेना, दल, समूह।

कटकडी (१२)—सेना

कटके (६३)—कटक, दल।

कटग (६३)—सेना

कठण (२, ३५)—कठिन।

कठियाणी (१५)—काठियावाड प्रान्त में उत्पन्न स्त्री अथवा काठी जाति की स्त्री।

कठै (४१, ५०)—कहाँ।

कडकड (६१)—प्रहार की ध्वनि।

कडिडिसै (६६)—कडकडाहट की ध्वनि करते हुए टूटेंगे।

कडियाँ (८६)—कटि, कमर।

कडी (८४)—कटि, कमर।

कतियाणी (२२)—कल्प गोत्र मे उत्पन्न एक दुर्गा-कात्यायनी।

कतीआणी (१६)—देखो 'कतियाणी'

कद (६, ११ १६, ६४)—कव (६६)—कभी।

कदरो (८१)—कव का।

कदि (६४)—कव

कदे (६६)—कभी

कदेई (१०३)—कभी भी।

कनहिया (५८)—श्रीकृष्ण।

कना (४१)—न ही। (८६)—अथवा, और।

कना (४८)—पास (६५)—या, अथवा। (७८)—कव, क्यो नही।

कन्हईयै (८३)—श्रीकृष्ण।

कन्ही (५५)—पास।

कन्है (७३)—पास, निकट।

कन्हैया (३३)—श्रीकृष्ण।

कपटी (७०)—कपट (धोखा) करने वाला।

कपाळ (६१)—मस्तक से, शिर झुका कर।

कपि (६५)—वानर।

कपिल (३, ६, २८, ८२)—साख्य शास्त्र के प्रणेता एक ऋषि जिन्होने राजा सगर के साठ पुत्रो को भस्म कर दिया था। इन्हे विष्णु का पाँचवा अवतार भी मानते हैं।

कपिलि (२४, ३६, ५४)—कपिल मुनि

कमति (६६)—कमी।

कमध (५६)—कवध नामक असुर।

कमण (२६, ३५, ५२, ७२, ६३)—कैसे, कौन।

कमध (१६)—राठौड।

कमध (३६, १००)—कमल, पकज।

कमळा-कत (३६)—लक्ष्मीपति, विष्णु

कमळी (५४)—महादेव।

कमाणो (६६)—प्रिय पुत्र, कमाने वाला वेटा, कमाऊ।

कमाइण (५)—१. कमाने के लिये २. मारने के लिये।

कमाई (४७, ६७)—उपार्जन।

कमाली (३६, ५६, ६६)—शिव, महा देव।

*कमेर (५६)—नल कूवर।

कर (४१)—हाथ।

करग (६३)—हाथ।

करणा (५०, ५२)—करुणा।

करणाकर (१००)—करुणाकर, दया-सागर।

करणौ (१०३)—करूँ, करना।

करता (२३)—कर्ता, रचने वाला।

करतौ (६६)—किया करता, करता हुआ।

करत्ता (६४)—कर्ता, रचयिता

करनाळि (६६)—१ एक प्रकार का वडा ढोल जिसे चलती गाडी पर वजाया जाता था। २. एक प्रकार का फूंक-वाद्य नारसिंह, भोपू।

करमा (६५)—भक्त स्त्री कर्मा वाई जो जगन्नाथपुरी मे रहती थी।

करा (१)—करू।

(६८, ६६)—करे।

करावै (५)—करवाता है।

करि (२७, ३८, ४५)—करके।

(३४)—करिये।

करिजै (३२)—करिये।

करिजो (६)—करिए।

करिणाळ (१६)—वीर, तेजस्वी।

करिया (४८)—करिए।

करिसै (१२, १७, ७२)—करेगा।

करिहो (३४)—करिए।

करीम (६)—कृपालु, महरवान।

करीस (६६)—करेगा।

करै (३६, ४४, ४७)—करते है।

करौं (२३)—करू, करता हूँ।

करौ (५६)—करते हो, करता है।

करौ (६६)—कीजिये।

---

* यहाँ पर निम्न आख्यान से अर्थ स्पष्ट हो सकेगा—

नल कूवर कुवेर के पुत्र थे। एक वार अपने भाई मणिग्रीव के साथ ये कैलाश पर्वत के समीप उपवन मे जलक्रीडा कर रहे थे। अधिक शराव पी लेने के कारण अपनी स्त्रियो सहित ये नग्न हो गये और इनको अपनी नग्नता का भान तक न रहा। इधर महर्षि नारद आ निकले। इनकी औरतो ने तो तुरन्त वस्त्र पहिन लिए किन्तु ये दोनो निर्लज होकर नग्न ही खडे रहे। नारद जी ने इन्हे श्राप दिया कि तुम विना वस्त्र पहने ठूठ की तरह खड़े हो जावो, वृक्ष वन जाओ।

कलकी (५, ३०)—कल्कि अवतार।
कलपत (३६,४७)—कल्पाँत, प्रलय।
कळस (२४, ३२, ३७, ६२)—देवमूर्ति को जल चढाने का पात्र अथवा ऐसे पवित्र कलश का देवमूर्ति पर चढाया हुआ जल।
कळह (५४, ६६, ८६)—युद्ध।
कळहा (१००)—युद्धो।
कलायँ (८७)—पौंचा।
कलिंग (३१)—१. देश का नाम, २. दुष्टजन।
कलि (४४)—कलियुग।
कलिपंत (२, ४७)—कल्पान्त, प्रलय, नाश।
कलिमाहि (४५)—कलिउग मे
कलियाण (१०२)—कल्याण।
कळिया (२१)—नाश किये।
कल्याण (३५)—उद्धार, मोक्ष।
कवण (३६)—कौन
कवियण (१००)—कविजन, काव्यकार।
कविलासं (२६)—कैलास।
कविलास (२, ४३)—मोक्ष, कैलास।
कविली (१६)—कपिला।
कवीयण (६६)—कवि लोगो।
कवेसर (११, ३८)—कवीस्वर, महाकवि।
कसंन (१६)—श्रीकृष्ण।
कसट (४६)—कष्ट।
कसियौ (७३)—ववन मे डाला।
कसिसँ (६५)—कटिवद्ध करेगा।
कहडी (२)—कैसी।
कहतौ (६३)—कहता रह।
कहर (५६, ६६, ७०, ७१, ७५, ८३)—भयकर।
(८०)—कोप।
(८२)—आपत्ति।
कहा (३४, ३८)—कहता।
कहि (३६)—कहकर।
कहिक (८)—कहकर अथवा कुछ।
कहिजै (३५, ३७, ४६, ५०)—कहा जाता है, कहे जाते हैं, कहिये।
कहिसी (३६)—कहेगे।
कहो (८१)—कहिये।
काइ (३५, ४०, ६२, ६३, ६५, ६६)—क्या।
काइमँ (८६)—कायम, दृढ, ईश्वर।
काक ना (७२)—कोई को, किसी को।
काकरा (६६)—ककड।
कागरै (६३)—कगुरा।
कावौ (६२)—कंधा।
कानड (५)—श्रीकृष्ण।
कानँ (३४)—दूर।
कान्हइया (७५)—श्रीकृष्ण।
कान्हड (२७)—श्रीकृष्ण।
कावड (१६)—चमार जाति के वे पुरुष जो रामदेव के अनन्य भक्त होते हैं।
काहि (७६)—कुछ।

काइं (२०)—कुछ ।
काइ (३२, ४६)—क्या ।
काइम (६, १०, ११, १७, २४, ६४, ९०)—दृढ, स्थिर ।
काइमा (११, ६६)—देखो, काइमि ।
काइमि (६, ११, ८४)—वह जिसका अस्तित्व विना किसी दूसरे की सहायता के बना रहे ।
काइमी (६८)—दृढ, अटल, ईश्वर ।
काई (३६)—१ कोई, २ कुछ ।
काछिवा (८०)—कश्यपावतार ।
काज (५६)—लिए ।
काठी (७३)—दृढ, मजबूत ।
काढि (७५)—निकाल दे ।
काढी (६५)—निकाल ली ।
कान्हईयो (६३, ७६)—श्रीकृष्ण ।
कान्हड (१, ९०)—श्रीकृष्ण ।
कान्हुआ (३३, ३६)—श्रीकृष्ण ।
कापडी (१३, ६५)—एक प्रकार के सन्यासी याचक विशेष, भाटो की एक शाखा ।
कापि (५६)—काटकर ।
कापिरिस (१३)—कापुरुष, कायर ।
कापै (३०)—मिटा दिया, नाश किया ।
कामडा (७६)—काम, कार्य ।
कायम (८६)—ईश्वर ।
कारण (५२)—लिए, निमित्त ।
कारणै (५६)—लिए ।
काळ (२०, ६८)—मृत्यु, मौत, यम ।
काळ-काळू (२७)—यमराज का भी यमराज ।
कालरा (३१, ८६)—कोयला, नमकीन भूमि जहां पर पपडी अधिक उतरती हो तथा वोने पर कुछ भी पैदा नही होता है ।
कालिग (८६)—असुर का नाम ।
काळि (५३)—काल, मृत्यु ।
कालीग (३२)—असुर का नाम ।
कालीगना (८७)—असुर का नाम ।
काळीगा (१३)—एक असुर का नाम जिसे कल्कि अवतार ने मारा था, हिंदवानी नामक लताफल जो तरवूज से मिलता जुलता होता है ।
काळी (१)—कृष्ण सर्प ।
काळो (२, ७०)—पागल, उन्मत, कलुपित ।
काल्है (७२)—पागल ।
काल्हो (१००)—पागल ।
कासिपि (८०, ६६)—कश्यप का, कश्यप के ।
कासु (३६, ७६, ८८)—किससे, क्या, कैसे ।
कासु (४०)—क्या, किससे ।
कासूं (७, २६, ७०, ७२, ८३, १०३)—कैसे, क्या ।
काह (३६)—क्या ।

काहळ (६६)—एक प्रकार का ढोल जो प्राय युद्ध के समय ही बजाया जाता है ।
काहला (८७)—भोला ।
काहली (२०)—उद्विग्न, उग्र रूपवाली
काहि (३६)—किस ।
काहिक (३७)—कुछ ।
किंदरे (२८)—किन्नर ।
किंहिक (६३)—कुछ ।
किण (२७, ३६, १०१)—किस ।
किणही (४१)—किसी ।
किणि (५०, ८१)—किस ।
कितरा (१७, १८, ६३, ६४, १००)—कितने, कितने ही ।
कितराई (२, ८०, ५६,७५, १००)—कितने ही ।
कितरा एक (१७)—कितने ।
कितरी (२१, ७६)—कितनी ।
कितरैं (७२)—कितने ।
कितरौ (७२)—कितना ।
किताई (८१)—कितने ही ।
किता (६४)—कितने ।
किताई (४४, ४७, ८५, ८६)—कितने ही ।
किनरह (३६)—किन्नर ।
किना (६७)—अथवा ।
किम (३६, ५०, ६६, ७१, १०३)—कैसे ।
किम-करि (१०)—किस प्रकार से ।
किमि (२०, २३, २४, २७, ७५, ७६, ८०, १००)—कैसे, किस प्रकार, विष्णु, किस ।
किमेर (६१)—कुवेर ।
किरणाळ (१३)—सूर्य ।
किरि (५०)—मानो
किलंग (५, १०, १७, ३०, ६७, ८४, ८६, ८७, ६१, ६६, १००)—कल्कि अवतार, एक असुर का नाम है जिसे कल्कि अवतार मारेगा,
किलगना (८७)—असुर का नाम ।
किलगरा (६१)—किलंग नामक असुर के ।
किसन (६, ८, २६, ६२)—श्रीकृष्ण
किसन (१, ३, २७, ४३, ४७, ४८, ४६, ५३, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६१, ६२, ६३, ६५, ६६, ६६, ७०, ७१, ७२, ७३, ७७, ८०, ८१, ८२, ८३, ८६, ६६, १०२)—श्री कृष्ण, श्री राम, विष्णु ।
किसन-दीपन (४५)—कृष्ण द्वैपायन, वेद-व्यास ।
किसन दीपानिन (८)—कृष्ण द्वैपायन पाराशर के पुत्र वेद-व्यास ।
किसनि (४६, ५१)—श्रीकृष्ण ।

किसनँ (१५)—चौहान वंश की खीची शाखा का राजपूत ।
किसिन (५५)—श्रीकृष्ण, राम ।
किसिन दीपायण (७७)—कृष्ण द्वैपायन
किसै (८०)—कौन से ।
किसौ (११, ३२, ५०, ६६, ८४)—कौन-सा, कैसी ।
किहक (६६)—कुछ तो ।
किहडी (८, १६)—किस
किहडो (४६)—कैसा
किहिक (१०)—कुछ
किहिकि (११)—कुछ
कीच (६५)—कीचड़
कीदर (१३)—किन्नर
कीच (६६, ८५)—पक, दलदल ।
कीजै (३७, ३६)—करिए
कीट (७६)—कैटक नामक असुर जो मधु का भाई था ।
कीटक (४)—कैटभ नामक दैत्य जिसको विष्णु ने मारा था ।
कीटग (२१, ५२)—देखें: कीटक ।
कीव (४, ३०, ५३)—किए, किया ।
कीधा (२, ३, ६, १६, ६४)—किए
कीधी (१०, ४८, ६२)—की
कीवो (१३)—किया
कीधौ (४, १२, १३, २८, २६, ३२, ५०, ६६)—किया, कियौ, कर दिया ।
कीन्हो (३६)—की
कीयौ (४५)—कीया
कीर (३६, ५५, ८१, १०३)—शुक, तोता, व्याध ।
कीरति (२१)—कीर्ति
कीला (६२, ७६, ८३, ६१)—क्रीडा, लीला ।
कुआरी (३२)—अविवाहिता, कुमारिका ।
कुंडलणी (१६)—कुंडलिनी
कुण (६५)—कौन
कुंत (६६)—भाला
कुंता (३२)—पाण्डवों की माता, कुन्ती ।
कुम्भकरण (५७)—रावण का भाई, एक दैत्य ।
कुणवौ (६०)—कुटुम्ब
कुण (४, ५, २६, ३७, ४१-४६, ५६, ६८, ६६, ७६, ७६, ८७, १०१)—कौन, किस, ।
कुणै (४०, ४१)—किस किसने ।
कुविज्या (६१)—कंस की एक अनुचरी जिसकी पीठ कुबडी थी ।
कुमया (७०)—कमी, अभाव, कोप ।
कुरखेत (५)—कुरुक्षेत्र ।
कुराण (६८)—कुरान ।
कुरिदि (३०)—कंगाली, निर्धनता ।
कुसटामिणि (४३)—कौस्तुभमणी ।

कुहाड (६६)—कुल्हाडी ।
कूत्रो (८६)—कूप ।
कूकड़ा (५८)—कपड़े की बाती, वस्त्र-वर्तिका ।
कूकूउवा ४८)—त्राहि-त्राहि, पुकार ।
कूखा (१०१)—कोख, कुक्षि।
कूटता (१३) मारने पर ।
कूटाडि से (१०)—ग्रसत्य करेगा, झूठा सिद्ध करेगा ।
कूटिजै (१६)—पीटे जायेंगे ।
कूटिया (३६, १००)—नाश किये, संहार किये, मरे ।
कूडा (१६)—ग्रसत्य भाषी ।
कूप (३५)—कूग्रा ।
कूवडी (३०)—कुब्जा नामक कस की दासी ।
कूरम (३, ६)—कच्छप, सूर्यावतार, कच्छपावतार ।
के (११, १७, १८)—क्या, कई ।
केई (३६, ३६, ४१, ५१, ६६, ६७, ६६)—कितने ही, कई, कितनी ।
केकाण (५२)—ग्रश्व, घोडा ।
केणि (३०)—किस ।
केतो (४६)—कितना ।
केथि (१६)—कहाँ ।
केम (७, ४६, ६६)—कैसे, किस प्रकार
केग्डा (८६)—करील का वृक्ष ?
केवल-गियान (२६)—कैवल्य ज्ञान ।
केवी (१६)—शत्रु ।
केसव (१, ७४)—विष्णु, श्रीकृष्ण, केशव ।
केसवराइ (१००)—केशवराज, ईश्वर। विष्णु का एक नाम ।
केसवा (६, १०, ३४)—केशव, विष्णु का एक नाम ।
केहर (२६) नृसिंह ।
केहिक (१००)—कुछ, कई ।
कै (४६, २०, ४१, ४४, ६१)—किस, का ।
कैये (५१)—कितने ।
कैरै (७५)—किसके ।
को (२३)—कोई ।
कोइ (४१)—कोई, निश्चित ।
कोइला-गिरि (२१)—पर्वत विशेष ।
कोकि (२८)—विष्णु ।
कोट (२८)—मधु, कैटभ ।
कोटवाळ (१३)—पहरेदार, चौकीदार
कोड (६)—उत्साह, उमंग ।
कोड (८७)—करोड़ ।
कोडि (३१, २०, २६, ३६, ४४)—करोड, कोटि ।
कोडिया (३३)—कोटी, कोड़ ।
कोड़े (१२)—कोटि, कोड ।
कोप (३२, ६५)—गुस्सा ।
कोपियो (५२, ५४)—कोप किया ।
कोपै (५३, ४२, ६०)—कोप करता है ।

कोम (३६)—कूर्मावतार।

कोयड़ो (७२)—बच्चो का एक खास प्रकार का खेल जिसमे कपडे को गेंद के आकार मे बडी दक्षता से समेट लेते हैं। इस गेंद को आकाश मे फेंकते हैं जिससे कपडा खुलकर गेंद रूप मिट जाता है तब बच्चा हार जाता है।

कोलाली (३६)—कुम्भकार, ब्रह्मा।

कोसल्या (६, ५५)—कौशल्या।

कोसिलि (१०१)—कौशिल्या।

कोहर (७५)—कूप।

कोहिक (७७)—कोई एक।

कौ (५४)—का।

क्या (४५)—किसलिए, क्यो, कैसे।

क्यें (७२)—कैसे।

क्रँम (५१, ७, ३७)—कर्म, काम।

क्रिपा (९६, १०२)—कृपा।

क्रिसन (३६)—श्रीकृष्ण।

क्रीत (५, ५०)—कीर्ति।

क्रेत (३६)—केतुह।

क्रोधियौ (६२)—क्रुध हुआ, क्रोध किया।

ख

खंड (१००)—टुकडा।

खंड-डंडूल (३०)—

खडखड (६१)—टकराने की ध्वनि, ध्वनि विशेष।

खडग (३२)—तलवार।

खड्डि (६०)—हाककर, हाका।

खड्मि (८५)—चलाएगा।

खणी (८७)—खना, खोदा।

खंपाय (१६)—नाश कर दिया।

खपावण (५)—नाश करने को, ध्वंस करने को।

खमा (४२)—क्षमा।

खर (६, ५६)—एक राक्षस जो रावण का भाई था।

खरा (१३, ७७, ८६)—ठीक, पक्का, दृढ।

खरो (८५)—पक्का, दृढ, निश्चय।

खरी (५३, ६०, ६४)—पक्का, दृढ, निश्चय।

खल (१६, २१, ५६, ६६, ६७)—दुष्ट, असुर, राक्षस, शत्रु।

खलक (८४)—ससार, दुनियाँ।

खलही (८२)—दुष्टो को।

खला (६२, ६३)—शत्रुओ, दुष्टो।

खळिकियौ (७६)—कलकल की ध्वनि करता वहा, प्रवाह मे हुआ।

खली (८७)—दुष्ट, असुर।

खवाड़ै (४२)—खिलाता है।

खवारै (४२)—खिलाता है।

खसा (१४)—१. भागते है २. लडते है।

खमें (८७, ७७)—भिडे, युद्ध किया, भिडेगा, युद्ध करेगा ।

खसौ (१०, ८४)—युद्ध कीजिए, भिडिये ।

खाँचि (७९)—खाच कर, आकर्षण करके ।

खाणि (४७)—प्रकार, तरह, खानि ।

खाग (८७, ९१)—तलवार ।

खाटियौ (८२, ८३)—प्राप्त किया, उपार्जन किया ।

खाटी (५७)—प्राप्त की ।

खाटै (७५)—प्राप्त करता है, प्राप्त करना ।

खाड (२, ८७)—खड्डा, गड्डा ।

खाण (३९)—खानि, जीवयोनि ।

खाणि (४०, ४८)—खानि, प्रकार ।

खाणै (५०)—खानि, प्रकार ।

खाया (९७)—खा गये ।

खावी (३)—खाई

खापर (६३)—दुष्ट ।

खाफर (५, ३०, १००)—असुर, राक्षस, असुर का नाम, दुष्ट ।

खारी (१००)—कडुआ, कटु ।

खासा (९१)—बढिया, सुडौल ।

खासौ (१६)—खास, विशेष, मुख्य, प्रधान ।

खिड़ि खिड़ि (२३)—देश-देश, खंड-खंड

खिणियौ (५३)—नोच दिया, उखेड़ दिया ।

खिणै (२८)—पटकना, डालना ।

खिमावत (४१)—क्षमावान

खिमिया (१९, २३)—क्षमा

खिम्या (४७)—क्षमा

खिवि (९३)—कोप करता है, कोप करके ।

खिसै (७९)—भिडे, टक्कर ली, युद्ध किया ।

खीच (९५)—व्यंजन विशेष जो प्राय बाजरा को ऊखल मे कूट कर बनाया जाता है ।

खीज (४१, ७२)—कोप

खीजतो (७१)—कोप करना ।

खुदाइ (२३)—खुदा, ईश्वर ।

खुरासाण (६४)—यवन

खूदामलजी (११)—ईश्वर, वह प्रचड योद्धा बादशाह जो बहुत से प्राणियो के कष्ट अपने ऊपर सहन करता है ।

खूटविहो (९०)—समाप्त करोगे, समाप्त कर देंगे ।

खूटा (१९)—समाप्त हो गये, मर गये ।

खूब (९५)=बहुत, बढिया ।

खेचर (५७)—आकाशगामी ।

खेचरा (८५)—आकाशगामी ।

खेत (१०,३२)—युद्धस्थल, रणक्षेत्र ।

खेतपाळ (१२)—क्षेत्रपाल ।

खेतपाळां (८५)—क्षेत्रपाल नामक देवो ।

खेतल (६१)—क्षेत्रपाल देव ।
खेघ (१४, ६०)—द्वेष, डाह ।
खेधौ (५५)—द्वेष, डाह ।
खेरिया (६२)—मार डाले ।
खेळा (६१)—साथी, मित्र ।
खेलियो (६३)—खेला, क्रीडा की ।
खेलौ (३२)—खेलो, युद्ध करो ।
खेंग (८६)—घोडा
खैर (११)—कुशल क्षेत्र
खोटी (१००)—खराव, बुरी ।
खोडील (५)—बुरी आदतें, गर्व ।
खोसरण (५)—छीनने को, छीनने वाली

ग

गग (४४)—गंगा नदी ।
गगा (२)—गंगा
गंगेव (४४)—गांगेय, भीष्म पितामह ।
गजरण (४५)—नाश करने वाला ।
गजराज (६)—बडा हाथी ।
गजरौ (७८) - भक्तराज, गजराज का
गटक (२०)—घूंट
गडा (३८)—गाढा
गरणा (७६)—समझे
गति (६५, २१, ३५, ४२)—हाल, लीला, गतिका, मोक्ष ।
गत्ती (६१)—गति, मोक्ष ।
गदा (१७)—शस्त्र विशेष ।
गदापति (४३)—गदा नामक शस्त्र को धारण करने वाला, विष्णु
गनाडति (१०१)—समधी
गम (३६, ३६)—पहुँच, ज्ञान ।
गमर (८७)—युद्ध
गमा (४०)—चुहुवै-गमां, चारो ओर ।
गमाडा (८)—नाश कीजिए, मिटाइए
गमाया (२१)—नाश किये ।
गमायौ (५४, ५५)—नाश किया, मिटा दिया ।
गमियो (२)—नाश हुआ ।
गमै (७८) - जाते हैं ।
गयरण (५१, ८६) – गगन, आकाश ।
गयासुर (४)—एक असुर का नाम ।
गरढा (२७, ३६, ७६)—वृद्ध
गरढेरा (६२)—वृद्ध
गरढैरी (१६)—प्रति वृद्धी ।
गरढेरौ (४, ७) वृद्ध ।
गरढौ (४७, ६८, ६०)—वृद्ध, प्राचीन
गरव (५५)—गर्व, अभिमान ।
गरुऔ (२४)—गभीर
गळिया (२१) निगल गई, मास-पिंड
गह (५५)—गंभीर
गहन (६)—गभीर
ग्रहिया (६०)—ग्रहण करने से ।
गाजरण (१००)—पराजित करने को ।
गाजैं (५८)—संहार करता है, नाश करता है, पराजित करता है ।
गान (१०३)—गुण-गान, नाम-स्मरण
गामी (ग्रामी) (२७)—गमन करने वाला ।

गाइ (६, ३६, ४५)—गाय, गा।
गाइया (६०)—गाएँ
गाजिया (८७, ६६)—गर्जित हुए।
गाजियौ (५५, ८०)—गर्जना की।
गाढि (५०)—ठोस रूप से, सम्मिलित
गाय (६४)—गौ
गालियौ (८३)—नष्ट कर दिया, मिटा दिया।
गावतरी (४४)—गायत्री
गावड़ै (१०१)—गाये
गावतरी (१३, २१)—गायत्री
गावा (३८)—वर्णन करें।
गाविड़ै (८३)—गाएँ
गावित्री (३२)—गायत्री
गायौ (३२)—गाया
गाहिया (६०)—ध्वस किए।
गाहैड़ि (३८)—गंभीर, गाभीर्य।
गिऔ (५६, ७१)—गया, मिट गया, नाश हो गया।
गिणि (४२, ७३)—समझ, समझकर
गिणियाँ (६३)—समझा
गिणीजै (४६)—गिना जाता है, गिनिए।
गिनका (६५)—वेश्या
गिनिका (७४)—एक वेश्या जिसे भगवान ने मोक्षपद दिया।
गिमि (६१)—मिटा दे, नाश करदे।

गिर (४७)—पर्वत, गिरि।
गिरवर (६५)—गिरिवर, पर्वत।
गिळि (४८)—निकल गया।
गिळिया (२०, १८, १००)—निगल गई, ध्वस कर दिये, सहार कर दिया।
गिळियौ (६४)—निगल गया।
गिलै (४, ४७, ६६, ८७)—निगलता है, नाश करता है, निगल जाते हैं।
गीता (३२)—भगवद् गीता।
गुआर (१७)—गँवार
गुड़ाया (६३)—मार डाला, सहार किये।
गुडिदा (६८)—१ सिर, २ वीर।
गुडिसै (६६)—लुढक जायेंगे।
गुडै (६६, ८७)—वीर गति प्राप्त होंगे गिर गये, लुढक गये।
गुण (६७)—कीर्ति।
गुणपति (६)—गणपति, गजानन।
गुणी (४७)—गुनवान, उत्कृष्ठ।
गुद्र (६४)—मास-पिंड।
गुर (३८)—शिक्षक, ज्ञानदाता।
गुरड (३६)—विष्णु के वाहन का नाम जो पक्षियो के राजा समझे जाते हैं, गरुड़।
गुरहर (६०)—गुरुवर, श्रेष्ठ।

गुरुड (४८)—गरुड ।
गुलाम (३७)—दास ।
गेम (२, ८, २१, ६४, ७३)—पाप, कलक ।
गेमरा (२१)—गज, हाथी ।
गेल (६४)—पीछे ।
गोकल (६३)—गोकुल ।
गोखड़ै (६७)—गवाक्ष, झरोखा ।
गोठ (१६)—गोष्ठी ।
गोठि (५६)—गोष्ठी, प्रीति भोज ।
गोडवाड (१७)—मारवाड राज्यान्तरगत पाली ज़िले का एक बड़ा भाग जहाँ पर पहिले गौडवंश के क्षत्रियो का राज्य था ।
गोडि (९२)—ध्वस करके ।
गोडियौ (१५) इन्द्रजाल का खेल करने वाला ।
गोढै (१००)—पास, निकट ।
गोतिम (६७)—गौतम ऋषि ।
गोतौ (२)—चकर ।
गोदड (१६, ३८)—एक प्रकार के सन्यासी, एक महात्मा का नाम जो निरंतर कथा ही पहन कर रहता था ।
गोदाउरी (८१)—गोदावरी नामक नदी ।
गोपाल (४७)—श्रीकृष्ण, विष्णु का एक नाम ।
गोपिया (३६)—गोपिकाएं ।
गोपी (११)—श्रीकृष्ण के साथ वाल क्रीडा करने वाली व्रज की गोप जाति की स्त्रिएं, गोप पत्नि ।
गोविंद (६३)—गोविंद ।
गोम (४६)—भूमि, पृथ्वी ।
गोरजा (८८)—गौरी, पार्वती ।
गोविन्द (७६, ५६, ६३, ६६)—ईश्वर, विष्णु का एक नाम ।
गोविन्दा (३७, ६६)—श्रीकृष्ण ।
गोविंदि (७४)—गोविन्द के, कृष्ण के
गोविंदें (६१, ६३)—गोविंद, श्रीकृष्ण श्री रामचद ।
गोविंदौ (६०, ६८)—श्रीकृष्ण, गोविंद ।
गोह (१००)—निषाद जाति का नायक जो शृ गवेरपुर रहता था और श्री रामचद भगवान का मित्र था, गुह ।
गोहि (६३)—गुह, निषाद ।
गौरि (३६, ४४)—पार्वती ।
गौरिजा (३८)—गौरी, पार्वती ।
गौरिज्या (३२, ६७)—गौरी, पार्वती, उमा ।
गौरी (२१)—गौर वर्ण की, पार्वती ।
गौलिया (८३)—गोपाल, ग्वाला ।
ग्यान (१५, ३८, ६६, १०२)—ज्ञान ।
ग्यानरी (३६)—ज्ञान ।

ग्या (४६)—गये।
ग्यानह (४४) ज्ञान।
ग्रब (४५, ५०)—गर्व, गर्म।
ग्रभवाम (५०, ६६)—गर्भवास।
ग्वाल (३३)—गोपाल, रक्षक।
ग्रह (५७)—वे तारे जिनके उदय अस्त काल आदि के विषय मे प्राचीन ज्योतिषियो ने ज्ञान कर लिया था। इनकी सख्या फलित ज्योतिष मे नौ मानी गई है।
ग्रहि (७२)—पकडकर।
ग्रहियो (२६)—पकडा, धारण किया।
ग्रहिसी (६४)—पकडोगे।
ग्रांम (६६)—ग्राम।
ग्रामी (१०१)—गामी, गमन करने वाला, चलने वाला।
ग्रामहं (४१)—ग्राम।
ग्राह ना (६६)—ग्राह को।
ग्रिह (५८)—घर।
ग्रेह (४८)—गृह, घर।

घ

घडग (३५)—रचना।
घडै (३४, ४२, ४३)—रचता है, रचते हैं।
घट (२३)—शरीर, मन, हृदय।
घटियौ (५२)—घट गया, कम हो गया।
घटै (४६)—कम, घटता है।
घण (११, ४५, ४६, ५०, ६६, ७५)—बहुत, अधिक।
घणनामी (२४, ५१, ६८)—बहुत से नामो वाला, ईश्वर।
घणनाम (३६)—बहुत से नाम वाला।
घणनामी (७५)—वह जिसके अनेक नाम हो।
घणा (३२, ७५, ८३, ८४, ६१)—बहुत, अधिक।
घणी (३६)—चातुर्य।
घणू (७०)—अधिक।
घणेरो (४०)—बहुत।
घणै (५४, ५६)—अधिक, बहुत।
घणैरिडै (१०)—अधिकहठ, जिद्द।
घणौं (७०)—अधिक।
घणौ (१, ४०, ७६, ५२, ४६, ५४, ६८, ७२, ७६, ८०, ८१, ८२, ८७, ८८, ६७, ६३)—बहुत, अधिक, घना, अत्यन्त।
घन (२०)—बहुत, अधिक।
घमसाण (१२)—युद्ध।
घाणी (३२)—कोल्हू।
घाउ (६६)—प्रहार।
घाट (६)—रचना।
घाणी (२०)—ध्वंस करने वाली।
घाणीया ( )—कोल्हू।
घात (२)—अनिष्ट, दुर्दशा।
घाति (२२)—डालकर।

घाते (२)—डालना, देना ।
घातौ (१०२)—डालिए ।
घिणेरी (१५)—अधिक ।
घिरियौ (८२)— चिरा, मुडा, भाग्योदय हुआ ।
घीसीयी (६२ — घसीटा ।
घुरै (६६)—बजते हैं ।
घूमर (६२)—दल, समूह ।
गोडौ (११)—घोडा ।

च

चचळा (३१)—घोडो ।
चचळै (३३)—घोडे पर ।
चदमां (३१)—चन्द्रमा ।
चन्द्रमा (५)—चन्द्र, चाँद ।
चंकचूर (६)—ध्वस, नाश ।
चकचूरि (४६)—नाश, ध्वस ।
चकर (५७, १७)—चक्र, विष्णु का एक अस्त्र ।
चक्रधर (४५)—चक्र को धारण करने वाला, विष्णु ।
चक्र पाणी (८४)—वह जिसके हाथ मे चक्र नामक शास्त्र हो, विष्णु ।
चक्र-सामि —(४३)—विष्णु ।
चख (२४)—चक्षु, नेत्र ।
चडसौ (६४)—चढाई करोगे ।
चडिया (८६)—चढाई की, चढे ।
चडियौ (२७, ८४)—चढा ।
चडिसै (१८)—चढेंगे ।
चत्र (५०)—चार ।
चत्रवाह (२८)—चतुर्भुज ।
चत्रभुज (३६)—चतुर्भुज, विष्णु का एक नाम ।
चत्रभुजन (४५)—चतुर्भुज, विष्णु ।
चरण (४३ —पाद, पाँव ।
चरणार विंदै (८८)—चरणाविंद, कमल स्वरूपी चरण ।
चरिताळा (२६)—चरित्र करने वाला ।
चलण (५४)—चरण, कदम ।
चलणि (५७)—चरण, पैर ।
चलणी (१०३)—चाल, चलने का ढंग ।
चलणै (१००)—पावो मे, पैदल ।
चवै (११, १३, ३२)—कहता है, कहते हैं ।
चापियौ (५४,)—रखा, पैर रखा ।
चाकर (३७)—सेवक, अनुचर ।
चाटै (५८)—चाटता है ।
चाड (६४)—पुकार ।
चाणौराय (६१)—कस का एक मल्ल जिसको श्री कृष्णने मारा था, चाणूर ।
चाप (६)—धनुष ।
चारण (३६) एक देव जाति ।
चारिणि (१६)—चारण कुलोत्पन्न देवी ।
चालण (८२)—चलाने को ।

चाव (१०३)—उत्साह, उत्कंठा।
चावियौ (५३)—चवाया, चर्वन किया।
चाहौ (३२)—इच्छा करो, चाहते हैं।
चित्ति (२१)—चित्त मे।
चिति नैं (४६) – चित्त को।
चिदाणद (४६)—चिदानद।
चिरिताळ (६६)—चरित्र करने वाला।
चीघ (६२)—ध्वजा, झडा।
चीना (१६)—आहार कर गई।
चीणमण (३२)-
चीणि (८६)-
चीतारि (३)—स्मरण कर, स्मरण करके।
चीतारै (६८)—याद करते है।
चीर (५६)—वस्त्र।
चुहुग्रै-गमा (४०)—चारो ओर।
चूनाळि (५३)-
चूडलौ (११)—हाथी दांत की बनी चूडियां जो सधवासी अपनी भुजा पर धारण करती है।
चूरिया (५६)—ध्वस किए।
चूरौ (३२)—ध्वस करिए।
चूलै (३१)—चूल्हा।
चेडै (४५)—खुले आम।
चेतियौ (६३)—सतर्क हुआ, सावधान हुआ।
चेलौ (३२)—शिष्य।
चोखिसै (१२)—चखेगी।
चोखै (११)—श्रेष्ठ उत्तम।
चोरी (२१)—चुराने वाली (चित्त को)
चोरै (५८)—चोरियो, चोरियें, तस्कर वृत्तिएँ।
चौ (१५)—का।
चौक (३२)—प्रांगण।
चौकस (६०)—निश्चय ही, सतर्क।
चौद (४७)—चौदह।
चौरी (११)—विवाह-मडप, विवाह मंडप की वेदी।
च्यार (३६)—चार।
च्यारि (४७)—चार।

छ

छडकाड (६१)—पानी आदि छिडकने की क्रिया।
छत (२४—मकान के ऊपर का भाग।
छता (६७)—प्रकट।
छती (१६)—है, होते हुए।
छती (३८, ८२, १०२)—मौजूद, वर्तमान, प्रसिद्ध, प्रकट।
छत्त (६२)—राजा, छत्रधारी।
छत्राळ (६८)—छत्र धारिन, राजा।
छत्रासुर (१०३)—एक असुर का नाम।
छळिया (१६, २१)—छल लिये, धोखा दिया।
छलियो (६५)—छल, धोखा दिया।
छळियौ (१७)—छल लिया।
छा (१००, ३४)—हूँ।

छानै (२५)—गुप्त रूप से ।
छात्र (६७)—राजा ।
छात्रा (६७)— छत्रपति, राजा ।
छाया (२१)— फैल गया, छा गया ।
छिनि (३१)—शनिश्चर ।
छीका (५८)—छींका, झूला ।
छीका (८३)—कटोरीनुमा आकार का रस्सियों का गूंथा हुआ जाल जो प्राय छत मे लटकाया जाता है और जिस पर प्राय प्याद्य पदार्थ रखे जाते हैं ।
छीया (५) - सीता ।
छूमरण (१०१)—चरण, पाव ।
छूव (३७)—सर्व, सव ।
छेहडा (६७)—गठ-वधन, गठ-वंधन के वस्त्र का छोर ।
छैं (१००)—है ।
छै (३३)—है ।
छोकरा (८३)—छोकरा, वच्चा, लडका ।
छोगाळ (६८)—जिसकी पगडी मे छोगा लगा हो । छोगा वाली पगडी पहिने हुए ।
छोगाळा (६२)—अवतसवारी, श्रेष्ठ, सुन्दर ।
छोगाळौ (५८)—श्रेष्ठ, शौकीन, छैल छवीलो ।
छोडिया (६७)—छोड़ दिये ।
छोति (४०)—छिलका ।
छोळ (१०२)—१ लहर, २. आनंद ।
छौ (४८) - था ।
छौगाळौ ५ - छैला, सुन्दर और वना ठना, सजा-वजा और युवा पुरुप, सुन्दर वेश विन्यास युक्त युवा पुरुष, रगीला, वाका ।
छ्रव (१९)—प्रसिद्ध ।

ज

जगम (४०)—चलने फिरने वाले ।
जपसै (२१)—जप करेंगे ।
जवक (४०)—यव, घास, तृण, चारा
जम (१००)—यमराज ।
जइ (४८)—जो, अगर ।
जकानु (२)—जिनको
जख (२८)—यक्ष
जख (१३, ३९)—यक्ष
जगंन (६२)—यज्ञ, ससार, जगत ।
जग (२२, ४३)—ससार, जगत ।
जगतनाथ (४६)—जगन्नाथ, ईश्वर ।
जगति (३४)—ससार
जगदाह (४६)—जगत का ।
जगदीश (३३, ५७)—जगदीश्वर
जगदीस (३६, ४४, ४६, ६०, ६९)—ईश्वर ।
जगनाथजी (६३)—जगतस्वामी, विष्णु, श्रीकृष्ण ।

जगनाथराय (६३)—विष्णु, श्रीकृष्ण।
जग-पुड (१०)—पृथ्वीतल, जगतीतल
जगि (१०२)—ससार मे।
जजमान (१५)—यजमान
जटाय (६)—प्रसिद्ध भक्त, गिद्ध, जटायु।
जडग (७८)—जड, मूर्ख, अस।
जडधार (१९)—महादेव।
जडाणो (४०)–घनीभूत हुआ।
जडाउ (४७)=जटित
जडाधार (४८)—जटाघर, महादेव।
जडावर (८८)—शिव, महादेव।
जण (५२, ५६, ६६) – व्यक्ति, भक्त।
जणारो (६७)—जिसका
जणस्यै (३६)—जनेगी, उत्पन्न करेगी
जणारी (६४)—जिनकी।
जणियो (९३)—जन्म दिया, उत्पन्न किया।
जती (९१)—यति, परमपद के लिए यत्न करने वाले, सन्यासी।
जद (४८, ७१, ९९)—जब
जदरथ (६३)—महाभारत युद्ध मे दुर्योधन पक्षीय एक राजा।
जदवंस (७५)— यदुवश, श्रीकृष्ण।
जपीजै (४०)—जापा जाता है।
जपै (२३)—जपते हैं।
जपो (३४)—जप करिए।
जवने (२०)—यवनो ने।

जवानै (६०)—जवान
जम (३९)—यम
जमणा (६०)—यमुना नदी।
जमणा (१३)—यमुना
जमदग्न (८१)—एक ऋषि जो परशुराम के पिता थे, जमदग्नि
जमपास (३४)—यमपाश
जमराव (२५)—यमराज
जमलै (१५)—साथ ?
जमवाळा (९९)—यमराज के।
जमवारा (५१)—जीवन, जन्म, यम-यातना।
जमै (१७)—रामदेव पीर के नाम पर किया जाने वाला रात्रि जागरण।
जमो (१४)—रात्रि जागरण जिसमे प्राय. रामदेव के ही भजन गाये जाते हैं, राती-जोगो।
जयो (६, २२, ३६, २३, ३३, ४८)–जय हो।
जयो (२७, ३४)—जय हो, जय !
जर (१००)—धन दौलत।
मुहा—जन जूनो
जरणा (१००)—सहन शक्ति।
जरिया (४८, १००)—सहन किए, हजम किए।
जरू (२८, ७०)—अवश्य, जरूर ही, दृढ़, मजबूत।

जळ (५२, ५९)—पानी, समुद्र।
जळ माणसिया (१६)—जलमानुस।
जवन (५०, ६२, ६३, ९१)—असुर, राक्षस यवन।
जवना (९९)– यवन।
जवने (९८)—यवनो।
जस (३८, ४४, ५१, ९५)—यश, जैसी कीर्ति।
जसहि (६०)—यश।
जसोदा (५८, ६२, ८३)—व्रज मे माता के रूप मे श्रीकृष्ण का पालन पोषण करने वाली नद गोपराज की धर्मपत्नी, यशोदा।
जसौदा (५)—यशोदा।
जांणा (१०१)—जानता हूँ।
जाणि (३५)—जानकर।
जाणी (३२)—समझली, समझ लिया।
जांणै (३९)—जानता है।
जानी (३१, ३७)—वराती।
जामिणि (१०१)—माता।
जांमी (२)—पिता, जन्म देने वाला।
जाइयौ (३९)—उत्पन्न किया।
जाइनै (३०)—जा करके।
जाइया (८१)—जन्म दिया।
जाए (३३)—जा करके।
जाजम (१३)—छपा हुआ या रगा हुआ दो सूती मोटा विछाने का कपडा, जाजिम।
जाड (२, ४, ३५, ३७)—जडता, अग्यान जाड्य अज्ञानता।
जाडा (६६)—शक्तिशाली, वहुत वडा।
जाडि (५१)—जवडा।
जाणै (१९, ७६)—जानती है, जानता है।
जाति (३९)—हो जाना, हो सकना।
जात्र (३७)—यात्रा, पूजा, अर्चना।
जादवराव (१००)–यादवराज, श्रीकृष्ण।
जादवा (३६)—यादव, श्रीकृष्ण।
जाप (३४, २३)—जप, पठन पाठन।
जाव (५२)—जवाव, प्रत्युत्तर।
जामिणी (२२)—जन्म देने वाली।
जामै (४३)—जन्म लेते हैं।
जाया (१९)— जन्म दिया।
जायौ (३९, ४२, ५५, ८२, १००)—जन्म दिया, उत्पन्न किया, पुत्र।
जाळण (९२)—जालने वाला, जलाने का।
जास (२८, ३५, ५०, ९८)—जिसका, जिसे जिससे।
जिका (५१)—जिन्हो।
जिके (२, १६, ८१)—जो।
जिकै (९३)—जिस, जिसने।
जिकौ (२६, ४५, ५४)—वह, जो।
जिगन (४४)—यज्ञ।
जिगि (५५)—यज्ञ।

जिण (७७)—जन, मनुष्य, भक्त ।
जिणि (४४, ४८)—जिस ।
जिणिसा (१००)—जिसमे ।
जितरौ (४६)—जितना ।
जिनक (२६)—राजा जनक ।
जिनिखि (७७, २१)—जनक ।
जिनेता (४६)—जनयतृ, माता ।
जिम (३५, ५३)-जिस प्रकार से, जैसे ।
जिमि (२०)—जैसे ।
जिमा (१६, ६५, ६२, ६६)—जैसे, जैसा ।
जिसी (४८)—जैसी ।
जिसौ (२५, ४१, ५२, ५७, ५६, ७८, १०१, १०२)—जैसा ।
जिहांरा (१०३)—जिनके ।
जीतौ (५४, ६३)—जीत गया, विजय हो, जाओ ।
जीपै (७, ५२, ५६)—जीत सके, विजय प्राप्त कर सके, जीतता है ।
जीमिसै (१२)—भोजन करेगा ।
जीमै (५८)—जीमता है ।
जीवती (४५)—जीवित ।
जीव (४०)—प्राण, जीवन ।
जीवड़ा (१०२)—जीवो, प्राणियो ।
जीवाडिया (६६)—जीवित किए ।
जीवाडी (६६)—जीवित की ।
जुआण (१२)—जवान, युवा ।
जुअै (७६)—जुवा ।
जुग (५२, १०२)—युग ।
जुजिठळ (६३)—युधिष्ठिर ।
जुज़िठिळ (६२)—युधिष्ठिर ।
जुजिठिळि (३१)—युधिष्ठिर ।
जुठा (७६)—चचल, उत्पात करने वाला, लीला करने वाला ।
जुड़िया (६५)—भिडे, युद्ध किया ।
जुध (१६, ३६, १००)—युद्ध ।
जुधि (२०)—युद्ध मे ।
जुरारी (३३)—ज्वरारि, तापो का नाश करने वाला, सदैव युवा रहने वाला ।
जुरासंध (६२)—मगधापति बृहद्रथ के पुत्र का नाम ।
जुहार (२८, १४, ७६)—अभिवादन ।
जुहारूं (२५)—नमस्कार करता हूँ । अभिवादन करता हूँ ।
जुहारै (३६, ४६)—अभिवादन करते हैं ।
जूजूआ (८२, १०१, ४५)—पृथक ।
जूटा (१२, ६६, ८६, ८७)-भिडे, भिड गये, युद्ध किया, युद्ध मे लग गये ।
जुटै (६८)—भिड गये ।
जूढिया (३७)—जोधपुर राज्यान्तर्गत शेरगढ तहसील का एक लालस गोत्र के चारणो की जागीर का गांव ।

जूनां (३७, १००)—प्राचीन ।
जेज (६४)—देरी, विलव ।
जेम (६, ३८)—जैसे, जिससे ।
जेरिया (६२) – ध्वस किए ।
जेवा (२८) – जैसे ।
जेसलौ (१५)—एक भक्त का नाम जो रावल मल्लिनाथ के दरवार मे था ।
जैं (४२)—जिस ।
जै (२१, ३६, ६३)–जो, यदि, अगर।
जैत (२०, ५२, ५६)—विजय, जीत।
जै देव (३८, ६६)—प्रसिद्ध सस्कृत ग्रंथ गीत-गोविंद के रचयिता एक परम वैष्णव कवि ।
जोइ (१३, ३७, १०३)—देखकर, देखिए जिस ।
जोइया (१६)—देखे
जोईयौ (६८)—देख
जोग (२२)—योग
जोगणी (८६)—योगिनी, रणचडी ।
जोडै-पाण (१०२)—कर-बद्ध होता है
जोत (१५)—ज्योति
जोति (२४, ३३, ३५, ३६, ४०)—ज्योति, ईश्वर (वेदान्त)
जोध (१२, २१)—योद्धा, वीर ।
जोनि (४३)—योनि
जोनी (८१)—योनि
जोनीया (३६)—योनि, जन्म ।
जोमरण (८०)—जन्म मा
जोरवर (४६)—शक्तिशाली
जोरावर (७६)—शक्तिशाली
जोवै (३१, ६४)—देखता है, देखती है
ज्यानखी (८१)—जानकी, सीता ।
ज्याग (६, ४३, ५५) – यज्ञ
ज्यानखी (३६)—जानकी, वैदेही ।

झ

झगडै (१००)—लडाई
झडपै (७६) झपट कर, छीनकर ।
झडपै (५६)—छीनता है, खोसता है ।
झडिपिया (६१)—छीन लिए ।
झलिमै (७०)—धारण कर सकेगा, उठा सकेगा ।
झलू (६६)—रक्षक, मददगार, उत्तर-दायित्व लेने वाला ।
झाझ (३१, ७८)
झाझै (६४)—बहुत, अधिक ।
झाटिया (८७)—मार दिया ।
झरिडियौ (६४)—नोच डाला ।
झाल (६८)—पकड कर ।
झाळ (८७)—ज्वाला, आग की लपट आग ।
झालणहार (६)—धारण करने वाला, पकडने वाला ।
झालि (१६, २६, ५८)—पकडकर ।
झालिमै (८७)—पकडेगा ।
झाली (७३)—पकडी
झालौ (२१)—धारण करते ही ।

झिखै (७८)—प्रकाशित हो।

झूझ (३२)—युद्ध

झूझना (७९)—युद्ध के, युद्ध का।

झेडै (४५)—गिराता है, ग्रास करता है

ट

टकौ (७०)—पैसा

मुहा—वाल्हौ टकौ-अत्यन्त प्यारा।

टला (१०३)—टक्कर

टळिया (९७)—मिट गये, दूर हो गए।

टळियौ (५६)—दूर हुआ, मिट गया।

टळै (३५, ८०)—दूर हो, मिट जाता है।

टलौ (७८)—टक्कर, आघात।

टल्ला (८९)—टक्कर, आघात।

टापौ (९६)-१ मारो, २. फेरा, व्यर्थ आना जाना।

टाळण (९२)—मिटाने की, दूर करने की।

टाळिहौ (३७)—दूर करिये।

टाळीया (८१)-दूर किये, मिटा दिये।

टाळै (९९)-दूर करता है, मिटाता है।

टीकाळ (५०)—तिलकधारी, श्रेष्ठ।

टेक (९०, ९५)—प्रण।

टोघड़ (९६)—गायो के वछडे।

ठ

ठकराणी (१५)-ठाकुर की धर्म पत्नी।

ठग (७३)—ठगने वाला, धूर्त।

ठगाई (९७)—धूर्तता।

ठगारा (७६)—ठगने वाला, ठग, धूर्त।

ठगारौ (१५)—ठग, धूर्त।

ठरिया (८१)—शीतल हुए।

ठरी (१९)—ठंढी पड गई।

ठळा (६६)—ढेला।

ठाभौ (६०)—रोकिये।

ठाम (४६)—स्थान।

ठाकराई (९७)—स्वामीत्व।

ठाउँ (३६)—स्थान।

ठाढौ (४७)—शीतल।

ठावा (६५)—प्रसिद्ध, महान।

ठावी (३२)—प्रसिद्ध।

ठावौ (९१)—महान, वडा।

ठीक (९७, ९१)—अच्छा, भली प्रकार।

ठेलसै (६५)—पीछे होयेंगे, पराजित करेंगे।

ठेले (१)—धकेल दे, ढकेल दे।

ठौडि (५०)—स्थान।

ड

डंडवत (५९)—दण्डवत्।

डंडूळ (१००)—एक दैत्य का नाम।

डळा (८५)—पिंड, खड।

डरिया (१००)—डर गये।

डसै (८७)—चवाये, काटे।

डहिकिया (८७)-ध्वनिमान हुये, वजे।

डाग (९८)—लाठी।

डाण (९६)—दण्ड।

डाक चड़ियौ (३७)—डावा डौल हुआ,
डाकण (१००)—डाकिनी ।
डाकिरणँ (८५)—डाकिनी ।
डाच (९८)—मुँह, गाल ।
डाचा (७०)—मुख ।
डाडौ (९७)—पितामह ।
डाभी (४१)—दर्भ ।
डाहुल (५)—१. एक दैत्य का नाम, २. दैत्य ।
डाहुळिया (१३)—असुर, राक्षस ।
डिगता (२)—डावा-डौल होने वाले । अस्थिर, डिगने वाले ।
डिगपाल (३९)—दिक्पाल ।
डील (५, २५, ५०)—शरीर ।
डूलै (५३)—डोलायमान होता है, डोलायमान हो गया ।
डूलौ (३७)—डावा-डौल हो गया, विभ्रम मे पड गया ।
डोकरा (२७, १०२)—वृद्ध ।
डोकरै (१०२)—वृद्ध, बुढा ।
डोर (१००)—डोरी, गलफास ।
डोह (५३)—विलोडित करके, मथन करके ।
डोहा (१७)—आनन्द ।

ढ

ढळिकिमै (८९)—लुढकेंगे ।
ढाहिया (६०)—मार डाले ।
ढील (९, ९२, ९९, १०२)—विलम्ब, देरी ।
ढेरडा (८६)—ढेर, राशि ।
ढोलण (५)—ढरकाने वाला, ढोलने वाला ।
ढोळिया (८३)—ढरका देना, गिरा देना ।
ढोळै (५८)—गिराता है ।

त

तण (१८)—तनय, पुत्र ।
तणी (८१)—की
तना (६९, ७९, ७५)—तुझको
तण (३, ६९, ७६, ९९, ४८)—तनय, पुत्र की ।
तणा (६, १३, १९, ३१, ४४, ६६)—का, के ।
तणा (६८)—तनय, पुत्र ।
तणा (९, १०, १९, ३६, ४५, ४८, ६६, ६७, ६९, ७५, ७७, ७९, ७४, ८०, ८१, ९१)—के
तणि (६७)—की
तणी (९२, ९४, ९३)—की
तणी (७, १९, २५, ३२, ३५, ३९, ४२, ४७, ६४, ६९, ७०, ७७, ८२, ९०, ९८, १०१, १०२, ९६, १०३)—की
तणों (७७)—के
तणौं (५१, ९, २०, २२, ४४, ६२, ५९, ६३, ५२, ६५, ६७, ६८, ७१, ७९, ८०, ८८, ८२, ९९, ९२, १००)—के

तरणो (१६, ४३, ८२, ८५, ८६)—का

तरणां (२, १३, ६८)—का

तरणौ (६६, ७२, ८४, ८५, ८६, ८३, ७४, ८७, १, ४, ६, १३, १४, १६, २३, २८, ३०, ३१, ३२, ३६, ३८, ३६, ४२, ४४, ६४, ५२, ५८, ६२, ६३, ७८, ७६, ६७, १०१, १००, ६५)—का

तणौ (६१, ६४, ६६)—का

तत (४३, ४५, २५)—तत्व

तना (२२, ३४, ३६, ३७, ६७, ६८, ६७, ६६)—तुझको

तनाई (६६)—तुझको ही।

तना (७६, ७८)—तुझको

तनां (३६)—तुझकों

तवै (५२)—कहते हैं, कहने लगे, स्तवन करने लगे।

तमारा (६१)—तुम्हारे

तमासा (६६)—तमाशा

तनायँ (५६)—खेल, तमाशा।

तमो (५८)—तीन गुणो मे से एक तमोगुण।

तरगस (१२)—तर्कश, तूणीर।

तरा (२२, ३८)—पार हो जायें।

तरिजै (७५)—तैरा जा सके।

तरिया (२, १६, १००)—मोक्ष प्राप्त हुए, तैर गये, पार हो गये, उद्धार पा गये।

तरुआरि (८७)—तलवार

तळातळ (६५)—सात अव लोको मे से एक अव लोक का नाम

तळिया (   )—भून डाले।

तवि (८, ४१)—कहकर

तवै (४४, ४६, ५३)—कहती है, स्तवन करती है, स्तवन करते हैं।

तसलीम (३४)—तस्लीम, प्रणाम।

तही (८४)—के लिए ?

ता (६८)—उन

ताती (१७)—तार वाद्य का, तार।

ताम (६६)—तव, उन।

तामस (४२)—तमो गुण।

ताडका (५५)—यक्ष सुकेनु की कन्या मतान्तर से सुंद नामक दैत्य की कन्या। तथा मारीच सुवाहु की माता, एक प्रसिद्ध राक्षसी।

ताडिका (८१)—दैत्य मारीच और सुवाहु की माता।

ताणिया (८७)—खींचे।

ताम (८६)—तव।

तारण-तरण (१७)—उद्धार करने वाला।

तारहा (२६)—तेरा ।
तारा (६७)—तव, तुझसे ।
तारा (४४)—वानर राज वालि की स्त्री, अंगद की माता, वृहस्पती की दो स्त्रियो मे से दूसरी ।
तारिनै (३०)—तार करके ।
तारिया (६८)—उद्धार किये, पार उतार दिए ।
तारी (५२)—उद्धार किया ।
तारै (४६, ९८)—उद्धार करता है ।
ताळो (७०)—ताला ।
तास (६३, ९६)—उसके, संकट, पीडा
ताह (३८)—उन ।
ताहरा (१०३)—तव, उस समय ।
ताहरा (२०, २९, २८, ३६, ६८)—तेरे तेरा ।
ताहरी (२९, ३६, ४९)—तेरी ।
ताहरं (५०)—तेरे ।
ताहरै (४२, ५०, ७७, ९०)—तेरे ।
ताहरौ (१५, २५, २६, २७, ३७; ९४)—तेरा ।
तिहुँ (१५)—तीनो ।
तिकां (५१, ९८)—उन्हें, उनको ।
तिका (९९)—वह ।
तिके (२, १०२)—वे ।
तिकै (५२, ७१, ७८, ९३)—उस, वे ।
तिको (४२)—वह ।
तिखराव (५९)—तक्षकराज कालीदह के नाग के लिए प्रयोग किया है ।
तिण (५२, ५३, ६६)—उस ।
तिणि (३९, ४९, ८२)—उस ।
तिणिना (१००)—उसको ।
तिणी (६, ५)—की ।
तिणै (१४, ३१, ८७)—के, की ।
तिना (२६)—तुझको ।
तिम (७०)—तैंमे ।
तिमि (२०)—तैसी ।
तिल ' (४६)—तिल, जिसका तेल निकाला जाता है ।
तिलोइ (३९)—तिल मात्र की ।
तिलोई (१०)—तिल मात्र ।
तिसर (५६)—त्रिशरासुर, एक दैत्य ।
तीकम (९)—त्रिविक्रम, वामना वतार का एक नाम, विष्णु का एक नाम ।
तु (४२, ४७)—तू ।
तुड (९१)—मस्तक, शिर ।
तुंवर (२५, ५९)—इकतारा, किन्नर ।
तुसा (१९; ५९, ८०)—तुझसे ।
तुंहारै (७९)—तेरे ।
तुनां (५८, ७५, ७६, ८८)—तुझको ।
तुझ (१९, ३८)—तेरे, तेरी ।

तुड ताण (६८)—अपने दल को अथवा अपने भक्त को अपनी ओर आकर्षण करने वाला, महत्व प्रदान करने वाला। तड या तुड राजस्थानी मे पार्टी या कुटुम्ब-समूह का पर्याय है, अपने कुटुम्ब-समूह या दल को महत्ता प्रदान करने वाला तुडताण कहलाता हैं। यहाँ भक्त-समूह को महत्ता देने वाला, ईश्वर।

तुड़िताण (६, १७, ७५)—अपने कुल (तुड या तड) या दल का महत्व बढाने वाला, समर्थ।

तुठी (२०)—तुष्ठ मान हुई।

तुठौ (८८)—तुष्ठमान हुआ।

तणा (६६)—के

तुना (४०, ४२)—तुझको।

तुनै (३६)—तुझको।

तुरगम (४)—घोडा।

तुरगम-कंव = हयग्रीवावतार।

तुरकणी (१४)—यवन स्त्री।

तुरत (७६)—तुरन्त, शीघ्र।

तुरी (११)—घोडा।

तुलछी (४१)—तुलसी।

तुहाइलौ (७५)—तेरा।

तुहारा (२०, ३४, ४३, ४४, ७५, ६७, ६६)—तेरा।

तुहारी (४, ५, ३२, ३४, ४२, ४८, ७५)—तेरी, तुम्हारी।

तुहारै (८३, ८१)—तेरे, तुम्हारे।

तुहारौ (६, २३, २७, ७४, ७५, ६६)—तेरा, तुम्हारा।

तूं (३४, ३८, ४६, ६८, ७२)—तू।

तूझ (३३, ३५, ३८, ६८) - तुझको, तुझसे, तेरा, तेरे।

तूठसी (७०)—तुष्ठमान होंगे।

तूठा (७०)—तुष्ठमान हुए।

तूठौ (१७, ५६, ६६, ६५)—तुष्ठमान हुआ।

तूनां (३७, ४८, ६८, १००)—तेरी, तुझको।

तूसा (३६)—तुझ मे।

तूसे (२०)—तुष्ठमान हो।

तैं (२१, ४८, ८४)—तू ने।

तेजालू (११)—तेजस्वी, तेज वाला।

तेड (६०) - बुलाकर।

तेडस्यै (६४)—बुलाएगा, बुलवाएगा।

तेडावै (१४)—बुलवाइए।

तेडौ (१४)—बुलावा।

तेतौ (४६)—इतना, उतना।

तैं (१६, २३, ५३, ६६)—तेरे, तूने।

तैईज (५८)—तूने ही।

तैंही (१६,—तूने ही।

तैंहीज (६६)—तूने ही।

तैं (६१, ८४, ८७, ६५)—तूने।

तोइ (४०)—तो भी।

तोडै (३२)—सहार कर देता है।

तौ (२)—तेरा।

तोनां (६८, ७४)—तुझको।

तोनूं (३४)—तुझको।

तोफान (८९)—असुर, उत्पात, उपद्रव।

तोफान (३२, ७३, ८५)—उत्पात, उपद्रव, तूफान।

तोफी (५३)—उत्तम, वढिया, आश्चर्य का कार्य।

तोव (६१, ७६)—देखो तोवा।

तोवह (३८, ३९, ४८, ५०, ५९, ९७) अनुचित कार्य को भविष्य मे न करने की शपथ, दीनतापूर्ण पुकार।

तोरल (१५)—एक भक्त स्त्री का नाम जो रावल मल्लिनाथ के समकालीन थी।

तोसा (७)—तुझसे।

तोहा (६८)—तुझसे।

तौ (२०, १०१)—तू।

तौवह (७, २६, ६२, ७६)—है, तोवह।

त्या (२)—उन, उन्होंने।

त्रड त्रड (९१)—प्रहार की ध्वनि।

त्राहि (५२)—रक्षा, बचाओ।

त्रिगडां (६६, ९१)—एक प्रकार का शस्त्र विशेप, तलवार विशेप।

त्रिघ (५)—नीधि।

त्रिणावत (८३)—तिनके के समान।

त्रिधार (१२)—तीन पैनी धारा का भाला विशेष।

त्रिधारा (६६)-एक प्रकार का भाला।

त्रिधारै (३२)—तीन धार का।

त्रिविध (४२)—तीन प्रकार।

त्रिसर (८२)—रावण का भाई, एक असुर जो खर-दूषण के साथ दडका वन मे रहता था, त्रिशरासुर।

त्रिसळै (९४)—कोप के समय, लिलाट मे पडने वाले तीन सिलावट या वल।

त्रिसिधि (१८)—समर्थ, शक्तिशाली।

त्रिहलोक (९७)—तीन लोक, त्रिलोक,

त्रीग्र (४४)—तीन।

त्रीकम (८, १००)-त्रिविक्रम, वामनावतार, विष्णु का एक नाम।

त्रीकमा (११, ३४, ६९)—त्रिविक्रम, विष्णु का एक नाम, वामनावतार।

त्रीकमा (४०, ६९, ७४, ७५, ८४, ९४, १०३)—त्रिविक्रम, विष्णु, वामनावतार ईश्वर।

त्रीकमो (९७)—त्रिविक्रम, वामनावतार विष्णु।

त्रुटा (१६)—नाश हो गये ।
त्रेभुमण (३६, ४७)—त्रिभुवन ।
त्रेवइ (३७, १५)—तीन ही ।
त्रोटो (३८, ४२)–अभाव, कमी, टोटा ।
त्रोंडिया (१३)—काटा डाला, तोडा ।
त्रोडियो (८३)—तोड वाला ।
त्रोडीया (८३)–तोड डाले, मार डाले ।

थ

थमीयौ (६४)—रुका, रोका ।
थओ (५५)—हुआ
थपावि (९२)—स्थापित करायेगा ।
थयो (५६)—हुआ
थले (८६)—स्थल, रेगिस्तान ।
थाभौ (१००)—स्तभ
थाहरा (१०१)—स्थानो
थापि ३७, ९६)—स्थापित करके, स्थापन करिये ।
थापिया (७८, ८७)– स्थापित करिये ।
थापै (३२, १००)—स्थापित किया, रखे स्थापित किये ।
थायौ (१००)—रक्षा की
थारा (७, ३६, ३७, ४१, ५३, ५४, ६६, ७५, ७७, ८०, ८१, ८५, ९७, १०२)—तेरा, तेरे ।
थारी (१०, ३६, ५३, ७७, ७८, ७६, ८०, ८१, ९५, ६७, ६८, ६६, १०२)—तेरी
थारै (७३, ७४, १०३, ५१)—तेरे
थारो (२, ३, ६. १०, १६, २३, २६, ३५, ७६, ६८, ६६, १००, १०१)—तेरा
थावर (४०)—स्थावर
थाविरे (३२) – स्थान पर ।
थाहर (१०१)—स्थान ।
थाहरीयौ (४०)—ठहरा हुआ, स्थित ।
थाहरै (२६)—तेरा
थिया (८६) – हुए
थिरि (४०)—स्थिर
थी (१००)—मे
थुआँ (८४)—संपति, धन, माया ।
थुळ-थुळा (८४)—असुर, दुष्ट ।
थूळ (७८, ६४, ७३)—असुर, दुष्ट, मूरख, स्थूल ।
थे (१०२)—आप
थै ही (१०३)—तू ने ही
थोक (४७, ३६, ३७, ४, ४०)—प्रकार, पदार्थ, तरह ।
थोका (७)—पदार्थों, कार्यों ।

द

दंड (१६)—डडा, प्रताप, भय ।
दंन (७४)—१. दान, २. दिन ।
दइवांण (१४) ईश्वर
दई (४७)—दैव, ईश्वर, दी ।
दईत (१५, ८३)—दैत्य

दईता (६८, १००, १०१)—दैत्यो, दैत्य ।

दईव (१०, ३६, ५५)–श्रीराम, विष्णु ईश्वर ।

दईवाण (६८) – वीर ।

दड दड (६१)—गिरने की ध्वनि, गिरने की क्रिया ।

दडदड (८७)— गिर पडे, लुढक गये ।

दडै (५६) – गेंद, वडी गेंद ।

दत (३, ६, २८)—दत्तात्रय ऋषि ।

दधि (५०, ७७, ६२)—उदधि, समुद्र ।

दमाम (६६)—ढोल विशेष ।

दमोदर (५)—दामोदर, श्रीकृष्ण ।

दरगहि (७)—दरवार ।

दरसण (६७)—दर्शन, झाँकी ।

दरसै (५१)—दिखाई देते हैं ।

दरिसण (४५)—दर्शन, दार्शनिक, सिद्धान्त, धर्म सम्वन्धी ज्ञान ।

दरीयाऊ (७५)—समुद्र ।

दळ (५४, ८६) – सेना ।

दळिदि (६५)—दारिद्रय, कगाली ।

दळिद्र (१०३)—कंगाली ।

दळिया (२०, २१)—ध्वस कर दिये, नाश कर दिये, संहार किए ।

दळेवा (६)—ध्वस करने को ।

दळै (६३)—ध्वस किए ।

दव (६७)—कोपाग्नि ।

दशरथ (१, २, ३, ६, ८, ५५, ५६, ६६, ७६, ८१)—सूर्यवशी राजा दशरथ ।

दहकव (६, ६०)—रावण, दशस्कध, दशानन ।

दहन (६६)—अग्नि, आग ।

दहसीस (५६) रावण ।

दहि (७२)—भस्म कर ।

दहियौ (६५)—नाश, ध्वस ।

दही (५६) – नाश करदी, जला दी ।

दहे (६२, ६३)—भस्म कर दिये ।

दहै (१०३)—ध्वंस होते हैं, नाश करता है ।

दांण (५, ६८)—टैक्स ।

दाणव (५७)—असुर, दानव ।

दाणवे (६१ —दानव

दाम (६६) – दाम, रुपये-पैसे ।

दाइ (२०, ५१)—पसन्द

दाइम (६४)—१ सर्व शक्तिमान, २. अपनी इच्छानुसार करने वाला

दाख (३७)—कह

दाखवि (६६)

दाखा (३०, २८)—दहते है, कहता हूँ

दाखि (३७)—कहिए

दाखीजे ( )—कहिए

दाखीजै (४३)—कहिए, कहा जाता है

दाखे (२२)—कहता है

दाखै (११, २५, ३३, ३७, ३८, ६१, ६२, ७५, १००)—कहता है, कहती है, कहते हैं।

दाट (६)—गाडना, वधन करना, काटना।

दाटिया (६८)—दबा डाले।

दाढा (२८)—दष्ट्रा

दाढि (५०)—दष्ट्रा, दाढ।

दाण (८३)—कर, टैक्स।

दातार (३५, ३७)—देने वाला

दात्रिडिग्राल (६४)—सुग्रर

दाळिद (११)—दारिद्र

दावै (७७) कारण

दास (३४, ३७)—गुलाम, अनुचर

दाह (६८)—जलन

दिखाळै (५८)—दिखाता है।

दिखाळी (१०१) दिखाई

दिणीअर (६१)—सूर्य

दिनि (१०२)—दिनि मे, दिवस मे।

दियण (५५)—देने को

दियै (३६, ५२ – देता, देकर।

दिलि (१९)—दल, सेना।

दिवै (२८)—देता है।

दिसडी (९)—दिसा, तरफ, ओर।

दिसी (१०३)—दिशा मे, तरफ ओर

दिसै (१०१, ३१)—दिखाई देते हैं।

दिसो (६)—तरफ, ओर।

दीकरा (६९, ८३ —पुत्र, लडका।

दीकरौ (८२, ९३)—पुत्र

दीजै (३८)—दीजिए

दीजो (१९)—दीजिए

दीठा (९७)—देखे

दीठो (३४)—देखा

दीठौ (५१, ७९, ९७)—देखा

दीध (४) ?

दीध (८१)—देदी, दी।

दीधौ (२८)—दिया

दीनदयाळ (६०)—दीनो पर दया करने वाला।

दीनादयाळ (३६)—दीनों पर दया करने वाला।

दीन्हा (१४, ८७)—दिया, दे दिए।

दीन्ही (६२, ५९)—दे दी।

दीन्हौं (११)—दिया

दीयै (३४)—दीजिए

दीवलो (१०)—दीपक, प्रकाश।

दीवाण (३६, ९८)—वजीर, मत्री।

दीसै (१०, ३१, ४८)—दिखाई देता है

दीह (४, ३९, ४८, ५१, ५२, ७१, ८०, ६४, ७२, ९२, १०२)—दिवस, दिन, देवता।

दुगम (७)—दुर्गम।

दुज (३६)—द्विज, ब्राह्मण।

दुजा (४८)—द्विजो, ब्राह्मणो।

दुझाल (१७)—वीर।

दुंडिदै (६८)—सूर्य ।
दुडिदि (४६)—सूर्य ।
दुतर (७५, ३८)—दुस्तर, कठिन ।
दुमेल (५०, ६४, १०१)—शत्रुता, वैमनस्य ।
दुरजोव (६२)—दुर्योधन ।
दुरवळ (३४)—दुर्बल, अशक्त ।
दुवारिका (६६)—द्वारका ।
दुसटिश्रा (३०)—दुष्टो ।
दुहतै (५४)—दोहन करते समय, दोहने पर ।
दूआ (८५)—दूहा कहना, दूआ देना, प्रशसा करना ।
दूपरा (५६)—एक दैत्य ।
दूषर (६)—रावण का भाई दूपण ।
दूजा (२०)—दूसरो ।
दूजै (२५)—दूसरो से ।
दे (३८)—प्रदान करो, दो ।
देखै (४४)—देखते हैं ।
देजा (५५)—द्विजो ।
देव (३६, ४५)—देवता ।
देवकी (५८)—मथुरा के महाराज उग्रसेन के छोटे भाई वसुदेव की स्त्री तथा कृष्ण की माता ।
देवळै (७०)—देवालय, मदिर ।
देवाइचि (१५)—एक भक्त स्त्री का नाम ।
देवाधिदेव (३७)—महान देव, ईश्वर, विष्णु ।
देवाळी (७०)—अभाव, कमी ।
देसै (१०२)—देंगे ।
देह (३५)—शरीर ।
दै (३८)—दो, प्रदान करो ।
दैत (२०, ३०, १००)—दैत्य, असुर ।
दैता (६)—दैत्यो ।
दोइ (३७)—दो ।
दोख (६२)—दोष ।
दोटि (८५)—बले की टक्कर ?
दोटिया (६३)—मार डाले, जमीदोज कर दिये ।
दोटोह (१०)—टक्कर, आघात ।
दोरा (७५)—कष्ट मे ।
दोरी (१५, ७५)—कठिन, मुश्किल, दुख मे, कष्ट मे ।
द्यो (३५)—दीजिए ?
द्रोण (६२)—द्रोणाचार्य ।

घ

घकैहा (६१)—अगाडी से ।
घख-पख (२१)—गरुड ।
घख-पख-ध्वज (७८)—गरुडध्वज ।
घडक्कै (६६)—कंपायमान होते हैं ।
घडा (६६)—शरीरो ।
घणियांणी (१६)—स्वामी, मालिक ।
घणीयाणी (२२)—स्वामिनी ।

धनख (६१)—धनुष ।
धनी (१०२)—धन्य, धनवान ।
धनुपधर (३६)—धनुष को धारण करने वाला ।
धर (८८)—भूमि, स्थान ।
धरण (४७)—पृथ्वी
धरणि (४७)—भूमि, पृथ्वी ।
धरणी (३८)—पृथ्वी
धरणीधर (४७, ९३, १००)—धरणी को धारण करने वाला, विष्णु, शिव शेष, कच्छप आदि
धरणँ (२१)—अनशन विशेष
धरम (४१, ६८, १०१)—धर्म
धरि (३८)—धारण करके ।
धरिण (८६)—पृथ्वी
धरियौ (५५)—ग्रहण किया ।
धरिसै (८६)—धारण करेगी ।
धरै (४७, ५२)—धारन करता है, रख दिया ।
धवै (५८)—जलावे, जलाये ।
धाखै (२६)—अभिलाषा करते है ।
धाडि (५०)—शरीर ?
धाताँ (३६)—ध्यान करने पर, दौडने पर ।
धानंतर (३)—धन्वंतरि वैद्य ।
धानु (४५)—अनाज
धारी (१०३)—धारण करने वाले ।
धारुआ (१६)—धारु नामक चमार जो मल्लिनाथ के समकालीन थे ।
धिखीयो (८०, ८२)—कोप किया, क्षुब्ध हुआ ।
धिणिया (२१)—स्वामियो
धिणी (६२, ६४)—स्वामी
धिणी (७, १६, २०, ४८, ६१, ६६, १००)—स्वामी, मालिक ।
धिणीया (१६)—स्वामियो, मालिको ।
धिणीयाणी (२०)-स्वामिनी, मालिक ।
धिणीयाणी (२१)-स्वामिनी, मालकिन
धिरिणि (८६)—धर, पृथ्वी ।
धीक (६१, ८७)—मुष्ठिका प्रहार ।
धुणिसँ (१२)—घुमाएगा
धुवै (८६)—बजे, ध्वनिमान हुए ।
धू धडँ (८५)—खुले आम, पूर्ण ।
धूजि (६४) – कपायमान हुई ।
धूत (४) – धूर्त
धूवका (६६, ८७) — गिरने की ध्वनि, गिरने की क्रिया ।
धूवकाई (६७)—प्रहार किया, गिरा दिया ।
धेन (६२)—धेनु, गाय ।
धेनां (१४)—गाये
धोख (८७)—नमस्कार करके ।
धोमरिखा (१४)—धौम्य ऋषि ।
धौड (३६)—दौड, पहुँच ।

ध्रम (५, ७, १००, १०२)—धर्म

ध्रवसै (६५)—मारेंगे, नहार करेंगे, पीटेंगे।

ध्रवै (४२)—तृप्त करता है।

ध्रवौ (१०२)—१ संतुष्ट करो २. भगाओ।

ध्राख (८६)– द्राक्षा, दाख।

ध्रापसै (८५)—तृप्त होंगे, पवारेंगे।

ध्रिनि (४९)—१ धरणी २ वन्य।

ध्रोख (४९)—१. द्रोह, २. प्रणाम।

न

नद (४, ५, ४७, ५८, ५९, ६०, ५२, ६३, ८३)– गोकुल के गोपों में मुखिया, यशोदा के पति का नाम, पुत्र, कृष्ण के पिता वसुदेव के सखा।

नंदकुआर (९८)—श्रीकृष्ण

नदरो (८३)—नद का

नन (३९)—नही-नही।

न (४४, ४५, ४६)—नहीं

नइरिण (४१)—नयन, नेत्र।

नइणे (१५)—नयन, नेत्र।

नई (४८)—नही

न करण (४०)—नही करने वाला, नही करने योग्य।

नखतैत (५)—नक्षत्रवारी, जिसका श्रेष्ठ नक्षत्र मे जन्म हुआ हो, भाग्यशाली।

नग (४६)—रत्न

नदि (५०)—नदी

न दै (१०२)—नही देता है।

नभ (६९)—आकाश

नमै (२०)—नमस्कार करते हैं।

नमो (३४, ३५, ३६)—नमस्कार है।

नरदं (९८)—नरेन्द्र, राजा।

नर (४१)—रत्न, मणि।

नरकासुर (५, ६३, १००, १०१)—एक असुर का नाम।

नरनाह (८२)—नरनाथ, राजा।

नरमध (५३)—नृसिंहावतार।

नरसिंघ (६, १८, ३६, ४०, ९४)—नृसिंहावतार।

नरसीघ (३९)—नृसिंहावतार।

नरहर (३८, ३३, ३९, ४३)—नरहरि, नृसिंहावतार, वारहठ नरहर दास, विष्णु।

नरानाह (४६)—राजा, नरनाथ।

नरा (४०)—नर, मनुष्य।

नरिंदि (७९)—नरेंद्र राजा।

नरिंदु (२९)—नरेंद्र, राजा।

नरिंदि (४०)—नरेंद्र, ईश्वर।

नरेस (३६)—नरेश, राजा।

नरेसर (३३)—नरेश्वर।

नव (६३)—नौ, नए।

नवइ (२६)—नमस्कार करके भी करते हैं।

नव कुळी (४८)—नौ कुल—राजस्थान

मे नागो के नौकुल माने जाते हैं।

नवनाथ (१०)—नौ नाथ

नवसै (५७)—नौ सौ

नवा (३३)—नौ

नवि (५०)—नही

नवै (१०२)—नया

नह (२७, ३६, ४०, ४१, ४६, ४८, ५१, ६८, ६६, ७३)—नही।

ना (१, ५, ३, ११, १७, २३, २६, ३०, ३३, ३४, ४१, ४२, ४४, ४७, ४८, ५१, ५५, ५६, ६०, ७५, ६४, ८३, ६६, ६७, १००, १०१, १०२, १०३)—को।

नाउ (७६)—नाम, यश।

नाऊ (७५)—नाम

नाखि (७, १०३)—डाल दे, डालकर।

नाखै (२६)—डालता है

नामडा (७६)—नाम

ना (१०, ८२)—की

नाउ (५४—१. नाव, २. नाम।

नाकारा (१७)—नही

नाखि (५७)—डालकर

नाखै (६६, ६८, ७७)—डालते हैं, डालेंगे।

नाग (५६)—कालीदह का नाग

नागा (६१)—नागो, सर्पों (६१)।

नागेंद्र (३६)—नागो (सर्पों) का इन्द्र (स्वामी)।

नाज (६६)—अनाज

नाडि (५०)—नाडी

नाथ (३४)—स्वामी

नाथरण-नाग (५)—नाग को नाथने वाला, श्रीकृष्ण।

नाद (६६)—गर्व

नान्हिया (५८)—छोटा, लघु।

नान्हीओ (२७)—छोटा, लघु।

नान्हो (४)—छोटा, लघु।

नान्हौ (७, ३७)—छोटा, लघु।

नाभ (४३)—नाभि

नाभि-सुत (३६)—राजा नाभि के सुत, ऋषभदेव।

नामै (१३)—नमन करता है, नमाता है, झुकाता है।

नार (६७)—स्त्री, नारी।

नारगी (२६)—नर्क

नारद (१, २, १०, ४४, ६०, ६५, ७८, ८६)—नारद ऋषि।

नारसिंघ (५३, ६६) नृसिंहावतार।

नारसींग (७६)—नृसिंहावतार

नारसी (८०)—नृसिंहावतार

नारसिंघ (६१)—नृसिंहावतार

नारीयरण (३६, ६६, ७४, ७७, ७८, ६७)—नारायरण।

नावै (२०, ३५, ३६)—नही आती है. नही प्राप्त हो, नही प्राप्त होते हैं।

नासति (४८)—१ नाश होता है, २ जिसका अस्तित्व नही, नास्ति।

नाह (४६, ६३, ८२, ६२)—नाथ, स्वामी, इसे नर-नाह लिखना ठीक है।

नाहरू (७६)—नाहर, सिंह।

निकलक (८७, ३, १०, ३३, ३६, ४४)—निष्कलक, पवित्र।

निकलकी (५)—पवित्र

निका (४८)—श्रेष्ठ, उत्तम, पवित्र।

निकीयौ (४७)—नही किया

निको (४१, ४८, ४६)—नही कोई, श्रेष्ठ।

निगरव (५७)—गर्व रहित

चिगुरा (११)—कृतघ्नो, गुरु का उपकार न मानने वाले।

निगुरी (४६)—निर्गुण

निचिंता (१६)—निश्चित

निजरि (५३)—नजर, दृष्ठि।

निजार (५, १०, १२, फा० निज़ार)—नज्जार, दर्शन, दीदार।

निजारसाह (६८)—निजारसाह

निजारी (३३)—अविनाशी

निजि (३६, ४४)—निज, स्वयं।

निति (४१, ४३, १०३)—नित्य

निध (६६)—निधि

निनाम (३६)—जिसका कोई नाम न हो।

निपट (४१)—वहुत

निपाइयौ (६६)—उत्पन्न करेंगे, निष्पन्न करेंगे।

निपाया (२०, २१, ५०)—उत्पन्न किए।

निबळा (४८)—निर्बलो, अशक्त।

निबळौ (७०)—निर्बल, कमजोर।

निभै (५६, ५६, ७७, ८४)—निर्भय।

निमध (८१)—बांध, घाट।

निमस्कार (२७)—नमस्कार

निर्मिधयौ ( )—रचा, बनाया।

निमिरिण (८१)—नमस्कार, नमन।

निमिष (५४)—निमिप, जरा, किंचित।

निमो (२३, १६, २०, २१, २४, ३३, ३७, ४२, ४६, ५८, ७३, ८१, ८४, ६७, ६६, १००, १०१)—नमस्कार।

नियावा (३०)—१ न्याय २ न्यायकारी।

नियारि (१६)—निगाह।

निरकार (३६, ६८, १००)—जिसका कोई आकार न हो, ब्रह्म विष्णु, आकाश।

नु (१०३)—नु
नुहै (३८)—नवीन ?
नूं (१, ५३)—को
नूर (३३, ३७, ६१, ८६) काति, आभा, दीप्ति, सुन्दरता ।
नेतळ दे (१५)—
नेम (५६, ६३)—घर, भुवन ।
नेह (३५)—स्नेह
नै (२, १७, ४४, ५२, ५३ —को, और ।
नैडै (७०)—निकट
नैण (३६)—नयन, नेत्र ।
नो (५६)—को
न्याउ (१३)—न्याय ?
न्यारी (३५, ४१)—पृथक ।

प

पंगरण (३६, ४३, ६१, ८४)—वस्त्र, कपडे ।
पंचाळी (५, ६२, ७२, ८४, ६८)—द्रौपदी ।
पंजाहर (६६)—१ योद्धा, २ यवन ।
पंड (६८)—शरीर
पख (१०२)—पक्ष
पखाळै (२४)—प्रक्षालन करते हैं, प्रक्षालन करता है ।
पग (४७, ६७)—पैर, चरण ।
पच्छिमी (२२)—पश्चिमी ।
पछाणै (२)—पहिचान लेते हैं ।
पछाडि (२२)—पटककर, पछाडकर ।
पछाडिया (१५)—पराजित किए, मार डाले ।
पछाडै (३०, ५२)—मारता है, मार दिए ।
पछि (६१)—पश्चिम ।
पछै (५२)—पश्चात्, वाद मे ।
पटराणी (१०१)—पद महिषी ।
पठाया (५०)—भेजे
पडमादा (६६)—प्रति शब्द, प्रति ध्वनि ।
पडिमै (६६)—वीरगति को प्राप्त होगे
पढि (३६)—पढकर ।
पण (७१)—प्रण, प्रतिज्ञा ।
पणिजै (६७)—कहा जाता है ।
पणीजै (४६ —कहा जाता है, कहिये ।
पणै (३२, ४३, ८८, ६२, ६७)—कहता है।
पतरे (१६)—खप्पर मे ।
पताळ (२४)—अव लोक ।
पतिगह (३१)—पतग, सूर्य ।
पतिसाह (४२, ४७, ७४)—बादशाह, पादशाह, स्वामी, पति ।
पतिसाहना (४५)—बादशाह के ।
पतीगह (३७)—पातक, पाप ।
पतीत (७१)—नीच, अधोगति प्राप्त ।
पथळ (६८)—अधिक, वहुत ।

पलाणि (६०)—घोडे पर जीणकर ।

पला (१०, १०३)—वस्त्र, छोर, आंचल ।

पळिया (२१)—पालन पोषण किया ।

प्वग (६५, ६०)—घोडा ।

पवन (३७)—वायु ।

पवाडा (१६)—महान कार्य, प्रवाडा

पवाडै (८१)—प्रवाडा ।

पविगि (८४)—घोडा ।

पसाउ (७४)—प्रसाद' कृपा ।

पसारै (६६)—फैला दिए ।

पहचि (३८, ४६, ५०)—शक्ति, पहुँच

पह्ची (७७)—पहुँच, शक्ति ।

पहप (६५)—पुष्प, फूल ।

पहर (३४)—प्रहर ।

पहलाद (६८, ६४)—प्रहलाद ।

पहवि (६७)—पृथ्वी ।

पहार (३६, ७४ म० प्रहार)—मिटाना प्रहार, ध्वम ।

पळाविजै (१०३) – पालन किया जाय, पाला जाय, पालन कर सकें ।

पह्राइमी (११)—पहिनाओगे ।

पहिलडै (८१)—प्रथम ।

पह्लाद (५३, ६८, ६६, २८, ६, २, २४, ५३, ६६, ७०, ७२, ६६, ८०)—भक्त प्रह्लाद ।

पहिळादा (२२)—प्रह्लाद ।

पह्लि (७४, ६०)—प्रथम ।

पहुवी (३२)—पृथ्वी ।

पाडव (६६, ६६)—पाडु, पुत्र, अर्जुन भीमादि ।

पांति (५, ६४)—विभाग, हिस्सा ।

पातिग (३६)—पातक, पाप ।

पाई (६७)—प्राप्त की ।

पाउ (२४, ५४, ७७, १०१)—पाद, चरण ।

पाछा (६२)—वापिस ।

पाज (६, ५७, ६६)—सेतु, पुल ।

पाजा (६२)—सेतु, मर्यादा ।

पाट (६, ३३)—सिंहासन ।

पाटि (८८,—सिंहासन ।

पाडळ (५, ६२)—पाटल वृक्ष, पाढर या पाटल का वृक्ष जिसके पत्ते वेल के समान होते हैं।

पाडि (५६)—गिराकर, मारकर ।

पाडीया (६१)—गिरा दिए ।

पाढां (२८)—पहाडो से ?

पातिक पहार (३६, स० प्रहार)—पातक या पापो का नाश करने वाला ।

पातिग (२२, ३३, ७०, ७३, ७४, ७८, ७६, ८८, ८६)—पाप, पातक ।

पातिगनां (१००)—पावक ।

पातिगि (७१, ७६, १०१)—पातक, पाप ।

पिरणीजै (३२)—विवाह करिए।
पिरिण (३२)—विवाह किया।
पिरिणि (३७)—विवाह कर।
पिरिणियो (९७)—विवाह किया, पाणि-ग्रहण किया।
पिलाणियौ (११)—वारजामा कस कर, तैयार किया।
पीपळ (९६)—पीपल वृक्ष।
पींपळ (३१)—पीपळ
पीतर (१३)—पितृ-गण।
पीधा (१९)—पी लिया।
पीर (३, १०, ११, ७३, ७७, ८५, ८९, ९०, ९६)—पीरदान लालस।
पीरजादा (८९)—किसी पीर का वशज।
पीरदान (४४, ५९, ९०, ९५, ९६)—पीरदान लालस।
पीरदान (९, ४५, ५७)—कवि पीरदान लालस।
पीरदास (१, २, ३७, ६९, ७०, ७१, ७२, ७४, ९३)—कवि पीरदान लालस।
पीराणा (३१)—पीर, वृद्ध।
पीराह (१०)—पीर, महात्मा, सिद्ध।
पीरि (८८)—पीरदान लालस।
पीरिया (९५)—भक्त कवि पीरदान।
पीरीयै (१०)—पीरदान लालस।
पीरै (७५)—पीरदान लालस।
पीरो (७८)—पीरदान लालस।
पीलिरा (९०)—मार डाले।
पीलिसै (९९)—पीलेंगे
पुड (८६)—पर्त, तह।
पुणै (११, ५३, ९०)—कहता है।
पुतरी (२०)—पुत्री
पुत्रेई (९७)—पुत्र की।
पुन (३७)—पुण्य, फिर ?
पुन (१०२)—पुण्य
पुनि (५४)—पुण्य, पुण्य कार्य।
पुरख (२७)—पुरुष
पुराण (३७)—मनुष्यो, देवताओ दानवो आदि की वे कथायें जो परम्परा से चली आ रही हो।
पुराणा (१०२)—प्राचीन, पुराना।
पुरातम (४, ४६, ४९ सं० पुरातन)—विष्णु का नामान्तर, प्राचीन, पुराना।
पुरिसोत्तमा (७५)—पुरुषोत्तम।
पुरुषोत्तम (४६)—ईश्वर, पुरुषो मे उत्तम।
पुलदर (१, २५)—इन्द्र
पुलिंदर (२, ५५)—पुरदर, इन्द्र।
पूंजळदे (१५)—एक स्त्री का नाम।
पूछाडिसै (११)—पूछवायेंगे।
पूठि (४१)—पीछे
पूत (३६)—पुत्र, लडका।

पूतना (५८, ८३)—अघासुर तथा वकासुर की वहन, एक राक्षसी जिसे कस ने श्रीकृष्ण का वध करने को गोकुल मे भेजा था।

पूरि (३७)—पूर्ण करिए।

पूरिया (६२)—पूर्ण किये।

पूरिजै (२)—पूर्ण कीजिये।

पूरौ (३२)—पूर्ण करना, भरना।

पेख (८८)—देखकर

पेखि (५५)—देखकर

पेखियो (६२)—देखा

पेखियौ (६०)—देखा

पेखीयौ (८२)—देखा

पेट (४)—सृजन शक्ति, पेट।

पेड़ (१२)—जड

पैकंवरा (२५)—ईश्वर दूत, अवतार

पैठिसै (२१)—प्रतिष्ठा करेगी।

पैठौ (६४)—प्रविष्ठ हुआ।

पैहलाद (४४, १०३)—प्रह्लाद

पोखिया (६२)—पोषण किये।

पोखीया (५७)—पोषण किया, भोजन खिलाया।

पोढेरा (७)—वहुन, ज्ञानवृद्ध।

पोरस (६८)—पौरुप

पोहचाडिया (६३)—पहुँचा दिये।

पौरसे (३०)—पौरुष

पौरिस (३८, ५५)—पौरुप, शक्ति।

पौरिसि (५२)—पौरुप

प्रगट्टे (५३)—प्रकट हुए।

प्रघट (६०)—प्रकट

प्रघळ (६, १४, १५, ३८, २०, २२, २५, ३१, ४७, ५३, ५५, ६२, ६५, ६७, ७०, ७१, ७२, ८४, ८६, ६२)—पुष्कल, अपार, काफी, वहुत, असीम।

प्रघळा (१५, १६, १०२)—पुष्कल, वहुत, अपार, प्रवल, समर्थ।

प्रघळि (८७)—वहुत

प्रणमंति (३६)—प्रणाम करते हैं।

प्रतिपाळ (१०२)—रक्षा

प्रथमी (३०)—पृथ्वी

प्रथळ (३ स० पृथु-पथु+रा० प्र० ल वहुत, अधिक, चारो ओर फैला हुआ, विस्तृत, प्रथु, पृथु

प्रथिमि (१)—प्रथम, पहले।

प्रथिमी (१, ९२)—प्रथम

प्रवोव (४४)—शिक्षा

प्रभ (१४, २४, ३२, ४१, ४७, ६३, ७५)—प्रभु, ईश्वर।

प्रभु (३३)—प्रभू, ईश्वर।

प्रभूत (४६)—उद्गत, निकला हुआ, उत्पन्न, विशाल, महान, अधिष्ठाता।

प्रभूरो (८३)—श्रीकृष्ण

प्रम (७, २५, ६७, १०१)—परम, महान, ईश्वर ।

प्रमाण (५१)—समान

प्रमेसं (३०)—परमेश्वर

प्रमेसर (४, ७, ८, १०२)—परमेश्वर

प्रम्म (३६) – परम, ईश्वर ।

प्रयाग (५१)—तीर्थराज प्रयाग

प्रवाडा (५, ८४)—महान और चमत्कार पूर्ण कार्य ।

प्रवाडा (१७, ६३)—महान कार्य ।

प्रविति (८३)—पवित्र

प्रवीत (२)—पवित्र

प्रवीति (३०, ३१)—पवित्र

प्रवेस (३५)—प्रवेश

प्रसासुरा (१०३)—दैत्य

प्राखि (१३)

प्राघण (१००)—वेढ प्राखणी अथवा पाखणी यह मुहावरा है जिसका अर्थ स्वागत करना और व्यग मे, मारना और पीटना भी होता है ।

प्राभसैं (६५)—प्राप्त करेंगे ।

प्रामिजै (४०)—प्राप्त किये गए ।

प्रामिसै (८५, १०२)—प्राप्त करेगी या करेंगे ।

प्रामीयौ (६६)—प्राप्त किया ।

प्राखड (९३)—पाखण्ड ।

प्राखिडिया (११)—१. अश्वारोही २. सम्मान करने वाले ।

प्राखियौ (८६)—स्वागत करेंगे ।

प्राजी (८६)—सेवक, दास ।

प्रामी (६)—प्राप्त की ।

प्रामै (४३)—प्राप्त करता है ।

प्रास (५, ६, ३७, ५०, ९९)—पाश, वंधन ।

प्राहुणा (८१)—महमान, प्राघुण ।

प्राहणी (७७, ८६)—महमान ।

प्राहुणा (८४)—महमान ।

प्रिथमादि (२८)—पृथ्व्यादि ।

प्रीतवर (९७)—पीताम्वर ।

प्रीतवर (४३)—पिताम्वर ।

प्रीतम (३५)—प्रियतम, प्यारा वल्लभा

प्रीता (९३)—प्रीति ।

प्रैज (६७)—प्रजा ।

प्रोकि (५३)—तोरणद्वार ।

फ

फट्टे (५३)—फट गया है ।

फतै (२१)—विजय ।

फवै (९२)—शोभा देते हैं ।

फरस (६)—परशुराम ।

फरसराम (९९)—परशुराम ।

फरसराम (३, ३९)—परशुराम ।

फरसा (५५)—परशुराम ।

फरसि (५५)—परशु ।

फरसिराम (२९)—परशुराम ।

फरहर (९२)—हवा मे इधर उधर ध्वजा के होने की क्रिया ।

फळी (८६)—फलीभूत हुई
नोट—फळणो क्रिया का भूत-कालिक प्रयोग है।
फाविति (४३)—सुशोभित हो रहे है।
फावियो (३)—सुशोभित हुआ।
फाविमै (६६)—शोभित होगे।
फुलाणिया (८६)—फूल दल हुई।
फुलिंदर (६६)—पुरंदर, इन्द्र।
फेरा (१७, १८)—दफा, वार।
फेसि (११)—फोडना, तोडना।
फोडै (४७)—फोडता है।
फौतङ्करा (८२)—मौत के ?

व

वछासुर (४)—वत्सासुर नाम का एक दैत्य जिसको कृष्ण ने वाल्यावस्था मे ही मार डाला था।
वंधव (५७)—भाई।
वंभ (३५, ४०, ४२, ७३)—ब्रह्मा।
वभेमर (४)—ब्रह्मा।
वकै (११, ४४—वकती है, कहती है
वखाणै (१, ६) वर्णन करते हैं, यश-गान करते हैं।
वगस सै (६४)—प्रदान करेगा।
वगासुर (४, ५६)—वकासुर नामक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था।
वघ वाणी (३८)—जिसका सिंह वाहन है।

वजरि (८०)—वज्र, वज्र जैसा।
वजाडी (२)—वजाई, ध्वनिमान की
वडाळी (२)—वडा, महान।
वडेरी (१६)—वडी
वणण (८७)—ध्वनि विशेष।
वताडो (८)—वताइए
वभीखण (४४, १००, ८१, ८५, ६५)—रावण का भाई, विभीषण।
वरघू (६६, ८६)—वाद्य विशेष।
वरदान (३८)—किसी कार्य का लाभ के लिए प्रसन्नता से ही अथवा देव विशेष या वडे का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना।
वळ (४७, ६८)—शक्ति, गति, फिर।
वळव (६३)—वलीवर्द, वैल यहाँ अंतरकथा का पता नही चलता, नाथा तो नाग था
वळभद्र (५७, ६०)—वलिभद्र, श्रीकृष्ण के वडे भाई वलराम
वळवत (७०)—वलवान, शक्तिशाली
वलाक्रम (६, ३८)—शौर्य, वीरता, शक्ति, सामर्थ्य।
वलि (२३, ३६, ६५) राजा वलि।
वलिभद्र (७, १८, ६५, ६६, १०१)—श्रीकृष्ण के वडे भाई वलराम

वळिराउ (६६)—राजा वलि
वलिराम (५७, ८२)—वलराम श्रीकृष्ण का वडा भाई ।
वळिराम (८५)—वलदेव, वलभद्र ।
वळिहारी (१०१)—वलैया
वळे (७८)—वल गये, भस्म हो गये ।
वसदे (२)—वसुदेव
वसदेव (५८)—वसुदेव
वसास (५०)—विश्वास
वह (१३, ३८, ४६, ४४, ६२, ६६, ८५, ८६)—वहुत
वहत (१४, ४७, ५२, ५३, ५८, ६५, ८६, ८५)—वहुत
वहनामी (१४, ५६, ६०, ६३, ६७, १००, ६५, १०१)—जिसके वहुत से नाम हो, ईश्वर ।
वहनामी (६१, ६५, ४८, ७६, ६४)- देखें, वहनामी ।
वहमामि (३६)—वहुत-सो का स्वामी
वहादरि (८६)—वहादुर, वीर, वीरता से ।
वाभणिया (११)—वध्याओ, वाभो ।
वाणासुर (६३)—राजा वलि के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जो वडा वीर, गुणी और सहस्रवाहु था ।
वाधै (५७)—रची, रचकर, वनाकर ।
वाधौ (३२)—धारण करना
वामण (१६, ३६)—ब्राह्मण, वामनावतार ।

वामणी ( )—ब्राह्मणी
वाह (५)—भुजा, हाथ ।
वाहां (४१)—वाहु
वाई (६७)—वदन
वाकळा (५८)—उवाला हुआ, अक्षत अन्न ।
वाज (१०१)
वाणासुर (५)–राजा वलि के सौ पुत्रो मे से सवसे वडा पुत्र जो महान वीर, गुणी और सहस्रवाहु था ।
वाथा (६१)—वाहुपाश ।
वाधा (६७)—वंधन मे ।
वाधि (६६) –विशेष
वाप (२५)—पिता
(१०१)—यहां वाप शब्द आश्चर्ययुक्त धन्यवाद शब्द के अर्थ मे है ।
वापडा (२०)—वपुरा
वामण (३०)—ब्राह्मण, (यहा सुदामा के लिए आया है ।
वायर (५२)—स्त्री, (यहा मोहनी अवतार के लिए प्रयोग किया गया है)
वारट (६७)—चारणो की उपाधि ।
वारा (३३)—वारह
वारिस १०२)—द्वादशी
वाळ (२०, ४७)—वालक

वालमीक (३८, ९७, १०३)—वाल्मीकि ऋषि।
वाळि (५६)—वालि नाम का वानर।
वाहिरौ (४९, ७०)—रहित, विना।
वाहुडियौ (९)—चिल्लाया, पुकार की
विंदे (९८)—वदन करते हैं।
विजानु (४५)—विज्ञान
विण (३८)—रहित
विन्हइ (१४, ५२, ६६)—दोनो ही।
वियो ४८)—द्वितीय, दूसरा।
विरताव (३७)—प्रवेश कर
विरद (३१)—विरुद्ध
विरदाळ (७)—विरुदवारी।
विरसाळा (१६)—श्रेष्ठ
विरिद (११, ६१)—विरुद, यश, कीर्ति।
विसन (७७)—विष्णु
विहिन (१०१)—वहिन
वीज (३२)—द्वितीया, तिथि।
वीठळा (८३)—विट्ठल, श्रीकृष्ण।
वीनवै (३७)—विनय करता है या करते हैं या करता हूँ।
वीया (८७)—दूसरा, दूसरी।
वीहा (७५)—डरता हूँ।
वुगासुर (१०३)—वकासुर नाम का असुर।
वुड (८०)—वडा
वुद्ध (२४)—वुद्ध भगवान।
वुध (३०, १८, ३६)—वुद्धावतार, गौतम वुद्ध।
वुधा (७)—वुद्धअवतार, वुद्धभगवान।
वुधि (३९)—वुद्धावतार।
वुरो (४८)—वुरा
वुसट (६०)—दुष्ट
वुसै (८०)—वैसे
वूझै (४४)—पूछता है।
वूडिसै (२०)—डूव जायेंगे।
वे (५७)—दोनो
वेकार मा (४०)-१ वेकार, २ असीम,
वेडा (७५)—नौका
वेडी (१०२)—वंधन
वेढि (१००)—युद्ध
वेल (५५, ५६, ६९)—वश, मदद, लता ? सहायता।
वेलि (८६)—वेलि, लता।
वेलिया (९६)—व्यक्ति, मित्र, साथी।
वेली (३१, ८३, ५३)—मित्र, दोस्त, सहयोगी, सखा, मददगार।
वेवइ (१४, ४१)—दोनो ही।
वैर (११, १४)—स्त्री, महिला, पत्नी
वैरा (५९)—स्त्रिएं
वोटियो (६३)—काट डाले
वोढियौ (८२)—नाश किया, डुवो दिया
वोढे (७५)—डुवावे
वोया (५८)—१. प्रारम्भ किये। २. स्थापित किये।

३ डुबा दिये ।
४. नाश किये ।

व्याधि (८१)—व्याध नामक असुर ।
ब्रम (८५)—ब्रह्मा
ब्रहम (७४)—ब्रह्मा
ब्रहमा (६६)—ब्रह्मा, विधि, विधाता ।
ब्रह्म (१, ३, ७, ३४, ३७, ६७, ६८)—एक मात्र नित्य चेतन सत्ता जो ससार का कारण रूप है, ब्रह्मा ।
ब्रह्म-ग्यान (७८, ४५)—ब्रह्म का बोध अद्वैत सिद्धान्त का बोध, तत्वज्ञान ।
ब्रह्म (६१, ७१)—ब्रह्म
ब्रह्मगुण (४२)—सत+गुण
ब्रह्मा (१०१)—विधि, विधाता ।
ब्रह्मा (९३, १, १०, ६९, ७१, ७२, ५३, ६०, ६४, ७९ ८२, ८८)—विधि, विधाता, ब्रह्म के तीन सुगुण रूपो मे से सृष्टि की रचना करने वाला, सृष्टिकर्ता ।
हिन्दू त्रिदेवो मे से एक इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध मे मनुस्मृति मे उल्लेख है कि स्वयभू भगवान ने जल की सृष्टि करके उसमे जो वीर्य स्खलित किया था उससे एक ज्योतिर्मय पिंड की उत्पत्ति हुई उसीसे ब्रह्मा का प्रादुर्भाव हुआ ।
ब्रह्माणी (१)—ब्रह्मा की स्त्री, ब्रह्मा की शक्ति ।
ब्रह्म (२८) - ब्रह्मा
ब्रिख (९५)—वृक्ष (यहाँ नल कुवर नामक दो कुवेर के पुत्रो से तात्पर्य है ।
ब्रिद (२)—विरुद
ब्रिदि (२३, ५३)—विरुद

भ

भजण (४४, ४६)—नाश करने वाला, मिटाने वाला ।
भगत (१००, १०१)—भक्त
भगत-वछ्छळ (२, ३, २९, ३४)—भक्त वत्सल ।
भगता (९९, १०२, १०३)—भक्तो
भगति (३४, ९९)—भक्ति
भगतिणि (१०१)—भक्त-सी
भड (६६, ६८, ९१)—योद्धा, भट ।
भडाभड (५)—योद्धाओ मे भी योद्धा, महाभट्ट ।
भडि (५५)—भट, योद्धा ।
भडे (९७)—योद्धाओ
भणियो (९३)—कहा
भणीजै (५१)—कहे जाते हैं ।
भणै (६०, ९७)—वर्णन करता है, कहते हैं, कहता है ।
भत (२१, ४३) —भाँति, प्रकार ।

मद्र कुंअरि (६३)—केकयराज की मद्राकुमारी कन्या जो कि कृष्ण को व्याही गई थी ।
भमतौ (७५)—भ्रमण करता हुआ ।
भरत (६२, ६८)—राम भ्राता भरत,
भरथ (६, २१, ३६, ५५, ५६, ५७, ६५, ७२, ८१, ६४)-राम भ्राता भरत, कैंकयी पुत्र भरत ।
भरथ रा (६५)—भरत का ।
भरथु (२६)—भरत
भरहरा (७७)—१. नरो मे श्रेष्ठ, २. नृसिंह ।
भला (५१, ८३)—ठीक, उत्तम, सज्जन ।
भली (५६)—उत्तम, श्रेष्ठ, ठीक ।
भले (६७)—यहाँ पर यह शब्द केवल सम्बोधनार्थ प्रयोग किया गया है ।
भलेरा (१२)—श्रोष्ठतर
भलेरी (२)—वढिया, श्रेष्ठतर ।
भळै (६६)—और, फिर ।
भळे (६६)—भला, उत्तम, ठीक ।
भलौ (४८, ६०, ६१)—ठीक, वढिया, श्रेष्ठ उत्तम, भला, सज्जन ।
भवस (३५)—भविष्य
भहरी (२२)—भरपूर
भाजण (७६)—मिटाने वाला ।
भाजि (३७, ३६)—नाश करके, टूट कर, नष्ट होकर ।
भाजियौ (५५)—तोड़ डाला ।
भाजिहौ (१०२)—संहार करोगे, ध्वंस करोगे ।
भाजै (३४, ४२)—नाश करता है, तोडता है ।
भाड (६०)—विदुषक, निंदा करने वाला ।
भामणा (८०)—वलैया
भामिणी (१०१)—भामिनी, पत्नी ।
भामी (६१, ७२, १०१)—वलैया, न्यौछावर ।
भाइ (२०)—पसद
भाइयौ (२)—भाई, भ्राता ।
भाईया (१०२)—१ भाई वधु, (सबोधन) २ दीनवधु ।
भाखा (३८)—कहे
भाखि (४२)—कहकर
भाखीजै (४३)—कहिए, कहा जाता है ।
भाखी (७३)—कहो
भागिवत्त (३८)—श्रीमद्‌भागवद
भाणी (२०)—पसद आने वाली ।
भामणा (३६)—वलैया, न्योछावर
भारथ (८६, १००)—युद्ध
भारथी (१७)—दशनामी सन्यासियो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति, भारती ।

भाराथ (१५)—भारत, युद्ध ।
सारी (४७)—सब
भाळि (५६)—देखकर
भालीग्रल (४४)—ललाट
भिडि (१५)—भिडकर, युद्ध कर ।
भिडियौ (६३)—भिडा, टक्कर ली, युद्ध किया ।
भिणि (७४)—कह
भिणीजै ( )—स्मरण किया जाय ।
भिणे (८)—कहो, भण ।
भिळणो (२)—परिवृत होना ।
भिले (३४)—श्रेष्ट, वाह वाह ।
भिळे (९८)—१ फिर, पुन २ मिले, इकट्ठा हो ।
भिळै (८५, ६, २०)—मिल गये, शामिल हुए, फिर, और ।
भीजै (४१)—प्रसन्न हो जाय ।
भीड (५२, ५४)—सकट, कष्ट ।
भीडिया (८०)—भीडा, कुचला ।
भीम (३४, ६२, ९७)—पाडु पुत्र भीम, विदर्भ का राजा भीष्मक जो रुक्मणि का पिता था ।
भीम रै (९६)—राजा भीष्म के जो रुक्मणि का पिता था ।
भीर (२१, ५५, ७७, ९०)—सहायता मदद ।
भील (५६)—एक जाति ।
भीषम (६५)—भीष्म पितामह ।
भीषम (६२)—भीष्म पितामह ।
भुडा (१७)—खराब, नीच ।
भुजन ( )—भजन, स्मरण ।
भुजाडी (५)—शक्तिशाली, समर्थ ।
भुजाली (१९)—भुजाओ वाली ।
भुजाळौ (१)—समर्थ, शक्तिशाली ।
भुजिया (८३)—भजन किया ।
भुजैतौ (५)—तेरे को भजे ।
भुणीजै (४०)—कहा जाता है ।
भुयण (१५, ४८, ४९)—भुवन, लोक
भुयणा (६१)—भुवन, लोक ।
भुवणा (१०२)—लोको
भूक (१८)—१. भूख, २ पुकार ।
भूगळ (६६)—फूक वाद्य विशेष ।
भूंडो (८९)—खराब, बुरा ।
भू (२२)—भू
भूक (९१)—ध्वस, नाश ।
भूचरा (८५)—भूमि पर विचरन करने वाले ।
भूत (८५)
भूवरजी (६७)—विष्णु का एक नाम
भूधरा (५१)—भूधर, विष्णु ।
भूधरा (३४)—श्रीकृष्ण, विष्णु भू को धारण करने वाला ।
भूप (३५)—राजा, स्वामी ।
भेख (३५, ५५)—भेष, वेश ।
भेटण (७२)—स्पर्श करने को ।
भेदु (३९)—भेद, रहस्य ।

भेर (६६)—भेरी नामक वाद्य ।
भेळा (११, ६६)–शामिल, एक साथ ।
भेळिसै (१०)—विजय करेगा ?
भैचक (१०२)—भयकर, महान, वडा
भोमि (२१)—भूमि
भौ (५८, १९, ६९)–भय, डर, आतंक
भ्रम (३७)—सदेह
भ्रखिसै (७५)—खायेगा, काटेगा ।
भ्रतार (३६)—पति, स्वामी ।
भ्रम (३५)—अज्ञान
भ्राति (३१)—भ्रम
भ्राजा (९२)—सुशोभित हुए ।
भ्रिगि (६२)—भृगु नामक एक ऋषि जिनकी कथा पुराणो मे विस्तार पूर्वक मिलती है ।

म

मजार (९०)—अदर, मे ।
मंड (३५)—रचना, मूर्ति ।
मंडाण (५१, १०१, ९८)—रचना
मडाणी (१२)—रची गई ।
मंणै (११)—कहती है ।
मंथरा (५५)—राजा दशरथ की रानी कैकयी की दासी ।
मंदै (२१)—खास कर
म (१, २, ४८, ८८)—न, मत, नही
मकराइ (४३)—मकराकृत
मचीणा (८९, ९८)—
मच्छ (६)—मत्स्यावतार
मछ (३, २४, ३६, ३९)—मत्स्यावतार
मछकुद (६२)—मुचुकुद
मछरियौ (५७)—कोप किया ।
मछिरियौ (८२)– कोप किया
मजीरा (१७)—वाद्य विशेष
मडागी (९४ —
मणै (४३)—कहते हैं, भजते हैं ।
मति (२३, ३६, ३७)—बुद्धि, ज्ञान ।
मति सारै (१)—बुद्धि के अनुसार ।
मती (९)—मत, नही ।
मतौ (८२)—विचार, निश्चय ।
मथाण (९८)—मंथन
मथियो (८०)—मथन किया, विलोडित किया ।
मथीयौ (५२)—मंथन किया, विलोडित किया ।
मथुरा (६१)—पुराणानुसार सात प्रमुख पुरियो मे एक पुरी जो व्रज मे यमुना के दक्षिण तट पर है ।
मदमती (१९) मदोन्मत, मस्त ।
मध (४५, ५२, ७९)—मद्य, मधु-नामक असुर ।
मधकर (१६)- नाम है ।
मधकीट (७९)—मधु और कैटभ नामक दो दैत्य जो परस्पर भाई थे ।

मघकीटक (१००)—मघकीट
मघवंन (२४)—इन्द्र
मघसूदन (५७)—विष्णु, श्रीराम।
मघु (४)—विष्णु द्वारा मारे जाने वाले एक दैत्य का नाम।
मनछा (४७)—इच्छा
मनडौ (११)—मन, अल्या।
मना (४८)—मुझको
मनि (४६)—मन
मन्हहारि (६१)—मनुहार
मयण (५७, ७६)—मदन, कामदेव।
मया (३७)—दया, रहम।
मये (६१)—
मरट (६६)—गर्व, अभिमान।
मरडकै (८७)—मुरड गये।
मरोडै (१६)—मरोडकर
मल (६८)—मल्ल
मळ-माटी (५७)—नाश, ध्वस।
मला (१०३) -
मळिया (२१, ६०)—मर्दन किया, नाश किया, प्राप्त हुआ।
मलीनाथ (१५)—राठौडराव सलखा का प्रथम पुत्र जो महेव (मालानी) का स्वामी था
मवि (४५)—मे
मवे (४५)—मे ?
मसतक (१०१)—मस्तक, शिर।
महण (१८)—महार्णव, सागर।
महत (६१)—श्रेष्ठ, बडा।
महमद (३१)—मुहम्मद।
महमहण (३३)—महान बडा।
महमहण (१, ४६, ७४, ८२, ८३, ८४ ८६, ६१, ६६, १०२—महामहार्णव, महामहत, महामहाने, ईश्वर, महान बडा।
महमाइ (३८)—महामाता, देवी।
महमाई (२२)—महामातृका।
महमाय (६६)—महामाया, दुर्गा।
महमाया (१६)—महामाता।
महर (२०, ५८)—दया, कृपा, यशोदा व नद के लिए प्रयोग वाला आदरसूचक शब्द, श्रीकृष्ण के लिए आदर सूचक शब्द।
महरि (६३)—वृज मे प्रतिष्ठित स्त्रियो के लिए प्रयोग किया जाने वाला आदर सूचक शब्द।
महल (६८)—
महा (३२, ७६)—महान्।
महाजप (४३)—बडा जप।
महाप्रभ (४८)—महा प्रभू।
महाभड (७७)—योद्धा।
महामाइ (२०)—महामाता।
महि (४३)—मे।
महि (४७, ८१)—भूमि, पृथ्वी।
महियार (५)—ग्वालिन।

महिरिवाण (२८)—महरवान, महार्णव ।

महिराण (१०१)—महार्णव, समुद्र ।

महिरामण (१००)—पाताल मे रहने वाले दो भाई अहिरावण और महिरावण । कोई कोई इन्हे रावण का मित्र वतलाते है और कोई भिन्न मत रखते हैं। ये घोर क्रूर-कर्मी थे ।

महिरिवाण (३८)—महरवान, कृपालु ।

महीग्रारं (५६)—गोप स्त्रिएँ, ग्वालिनिएं ।

महेस (३५)—महादेव ।

महेसरि (२१)—माहेश्वरी, देवी ।

महेसुर (४४)—

मा (१)–मे ।

माँ (२)–मे ।

मा (१०, ११, १२, १७, २०, २१, ३०, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४२, ४३, ४५, ४६, ४७, ४८, ४६, ५५, ५६, ५६, ६०, ६८, ७०, ७१, ८२, ८३, ८७, ६०, ६५, ६७)–मे ।

मांकळौ (७०)–वहुत, अधिक ।

मागा (३४)—मांगता हूँ ।

माडण (१००)–रचने को ।

माडहै (१४)–विवाह-मडप ।

माडहौ (६०, ६६)–विवाह-मडप ।

माडिया (६८)–रचे ।

मांडीयौ (५८)—रचा, वनाया ।

माडे (२१)—रचे ।

माडै (८१)—रचकर ।

माडौ (१०)–रचौ, रचिए ।

माणि (६०)—उपभोग करके, रसास्वादन करके ।

माणी (८६)–उपभोग करेंगे ।

माणैं (२, ३०)—रखता है, उपभोग किया ।

मानियो (२३)—माना ।

माहि (३५, ३७, ३८, ४०, ४६, ५२, ८१, ६३, ६५)—मे ।

माही (१६, ३५, ६०)—मे ।

माहे (५२)—मे ।

मागै (१०१)– मांगता है, याचना करता है ।

माछ (५६)—मत्स्यावतार लेने वाला विष्णु ।

माछर (७६)—मच्छर ।

माटी (५८)—मृतिका, मिट्टी ।

माडा (६६)—जवरदस्त, वलात् ।

माणीया (८३)—उपभोग किया ।

माणै (१६)—उपभोग करती है ।

मात (६६)

माथै (२१, ६६, १०३)—ऊपर ।

मादळ (६६, ८६)—वाद्य विशेष ।
माधव (७)—लक्ष्मीपति, विष्णु ।
माधा (४२, ६२)—माधव, श्रीकृष्ण ।
मानियौ (१६)—माना, मान लिया ।
माप नै (४६)
मामौ (१०१)—माता का भाई ।
माया (३७)—लक्ष्मी, धन-दौलत, अविद्या, अज्ञान ।
मारीछ (६)—मारीच, एक राक्षस का नाम जिसने सोने का हरिण बनकर रामचद्र को धोखा दिया था ।
मारै (३०)—मार दिया ।
माल्हिऔ (८६)—मस्त चाल से चला
माल्हिसै (१२)—गर्वपूर्ण मद चाल मे चलेगा ।
मावडै (८३)—माताएँ
मावै (५६)—समाते हैं।
माह (१०३)
माहरै (३१, ४३, ७३)—मेरे
माहरोइ (११)—मेरा ही
माहरौ (११, २६, ७०, ७६)—मेरा
माहव (१, २ ४८, ६०, ७४)—माधव, श्रीकृष्ण ।
माहवा (११, ४८, ६०, ७८, ६६, ९७)—माधव, श्रीकृष्ण, विष्णु ।
माहवी (६२)—माधव, श्रीकृष्ण ।
माहि (३५, ८३)—मे

माहेस (६७)—महेश, शिव ।
मिडिया (४३)—अकित
मिणिजै (६०)—कहिए ?
मिणीजै (४५)—कहिये, कहा जाता है ।
मिनि (२०, २१)—मन मे, मानली ?
मिलक (३१)
मिळण (३२)—मिलना
मिळिया (३३)—मिलकर
मिळियौ (६५—मिला
मिळिसै (६)—मिलेगा
मीठौ (६७)—मीठा, मधुर ।
मीत (१०१)—मित्र
मीर (८६, ६०)—धार्मिक आचार्य, सैयद जाति की उपाधि, प्रधान नेता ।
मीराँ (२५)—भक्त मीराबाई ।
मीराह (१०)—मीर, प्रधान ।
मीरा (६०)—समर्थ, शक्तिशाली ।
मीसण (१६)—चारणो का एक गोत्र ।
मुठहुँ (४८)—मूर्ख
मुठा (७६)
मुना (७४)—मुझ को
मुसा (८५)—यहूदी लोगो के एक पैगम्बर जिनको खुदा का नूर दिखाई पडा था ।
मुसै (१७)—
मुहडौ (५१, ८३)—मुख, मुह ।

मुंहमद (१०१)—महम्मद
मुश्रौडी (६६)—मृता, मरी हुई।
मुकद (७५, ७६, ८३, ९०)—मुकुंद, मुक्ति देने वाला, विष्णु।
मुकंदह (५३)—मुक्ति देने वाला, ईश्वर
मुकुंद (८२)—मुक्तदाता, विष्णु का एक नाम।
मुकन (५८)—मुक्ति देने वाला, विष्णु
मुखी (२१)—मुख्य
मुगति (३५)—मुक्ति
मुगिति (७९)—मुक्ति, मोक्ष।
मुजरो (२५)—
मुझ (३८)—मुझको
मुझना (३९)—देखें, मुझ।
मुड़िसै (६६)—मोडे जायेंगे।
मुडै (८७)—मुड़ गये
मुणै (६०)—कहता है।
मुथुर (८३)—मथुरा नगरी।
मुद (६३)—प्रसन्न, हर्षित।
मुदै (१५)—मुख्ये, प्रधान।
मुना (२४)—मुनियो
मुना (१००)—मुझको
मुनाई (२०)—प्रसन्न की, मनाई।
मुर (३६, ४८, ६०, ६१, १०२)—तीन
मुरड़ै (६९)—
मुरधर (१०३)—मारवाड
मुर-भुयणा (१९)—तीन लोक, त्रिभुवन
मुर-भुवण (३५, १०२)—तीन लोक
मुरलोक (६)—तीन लोक
मुरह (९३)—तीन
मुरारि (६१)—मुर नामक दैत्य को मारने वाला, विष्णु, श्रीकृष्ण
मुरारी (६०)—श्रीकृष्ण, मुर नामक दैत्य का सहारक।
मुरिखि (३९)—मूर्ख, अज्ञ।
मुरिडि (६६)—मरोड़कर
मुलाणा (१६, ३१)—मुल्ला
मुल्लाणा (६५)—वहुत वड़ा विद्वान, मुल्ला, शिक्षक।
मुसा (३१)—
मुसिला (११)—मुसलमान
मुहमद (९०)—जिसकी अत्यधिक प्रशसा या कीर्ति हो, इस्लाम धर्म के प्रवर्तक, अरब के एक प्रसिद्ध पैगम्वर।
मुहमदा (८५)—मुहम्मद
मुहम्मद (६५)—इस्लाम धर्म के प्रवर्तक अरव के प्रसिद्ध पैगम्वर।
मूंगळ (८९)—मुगल, मुसलमान।
मूछिसै (८५)—काटेंगे, मिटा देंगे, नष्ट कर देंगे।
मूंना (१००)—मुझको
मूमणां (९१)—
मूस (८९)—

मूं सरण (३७)—मुझको शरण ?
मू सा (६५)—एक पैगम्बर जिसे यहूदी लोग अपने धर्म का प्रवर्तक मानते हैं।
मूँसा (६०)—
मूका (६८)—छोड़ेंगे
मूनां (७३)—मुनियो को।
मूरति (१००)
मूळ (४६)—कारण, जड़।
मेक (७७)—एक।
मेखल (४३)—करधनी।
मेघ (५७, ८५, ६१)-मेघनाद, चमार
मेघड (११)—चमार जाति की (में उत्पन्न) स्त्री।
मेघड़ी (११, ८४, ८६, ६६)—चमार जाति की कन्या या स्त्री चमारिन।
मेघ-रिखी
मेघाँ (३२, ८४, ६०, ६०)—चमार, चमार जाति की कन्या।
मेछा (६०)—म्लेच्छ, यवन।
मेपनँ (४६)
मेर (६१, १०१)—सुमेरु।
मेळ (१०१)—मित्रता, स्नेह।
मेळिया (६२)—मिला दिए।
मेले (१)—रखे।
मेळौ (८५)—मिलाप, मेला।
मेह (५१)—मेघ, वर्षा।
मेहणौ (८६)
मैवार (५२)
मो (७०)—मेरे।
मोकळा (१६, ३१, ६६)-वहुत, काफी, अपार, अधिक।
मोकळो (८५)—वहुत।
मोख (४६, ७५)—मुक्ति, मोक्ष।
मोखीया (५७)—मुक्त कर दिए।
मोटा (३७)—महान, वडा।
मोटी (३८, १००)—महान, वडी।
मोटे (१६)—वडा, महान।
मोटो (३८, ६६)—वडा, महान।
मोड़ (३२)—मौर।
मोड़ँ (१६, ३२)—नाश करती है, रचता है।
मोढरी (१६)—महान, वहुत।
मोना (७०)—मुझको।
मोहण (७४)—मोहन, श्रीकृष्ण।
मोहणा (८४)—मोहन।
मौंहि (५३)—मे।
मौज (८१)—दान।
मौजा (५१)—आनद।
मौड (६६)—मौर।
मौरी (२१)—मेरी।
मौहरि (५५, ८६)-पूर्व, पहिले, अगाडी सम्मुख, पहिले।
मौहे (५२)—मोहित किए
म्हारो (१३, ५३)—मेरा।

य

या (४१, ६१)–इन, इस प्रकार, ऐसे।
यार (७१)—मित्र, दोस्त।
यैरै (५१)—इन।

र

रजण (४६)—प्रसन्न करने वाला, प्रसन्नता कारक।
रइ णि (६७)—भूमि, पृथ्वी।
रख-पाळ (४७)—रक्षक।
रखै (१)—ऐसा न हो।
रखै (६६)—देखै।
रगत (३१, ७६) रक्त, खून।
रगत-वंवाळि (१६)—रक्त पान करने वाली, महान प्रचड।
रजोगुण (४२)—तीन गुणो मे से जो समस्त पदार्थों मे पाये जाते हैं दूसरा गुण, रजस्।
रटक (८४)—टक्कर, मुकाविला, सामना।
रडवड (६१)—इधर उधर गिरना।
रडवडै (६६)—इधर उधर पडे पैरो से ठुकराया जाये।
रत (६६)—रक्त, खून।
रतरी (२१)
रत्ती (६१,—प्रेम
रन (५६)—अरण्य, वन।
रमाया (२१)—खेलाया
रमावै (३०)—क्रीडा करता है।
रमै (४२, ७१)—खेलते हैं, रमण करता है, क्रीडा करता है।
रवराया (१६, २०)—पुकारने पर दया करने वाली।
रसण (३५)—रसना
रसा (५१)—पृथ्वी
रसातळि (५२)—रसातल मे।
रहक्कै (६६)—गाया जाता है, लय मे होता है।
रहमाण (६, २४, ३७, ८४, ८६, ६०, ६१)—दयालु, कृपालु, रहीम, ईश्वर का एक नाम।
रहमाण (८६)—ईश्वर
रहिचीया (६०)—सहार किये, मार डाले।
रहिमाण (६८)—ईश्वर, रहमान।
रहीजै (४५)—रहिए, रहा जाता है।
रहै (४५)
रा (८६)—के
राक (२६, ३६, ४४, ३५)—रक, गरीव।
राकना (७२)—रक, गरीव।
राम (६, ७, ५५, ६८, ६१, ६६)—ईश्वर, श्रीराम।
राम राजा (६२)—श्रीरामचन्द्र।

रामइ श्रौ (१५)—रामदेव पीर

रामण (५६, ६३, १००)—रावण, दशानन।

रांमदे (१५)

रामा (६३)—लक्ष्मी

रा (२०, ४४, ५१, ५८, ६६, ६३, १०१, २२, ३८, ४१, ८१, ६६)—के

राइग्रा (१०२)—राजा

राईया (७७)—रहने वाला।

राउ (२३)—राजा

राउत (१५)—राजपुत्र, राजपूत, राज उत, योद्धा।

राकस (२, ६)—राक्षस

राकसा (८४)—राक्षसो

राखस (६५ —राक्षस

राखसां (६८, १०३)—राक्षसो

राखै (४२, १००)—रखता है, रखते हैं।

राखौ (३५)—रखिये

राघव (६, २६, ६३, ८१, ६२)—श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण।

राघवा (५५, ७२)—राघव, श्रीरामचन्द्र।

राज (३७, १०१)—राज्य, आप।

राजाई (६७)—राजापन, राजात्व।

राजि (१०१)—श्रीमान्।

रातौ (५३)—रक्त, लाल।

राधा (४)

राधा-रमण (३३)—राधा के साथ रमण करने वाला, श्रीकृष्ण।

राधा-वर (१)—श्रीकृष्ण।

राम (३, ८, ६, २८, ३६, ५३, ५७, ६६, ७१, ७८, ८१)—श्रीराम रामावतार, परशुराम।

रामचंद (२६, ३५, ५६, ८१, ८७, ६२)—रामचंद्र, दशरथ पुत्र, श्रीराम।

रामचंदर (५५)—श्रीरामचंद्र।

रामचंदि (८२)—रामचंद्र भगवान।

रामचन्द्र (६७, ६३)

रामण (४, ८२)—रावण, दशानन।

रामति (७१, ७७)—क्रीडा, खेल, लीला।

रारि (३)—नेत्र, नयन।

रावण (५७)

रासि (६०)

रासौ (१६)—रासा

राह (३६, ५२, ५४)—राहु

रिख (२६, ३६)—ऋषि

रिख-राया (६)—ऋषि, महर्षि। (विश्वामित्र)

रिखव (३)—ऋषभदेव

रिखवदेव (६, १८)—ऋषभदेव, भागवत के अनुसार राजा नाभि के पुत्र जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर।

रिखव (२४, २८, ७१)—ऋषभदेव
रिखा (८७)—ऋषि
रिखियौ (१३)—चमार जाति के वे व्यक्ति जो रामदेव पीर के अनन्य भक्त होते हैं। यह शब्द ऋषि का अपभ्रंश है।
रिखी (२६)—ऋषि
रिखेसर (१३)—ऋषीश्वर
रिजकि (१०१)—रिज्क, रोजी
रिजिक (१०)—नित्य का भोजन, रोजी जीविका, रिज्क।
रिजियो (६९)—प्रसन्न हुआ।
रिण छोड (४, ७२)—युद्ध भूमि को छोडने के कारण श्रीकृष्ण का एक नाम, ईश्वर।
रिणि'खेत (८७)
रिणिताळ (६६)—युद्ध स्थल, युद्ध।
रिणिसी (१५)
रिदै (३९)—हृदय
रिदैं (४३, ४५)—हृदय मे।
रिध-सिध (५)—ऋद्धि-सिद्धि।
रिपि (५६)—रिपु, शत्रु।
रिमा (१४)—शत्रुओ
रिमि (२१)—शत्रु
रिमियौ (७९)—खेला, क्रीडा की।
रिमि-रांह (१४)—शत्रुओ को राह पर लाने वाला।
रिष (३९)—ऋषि
रिषभ (३६)—ऋषभदेव, जो विष्णु के २४ अवतारो मे गिने जाते हैं तथा जैनों के आदि तीर्थंकर भी यही माने जाते हैं।
रिषभदेव (५४)—ऋषभदेव
रिषि (१४, ४४)—ऋषि
रीछ (१०१)—यह शब्द जामवत के लिए प्रयोग हुआ है।
रीछडी (९३)—ऋक्षराज जामवत की कन्या जिसके साथ कृष्ण का विवाह हुआ था।
रीजियो (२८)–प्रसन्न हुआ।
रीजौ (१४)—प्रसन्न हो।
रीझ (७२)—दान, पुरस्कार।
री (१९, ५४, ५५, ९०, ९३, ९९, १०२)—की
रीछ (६५)—ऋच्छ
रीछडी (८९)—जामवंत की पुत्री
रीज (४१, ४४)–प्रसन्न होकर, दान
रीजैं (१९, २९, ३९, ४१, ४३, ५१)–प्रसन्न होता है।
रीझ (७२)—वस्शीश
रीझवा (३३)—प्रसन्न करें
रीझाइ (९५)—प्रसन्न होकर

रीझवा (७)—प्रसन्न करें, हर्षित करें
रीझै (६५)—प्रसन्न होता है
रीता (६३)—रिक्त, खाली।
रीधौ (२६, ५३)—प्रसन्न हुआ
रीवा (८८)—
रीस (५६, १०३)—कोप
रुकमणी (१०१)—श्रीकृष्ण की पट-महिषी रुक्मणि।
रुक्मणी (७७)—रुक्मिणी
रुख (१०१)—
रुखम (६६)—रुक्माग
रुखमणी (११, ८३, ६६, ६३, १०३)—रुक्मणि
रुखमागद (४४, ६६)—एक भक्तराज का नाम, रुक्मागद
रुघनन्दरण (६)—श्रीरामचन्द्र
रुघनंदण (५५)—श्रीरामचन्द्र भगवान
रुघनाथ (६, ३६, ४२, ५२, ५५, ५६)—रघुनाथ, श्रीरामचन्द्र भगवान।
रुघनाथु (२६)—श्रीराम
रुघपति (५५)—रघुपति, श्रीराम भगवान।
रुघराई ( )—रघुराज, श्रीराम।
रुघराउ (५५)—रघुराज, श्रीराम भगवान।
रुघराजा (१०१, ५५)—श्रीराम भगवान।
रुघराम (६६)—रघुनाथ, श्रीरामचद्र भगवान।
रुघवीर (४)—श्रीरामचंद्र भगवान।
रुद्र (७)—एक प्रकार के गरण देवता जिनकी रचना सृष्टि के आरम्भ मे ब्रह्मा की भौहो से हुई थी। वे संख्या मे ग्यारह माने जाते हैं। शंभू।
रुखेसर (३८)—ऋषीश्वर
रूख (११)—वृक्ष
रूडै (६६)—नगाडे, ढोल आदि बजते हैं।
रूप (३४)—शकल, सूरत।
रूपक (३८)—काव्य, कविता।
रूपा दे (१५)—रावल मल्लिनाथ की पट्ट-महिषी।
रूसेसर (२१)—ऋषीश्वर, महर्षि।
रेंवत (१४)—घोडा
रेवत (६०, ६१)—घोडा
रेखी (१७)—रामदेव पीर के अनन्य भक्त चमार जाति की स्त्री।
रेरण (८१, ६४)—धूलि, भूमि, पृथ्वी।
रेणका (८१)—परशुराम की माता का नाम।
रेणा (५५)—राजा पुसेन जिन की कन्या, जमदग्नि ऋषी की पत्नी, परशुराम की माता रेणुका।
रेणाधर (५२)—समुद्र, सागर।

रेणी (३२)—
रेसइ (६)—पराजित किया ।
रेसण (१००)—पराजित करने वाला, पराजित करने की ।
रेसीया (२९)—पराजित किये ।
रेसै (७०)—मिटाता है, नष्ट करता है, पराजित करता है ।
रैं (३२)—के
रै (१७, ३५, ३६, ३९, ४१, ४६, ४७, ५४, ५५, ५६, ६४, ८६, ८७, ९०, ९५)—के
रैण (२१, ५२)—भूमि, पृथ्वी ।
रैवती-रमण (५७ सं० रेवती रमण) रेवत राजा की पुत्री रेवती जो बलराम की धर्म पत्नी थी । उसके साथ रमण करने वाला श्रीबलराम ।
रो (२२, ५६, ९५, ९६)—का
रोट (१७)—बडी रोटी ।
रोढिग्रौ (८२)—काट डाला, नाश किया ।
रोपण (४६)—उठाने लगाने या खडा करने की क्रिया ।
रोम (४३)—लोक
रोळ (२)—ध्वस, नाश ।
रौ (३४, ४१, ४६, ४८, ५२, ६८, ७४, ९२)—का

ल

लक्षण (९२)—राम भ्राता
लखण (९७)—लक्षण
लखमण (५७)—लक्ष्मण
लखमण (६, ३६, ३९, ५६, ७१, ८१)—राम भ्राता लक्ष्मण ।
लखमणा (६३)—भद्रदेश के राजा वृहत्सेन की पुत्री जो कृष्ण के साथ व्याही गई थी ।
लखमी (९४)—लक्ष्मी
लखिग्रौ (२३)—समझा जाना
लच्छिवर (४२)—लक्ष्मीपति, विष्णु ।
लछिवर (२९, ४३, ७२)—लक्ष्मीपति, विष्णु ।
लछी-प्राण (७)—लक्ष्मीवल्लभ, विष्णु ।
लवणसुर (५७)—प्रसिद्ध मधुनामक असुर का पुत्र जो मथुरा में रहता था और जिसको शत्रुघन ने श्रीराम की आज्ञा से मारा था ।
लसकर (९२)—सेना
लहड़ा (४५)—लघु, छोटा ।
लहणियो ९९)—लाभ
लहां (४४)—लेता हूँ ।
लहै (३६, ३९, ४१, ४६)—लेता है ।
लाइक (३४)—योग्य
लाइकि (१)—योग्य

लाखीक (१२)—लाख रुपयो के मूल्य का, लाखो गुणो को धारण करने वाला।
लागै (४५)—लगता है।
लाछ (७२)—लक्ष्मी
लाछवर (६३)—लक्ष्मीपति, विष्णु।
लाछि (७५, ८१, ६७, १००)—लक्ष्मी
लाछिवर (३२, ५७, ७६, ६२, ८६, ६१, १०२)—लक्ष्मीपति, विष्णु।
लाजा (६२)—लज्जा।
लाडौ (६७)—दूल्हा।
लाधा (५३, ६२, ६७)—मिले, प्राप्त हुए।
लाभै (२६)—प्राप्त हो।
लालचद (३७)—जति का नाम है। यह जुढिया ग्राम मे रहता था जुढिया ग्राम मे जतियो का उपासरा भी है।
लिखमी (३६, ४२, ४८, ५६, ६२, ६२, ६६)—लक्ष्मी।
लिखमी (४६)—लक्ष्मीपति।
लिगन (८१)—
लिगी (६८)—
लियै (४४)—लेते हैं।
लिवारि (६५)—
लिवारै (७)—
लिवारौ (७५)—
लीधा (२)—लिए।
लीधौ (३२)—लिया।
लुटाडै (६१)—लुटवाते हैं, लुटवा दिए।
लुणियौ (६३) लुचन किया।
लूंकां (६४)—जैनो का एक।
लेखता (६५)—समझने पर।
लेखै (१०३)—हिसाव।
लेखौ (१००)—गिनती हिसाव।
लोचन (७७)—नेत्र।
लोढा (६६)—मसालादि पीसने का पत्थर विशेष।
लोधियौ (६२)—
लोपसै (६२)—उल्लघन करेगा।
लोही (१३)—रक्त, खून।
ल्यां (४४)—लेता हूँ।
ल्यै (४४)—लेते हैं।

व

वतप (८२)—
वदण (४६) नमन करने को, वदन नमन।
वस (६२, १०२)—कुल, गोत्र।
वइण (३८)—वचन, शब्द।
वखत (७८)—समय।
वखाण (३५, ३७)—यश, कीर्ति।
वखाणा (४)—वर्णन करता हूँ।
वखाणि (५१)—वर्णन करके।
वखाणु (२७)—यश, कीर्ति, वर्णन।
वखाणै (५, १३, १५, ३६)—वर्णन करते है, वर्णन करता है, प्रशसा करते हैं।

वखाणियौ (१३)—वर्णन किया ।
वखवाणी (२३)—देवी ।
वडौ (३४)—वडा, महान ।
वछां (७)—वछडा, पशु ।
वछासुर (५६)—कंस का अनुचर एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने वाल्यावस्था मे ही मारा था, वत्सासुर ।
वजाडी (५६)—वजाई, ध्वनित की ।
वड (६८, ७०)—वडा, महान ।
वडवडं (८५)—वडे, महान ।
वडवडौ (६१)—महान, अत्यंत वडा ।
वडवा (२४)—
वडा (३३, ३७, ९६)—महान, वडा ।
वडाया (७३)—वडाई, महानता, यश
वडाळ (३६)—वडा, महान
वडि (५१)—वट वृक्ष पर
वडिमि (१५, ८०)—वडप्पन, महानता
वडियौ (९५)—काटा गया, कट गया
वडेरा (३७, १०१)—पूर्वज, पुरखा, वडा महान ।
वडेरी (२३)—वडी, महान ।
वडेरो (२१)—वडी, महानत ।
वडो (२३)—महान, वडा ।
वडौ (४५, ५२, ५३)—वडा महान, दीर्घकाय ।
वणराय (५१)—वनराजि, वन, जंगल
वणायौ (२७)—रचा

वणाव (७२)—रचना, वनावट ।
वणावा (३८) रचे, वनाये ।
वणावै (४२) रचता है ।
वणावौ (३१)—वनाइए ।
वदत (३६)—कहते हैं ।
वदै (२३)—कहते हैं ।
वधंतौ (४७)—विशेष
वधतौ (४७)—विशेष
वधाया (१३, ९३)—स्वागत किया ।
वधायं (६७)—स्वागत किया ।
वधायौ (२६, ३२)—स्वागत किया
वधियौ (६४, ८८) वढा, वृद्धि, प्राप्त हुआ ।
वनमाळी (१)—तुलसी, कुंद, मदार पर जाता और कमल इन पाँचो की वनी हुई माला को धारण करने वाला, श्रीकृष्ण, विष्णु, नारायण ।
वप (२५)—शरीर
वप (२१, २४, ७२, ९५)—वपु, शरीर ।
वपु (५१)—शरीर
वभीषण (३, ६६)–रावण का भाई ।
वयण (१)—वचन, वाणी ।
वरणै (२१)—वर्णन करता है ।
वरत (१०२)—पुण्य प्राप्ति के उद्देश्य से किया जाने वाला किसी पुण्य तिथि का उपवास ।

वरतावीजै (१२)—
वरताहि (८५)—
वरतै (६०)—
वरन (२७)—वर्ण, रग ।
वर-लाछ (५)—लक्ष्मीवर, विष्णु ।
वरिणि (५८)—वरुणदेव की स्त्री ।
वरीयाम (३६)—श्रेष्ठ ।
वरै (७६)—स्वीकार करते हैं, वरण करते हैं ।
वळण (६४)—लौटना क्रिया ।
वळि (४१, ४६, ५२, ६३)—पुन , फिर, शक्तिशाली, वालि ।
वलिणि (११)—लौटना क्रिया का भाव ।
वळिया (२१)—लौट गया ।
वलिराम (२६)—वलराम
वली (६७)—फिर, और ।
वळै (४, १३, १४, ३४, ५६, ६२, ६४, ६५, ६८, ७३, ७८, १००)—पुन', फिर, और ।
वसता (५०)—वस्तुएं, पदार्थ ।
वसदे (५७)—वसुदेव
वसदेव (६, ३६, ६२, ७६, ८२, ६६)—श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव ।
वसदै (१०१)—वसुदेव
वसारै (७४)—
वसिजो (२२)—
वसियौ (५६ ७३, ६५)—वस गया, निवास किया ।
वसुधा (७२)—पृथ्वी
वसुह (४५, ५८, ८७)—पृथ्वी, वसुधा, ससार ।
वसै (४०, ७६)—निवास करता है ।
वह-तान (११)—
वहनामी (१०१)—ईश्वर
वहत (८६)—वहुत
वहवाहर (६६)—वाहर जाकर, पीछा करके ।
वहि (१००)—
वहियौ (६३)—
वहिलौ (६०, ६०, १०२)—शीघ्र, जल्दी ।
वहिसै (१३, ६६)—चलेंगे, वहेंगे ।
वहे (६०)—
वहै (५५, ५६, ८३)—चलकर, चले ।
वाझणी (३१)—वध्या
वाणि (३४)—
वादै (२)—नमस्कार करते हैं ।
वामण (३, ५, ८, ६५)—वामनावतार, व्राह्मण ।
वामण (२८)—वामनावतार ।
वामणो (५३)—वामनावतार ।
वामन (२४)—वामनावतार ।
वामे (६६)—वायी ।

वासली (५६)—मुरली ।
वासलै (८३)—वशी, मुरली ।
वाउल ८६)—आंधी, तूफान ।
वाक (८०)—मुख ।
वाखाण (४४, ४७)—वर्णन ।
वाघ (३६)—व्याघ्र ।
वाचा (५४)—वचन ।
वाचि (५०)—वाचा, वाणी ।
वाचै (३७)—पढते है ।
वाछ (५८)—वछडा ।
वाछा (७१)—वछडे ।
वाज (३७, ६६)—अश्व, घोडा ।
वाजसी (६६)—वर्जेंगे ।
वाजिया (१७, ६६)—वजे, ध्वनित हुए ।
वाट (३१, ६४)—प्रतीक्षा, इन्तजार ।
वाटियौ (५६)—काट डाला ।
वाणासुरा (१०३)—
वाणार (३८)—
वाणि (३६, ४०)—वचन, शब्द ।
वाणै (५०)—वाणी ।
वात (१०१)—वार्ता ।
वाता (३६)—
वातिटै (७६)—वार्ते, वात, रहस्य, भेद, गूढअर्थ, अभिप्राय ।
वादतै (५४)—प्रतिस्पर्द्धा करते समय ।
वाप (७५)—पितर ।
वापार (४८)—व्यापार-वाणिज्य ।
वामण (३६)—वामनावतार ।
वामणा (८०) वामनावनार ।
वायक (५०)—वाक्य ।
वाराह (५, ८, ३६, ३६, ५१, ५२, ५६, ६४, ६४, ६६, ६८ ६६)—विष्णु का एक अवतार ।
वारि (५१)—पानी, जल ।
वारिवा (१६)—
वारी (१००)—
वाला (४३)—वाला ।
वाळा (८५)—के ।
वालि (७७)—वानरराज वाली ।
वाळिया (७६ —
वाळै (६३)—के ।
वाली (१०३)—का ।
वारहा (७, ६२)—वल्लभ, प्यारे, प्यारा ।
वाल्हो (१७)—वल्लभ, प्यारा ।
वाल्हौ (५, २६, ७०, ७४, ६७, १००)—वल्लभ, प्यारा ।
वास (२३, ५०, ६६)—निवास, निवास करने का स्थान, निवास करने की क्रिया ।
वासतै (८७)—लिए, नियित्त ।
वास दे (७२)—अग्नि, आग ।
वासो (४५)—वास, निवास ।
वाह (५, २४, २८, ४८, ६७)—धन्य धन्य ।

वाहर (९५)—रक्षा ?
वाहरू (२८, ७९)—रक्षक ।
वाहला (८७)—नाला ।
वाहि (१०३)—
वाहिरौ (७०)—रहित, विना ।
वाहिळिया (१३)—नाले ।
वाहैं (४२)—प्रहार करिए ।
वाहै (६६)—प्रहार करते हैं ।
विंद (३८)—स्वामी, पति ।
विंदया (३६)—नमस्कार किया, एक गोपी का नाम भी विंदा था ।
विंदावन (२४)—वृन्दावन ।
विग्रापी (७०)—व्यापी, वह जो व्याप्त हो ।
विकाइ (३६)—विक जाते हैं ।
विखैं (७८, ९९ १००)—विषय ।
विगताळी (५८)—अद्भुत चरित्र वाला ।
विगन्यान (४९)—विज्ञान ।
विगति (७९)—वृतान्त ।
विघन (८१)—विघ्न ।
विच (४२)—मध्य ,
विचाळै (५८, ७१)—वीच मे ।
विचि (४३, ४५, ४८)—मध्य मे ।
विजराज (९९, १०३)—वृजराज, श्रीकृष्ण ।
विडग (८९)—घोडा ।
विडगा (३१)—घोटो ।
विढण (५८)—लडने को ।
विढिसँ (६६)—युद्ध करेंगे, भिडेंगे ।
विढै (५२, ६६)—युद्ध किया, युद्ध करके ।
विण (४८, ६३)—विना रहित ।
विणयौ (३५)—
विणि (३९, ४९, ५०)—विना, रहित ।
विणियो (१४, ४७)—वन गया, वना
विणियौं (१४, ५०, ९३)—वना, वन गया ।
विणे (६)—हुआ ।
विद्रवां (९६)—विदर्भ देश जहां का राजा रुक्मणि का पिता भीष्म कथा ।
विवत (२१)—
विधांसइ (६)—विध्वस किया ।
विधांसण (५, ५६)—विध्वस करने को ।
विधांसी (२)—विध्वस किए ।
विनाइक (३४)—गजानन ।
विनाइकि (१)—गजानन ।
विभाडी (८१)—मार डाली ।
विभाडै (५२)—मार डाला, प्रहार किया ।
विभीपण (५७)—विभीषण ।
विभूति (७६)—दिव्य या अलौकिक शक्ति ।
विमल (३८, ४६, ६६, ७८, ८९)—पवित्र, निर्मल, उज्ज्वल ।

विमेख (१०, २३)—विवेक, ज्ञान ।
विमोह (४५)–मोह, अज्ञान, भ्रम, भाति
वियाइयै (८२)—
विग्च (२०)—ब्रह्मा ।
विरखा (५६)—वर्षा ।
विरता (५१) – जो अनुरक्त न हो, जिसका मन हट गया हो, विरत ।
विरक्ता (६४)—विरक्त ?
विरदाळ (१३)—विरुदधारी, यशस्वी ।
विराजियौ (१५)—वैंठ गया ।
विराजै (४१, १०३)—वैठते हैं, शोभा देते हैं ।
विरिद (१८)—विरुद्ध ।
विरिध (१७)—वृद्ध ।
विरी (७८)—विना, रहित ।
विरुदा (६८)—विरुदो ।
विलव (२१)—देरी ।
विळकळै (६२)–व्याकुल हुए, विलापन किया ।
विलगी (४२)—लगी हुई ।
विलागी (५४)—लग गया ।
विलास (३७)—सुख-भोग ।
विले (३८, ३६, ४१, ७६)—पुन, फिर ? और
विळै (३०, ५५, ६२, ६६, ७०, ८४) फिर, और ।
विलोग्रै (२८)—विलोडित किए ।
विलोग्रै (५२)—मथन करके, विलोड़ित करके ।

विवाण (५६) – वायुयान ।
विषभ (३६, ५४)—ऋषभवतार ।
विसंन (६, ७, ५४)—विष्णु ।
विसभ (२६)—विश्वभर, ईश्वर ।
विसभर (५२, ५५, ६४, ७३)—ईश्वर, विश्वंभर ।
विसथार (२५, ५१)—विस्तार ।
विसन (१४, २४, २६, ३७, ४७, ४८, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६३, ६५, ६६, ६८, ७४, ७६, ८०, ८१, ८२, ८३, ६३, ६७)—विष्णु, श्रीकृष्ण ।
विसन ही (१६)—विष्णु ।
विसनौ (७३)—?
विसराम (४२)—विश्राम ।
विसव (२३, २७, ४२, ४५, ४६, ७५)—विश्व, ससार ।
विसवामिति (५५)—विश्वामित्र ।
विसवावीस (५०)—पूर्ण ।
विसारियौ (६६)—विस्मरण किया ।
विसारै (३५, ६८)—विस्मरण करता है ।
विसाळू (२७)—विशाल ।
विसिन (५२)—विष्णु ।
विसिनि (१३, ४३)—विष्णु ।
विस्तार (२३)—फैलाव ।
विस्रत (४२)—पुलस्त्य ऋषि के पौत्र अथवा वशाज रावण ।

विहद (३८)—अपार ।
विहळ (७२)—सभवत वीठल के लिए प्रयोग हो ।
विहला (४४, ५६)—विह्वल, व्याकुल
विहँणँ ( )—रहित ।
विहूँणो (५)—विना, रहित ।
विहूणी (२०)—रहित ।
वीद (१४)—दुलहा ।
वीठळ (५६)—विट्ठल, विष्णु ।
वीठला (३७, ४४, १०२)—विष्णू का एक नाम, दक्षिण भारत की एक विष्णु मूर्ति ।
वीठुल (१, ५४, ५६)—दक्षिण भारत की विष्णु की एक मूर्ति का नाम, विष्णु, विट्ठल, श्रीराम ।
वीण (२५)—तार वाद्य विशेष ।
वीनवूं (३४)—विनय करता हूँ ।
वीमाह (६, ६६)—विवाह ।
वीर (११, २६, ६८)—भाई ।
वीरज (५१)—वीर्य
वीर-हाक (६६)—जोश पूर्ण आवाज
वीराधि (२७)—वीरो का अधिपति, महावीर ।
वीह (२५)—भय, डर ।
वुसुतरी (२१)—वस्तु
वेखूना (१००)—
वेगि (६२)—शीघ्र ।
वेगी (६०)—शीघ्र ।
वेचिया (३६)—
वेढ (१२)—लडाई, युद्ध ।
वेढडी (८४)—युद्ध ।
वेढ-प्राघो (३२)—युद्ध करिए ।
वेदव्यास (१, ३८)—
वेदू (३६) —
वेधौ (५५)—शसा, सशय ।
वेळा (४६, ५३) - समय ।
वेस (२३, ३६)—
वेसास (४८)—विश्वास ।
वेसासि (५२)—विश्वास करके ।
वैकुठ-वणारणी (७२)—वैकुठ को रचने वाला ।
वैकुठवास (३६)—विष्णु ।
वैजती-माल (४३)—विष्णु के धारण करने की एक प्रकार की माला जो पाँच रगो की होती है और घुटनो तक लटकती है ।
वैण (३८, ६०, ६२)—वचन ।
वैराट (२४, २८, ३७, ५१)—वड़ा, विस्तृत, लवा-चौडा, फैला हुआ ।
वैहिलौ (५२)—विह्वल, घवराया हुआ ।
वोटिया (८६)—काट डाले ।

वोम (६०)—व्योम, आकाश।
व्याधि (६३)—एक दानव का नाम, व्याध।
व्यास (४४, १०३)—वेद-व्यास।
ब्रकदत (६३) - बकासुर से अर्थ लिया गया है।
ब्रख (५६)—वृक्ष
ब्रनह (४१)—रग, वर्ण।
ब्रपा (७०) - विप्र
ब्रहमि (७६)—ब्रह्मा।
ब्रिख (३७)—वृक्ष।
ब्रिदि (१६)—विरुद।
ब्रिदि (७८)
ब्रिप (४३)—विप्र, ब्राह्मण।
ब्रिसपति (३६)—वृहस्पति

स

सकर (८८)—शकर, विष्णु।
संकरखण ( )—विष्णु का एक नाम
मख (४२)—शख, कुवेर की नौ निधियो से एक अथवा एक असुर का नाम ? अथवाविष्णु के चार मुख्य मे से एक।
सखचूड (६०)—एक दैत्य का नाम जिसको कस ने कृष्ण को मारने के लिए भेजा था और कृष्ण ने उसको मार डाला था परन्तु यहाँ पर पौराणिक आख्यानो से सम्बन्ध है। इस सम्वन्ध मे पाच व्यक्तियो के नाम मिलते है।
सखघर (६८)—विष्णु, ईश्वर।
मखवर (४२)
संख-सामि (४३) -शंख को धारण करने वाला, विष्णु।
सखासुर (५६, ५७)—एक दैत्य जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर ले गया था। और समुद्र के भीतर छिप गया था।
सगट (८१)—सकट
संगठ ८३)—समूह
सगठासुर (४, १००)—शकटासुर नामक दैत्य जिसको कस कृष्ण को मारने के लिए भेजा था।
सघारै (६२)—सहार किए।
संघारं (२६)—सहार किए।
सघार (१२, ६८)—मघार करके।
सघारण (२४)—सहार करने को।
संघारे (५७, ८१)—संहार किये।
मघारै (६२, ६६)—सहार किए।
संघारौ (३०)—सहार कीजिये।
संताप (४२)
सवाहिया (५६)—सम्हाले
सवाहौ (३४)—धारण करिये।

संभ (७३)—शिव, शमू ।
संभारे (४५)—स्मरण कर ।
सभारै (३६, ९८)—स्मरण करता है ।
संभरियौ (९४) स्मरण किया ।
समरै (१०३)—स्मरण करते है ।
संमिल (३६)
संवाहे (५७)— वारण करके ।
संवाहै (४२)—धारण करता है ।
ससार (१००)
सक (४३)—शक्र, इन्द्र ।
सकटासुर (५८)—एक दैत्य जिसको कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजा था और वह स्वय श्रीकृष्ण द्वारा मारा गला ।
सकतिहर (२१)—शक्ति घर, देवी ।
सकाज (५४)—लिए
सको (३६)—सब
सखरा (२, १६, ९५)—श्रेष्ठ, उत्तम
सखरी (८७)—बढिया ।
सखरो (६८)—श्रेष्ठ ।
सखरौ (३, १०, १३, ५८)—श्रेष्ठ, उत्तम ।
सगर-राऊ (८२)—अयोध्या के प्रसिद्ध प्रजा रजक एक राजा का नाम ।
सगळा (६८)—सब
सगलाइ (४, सं० सकल × अपि)—सबही ।
सगळाई (१५)—सब
सगण (६१, ६६, ७८)—सघन, मेघ, घन ।
सघार (३५)—सहार
सचेळा (९१)
सजिया (९५)
सज्ञान (४७)—ज्ञान सहित, आत्म ज्ञान सहित ।
सझा (६०)—दण्ड
सतगुर (३४)—सदगुरु, श्रेष्ठ गुरु ।
सतभामा (६३)—श्रीकृष्ण की आठ पटरानियो मे से एक सत्यभामा ।
सतरी (२१)—सत्य की
सति (४९, ७२)—सत्य, है ।
सत्रघण (५७)—शत्रुघन
सत्रघण (६, २९, ३९, ६५, ६८, ९२)—शत्रुघन
सत्रघन (७२)—शत्रुघन
सथिरि (१५)—स्थिर
सदांमै (९९)—सुदामा
सदामौ (७८)—एक ब्राह्मण का नाम जो कृष्ण का सखा था, सुदामा ।
सदोमति (१९)

सधर (५६, ९२)—वीर, शक्तिशाली, दृढ, मजबूत।

सधीर (३६)—वीर, योद्धा।

सनकादिखा (५२)—सनकादिक।

सनेह (३५)—स्नेह

सपरस (४)—स्पर्श

सपूत (३६)- -सपुत्र

सप्त (२१)—सात

सप्राणा (६५)—शक्तिशाली, वलवान।

संवंध (३५)–एक साथ वंधना, जुड़ना।

सवखौ (१०)—सहज, सरल।

सवरी (५६)—शवरी, भीलिनी।

सवळा (४१, ५३, ८०)—वलवान, शक्तिशाली।

सवळा (११, ६७)—सवल, शक्तिशाली।

सवळी (२३)—वलवान, शक्तिशाली।

सवळौ (५०, ६८, ६९, ७०)—महान, सवल, वडा, शक्तिशाली, सशक्त।

सवाइं (१९)

सवोज (४४)

समँद (४४)—समुद्र, सागर।

समंद (४५, ८६, ९९)—समुद्र

समद्र (२६)—समुद्र

समध (८१)—सम्वन्ध

समंपो (५५)—दीजिए

समति (२३, ७४)—सुमति, सुवुद्धि।

समपण (४४, ९५)—देने को, देने के लिए।

समति (३४)—दे

समपी (५५)—देदी

समपीजै (१)—दीजिए

समपै (६८, ७३, ७९)—देता है।

समपौ (२३, ३८, ४४, ७२)—दे दीजिये।

समरंति (३७)—स्मरण करते हैं।

समरइ (८८)—स्मरण करते हैं।

समरा (६१)—स्मरण करे।

समरासुर (१००)—एक असुर का नाम

समरि (४१)—स्मरण कर।

समरौ (३४)— स्मरण करिए।

समस (१५)—

समाप (१००)—दीजिए

समापण (५, ६)—देने को।

समापि (५५)- -दीजिए, देकर।

समापे (७४)—दीजिए

समापै (२, ६२, ६३, ७१, ७२)—देना, देता है, दे दी।

समापौ (७, ४३, ७५)—दीजिए

समासै (९९)—

समिदिसै (७४)—

समीपि (४४)—पाच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति जिसमें मुक्तिजीव भगवान के समीप पहुँच जाता है, सामीप्य।

समै (७३)—समय

समौ (५, ७६)—ही, समय पर ।
सर (५३)—तालाव ?
सरखं (२७)—समान
सरग (१४, २७, ३२, १०१)—स्वर्ग
सरगा (१०१)—स्वर्ग
सरगुण (७)—सगुण
सरजीत (५)—जीवित
सरणाईया (८६) - वाद्य विशेष
सरणै (२१)—शरण मे ।
सरणौ (१०३)—शरण
सरव (२२)—शर्व, महादेव ।
सरव (३४, ३६)—सर्व, सव ।
सरव (४०, ४२, ४४, ५०, ७४)—शिव, विष्णु, सव ।
सरव (४०)—सव
सरस (४७)—
सरसति (१)—सरस्वती
सरसि (४३)—समान, तुल्य ।
सरसौ (४७)—रसपूर्ण, पूर्ण, पूरा ।
सरि (५०)—जैसी, समान ।
सरिखा (१००)—समानो, सदृशो ।
सरिखा (१६, ८५, २३)—समान
सरिखी (३, २२)—समान, तुल्य ।
सरि-ज्राईया (५०)—सृजन किए, सृष्टि का उत्पन्न किया जाना ।
सरिस (२, २६, ७२)—समान, रिस-पूर्ण ?
सरिसि (५५, ७७, ८५, ६१)—समान
सरिसौ (५२)—समान
सरीखा (७८)—समान, सदृश ।
सरीखा (३, १७, ३०, ३८, ८१, १००)—समान, तुल्य ।
सरीखी (२१, ६४)—समान
सरीखें (८८)—समान, सदृश ।
सरीखो (५८)—समान
सरीखौ (३४, ४४)—समान, सदृश ।
सरीरह (४१)—शरीर
सरूप (३५)—पाच प्रकार की मुक्तियो मे से एक जिसमे उपासक अपने उपास्यदेव के रूप मे रहता है और अन्त मे उसी उपास्य देव का रुप प्राप्त कर लेता है, सारूप्य ।
सरैं (४७)—
सलाम (३७)—प्रणाम
सलामा (६१)—प्रणाम
सलाह (६८)—राय, लाभ सहित ।
सव (४१)—सव
सवरी (६, ५६, ७८)—शवर जाति की श्रमण नामक एक भील तपस्विनी, भीलिनी ।
सवलौ (४१)—सीधा, सरल ।
सवाडौ (८२)—विशेष, अधिक
सवाही (४०)—
ससमाथ (६, ७, १५, १६, २०, २७, ६८, ६५)—समर्थ, शक्तिशाली, शिव ।

सांमळा (५५)—श्यामल, श्रीकृष्ण ।
सांमहा (६५)—सम्मुख, सामने ।
सांमहौ (२८)—सम्मुख ।
सांमि (६६)—स्वामी, श्रीकृष्ण ।
सांमी (६६)—स्वामी ।
सांम्हेई (२२)—
सांम्हौ (३७)—सम्मुख, सामने ।
सासही (२०)—
सा (२)—समान ?
साई (६८)—स्वामी ।
साच (३२)—सत्य ।
साचरी (८०) सत्य ।
साचा (२२)—सत्य ।
साचि (५०)—सत्य ।
साज (१००)—
साजा (६२)—पूर्ण ।
साझण (१००)—सजा देने के लिए, मारने के लिए ।
सायरौ (१२)—ढेर ।
नोट—यह शब्द सस्तर का अपभ्रंश है जिसका अर्थ शय्या अथवा घास फूस फैलाकर बनाया हुआ विस्तर परन्तु मुहावरा के अर्थ मे ढेर है ।
सायँ (५७)—साथ मे ।
साथै (३३)—साथ मे ।
साद (२८, ४८)—पुकार ।
साध (३५, ४४, ५६)—साधु, सज्जन ।
साधुआ (६८)—सज्जन, पुरुषो ।
साप (८३)—सर्प, काली नाग ।
सापियौ (७४)—श्राप दिया ।
सामलौ (८२)—श्यामल, श्रीकृष्ण ।
सामि (४४)—स्वामी ।
सायर (४३)—सागर, समुद्र ।
सारंग-पाणी (८६)—
सारगवर (३३)—विष्णु ।
सारखा (१५)—समान ।
सारद (१)—शारदा, सरस्वती ।
सारदा (७४)—शारदा, सरस्वती ।
सारा (४४)—सब ।
साराहियौ (८८)—सराहना की ।
सारिखां (५७)—समान, सदृश ।
सारिखै (७४)—समान ।
सारीख (३६, ५७)—समान ।
सारीखै (६३)—समान, सदृश ।
सारीखौ (४२, ७५)—समान ।
सारूप (४४)—पाच प्रकार की मुक्तियों मे एक प्रकार की मुक्ति, सारूप्य ।
सारौ (१००)—अधिकार, हुकम ।
साल (७६, ९८)—शल्य ।
सालले (८६)—गायन किया ।
साळा (६६)—स्त्री का भाई ।
सालुलै (६६)—बजती है ।
सालै (६६)—स्त्री का भाई ।

सालोक (४४)—पाच प्रकार की मुक्तियो मे से एक जिसमे मुक्त भगवान के साथ एक ही लोक मे वास करता है सालोक्य ।

सावतरी (४४)—सावित्री

सावतरी (१३, २०, ३९)—वेदमाता गायत्री, सावित्री ।

सावित्री (३२, ६७)—१. सरस्वती, २ सूर्य की प्रश्नि नामक पत्नी से उत्पन्न ब्रह्मा की पत्नी ३ वेदमाता गायत्री ।

सास (२७)—श्वास

सास (३४, ४९, ५०, ९९)—श्वास, प्राण ।

सास-सासि (९९, ३४)—श्वास-प्रति-श्वास ।

साहनिजार (१०१, १२—एक महात्मा का नाम ।

शाहिवा (१००)—स्वामी, ईश्वर ।

साहुलि (९) प्रार्थना, आर्तनाद ।

साहु (३०)—प्रकार

साहौ (३२)—विवाह, लग्न ।

सिंघ (७०)—सिंह

सिंघार (५, ६३)—सहार

सिंनेह (४५)—स्नेह

सिंभू (६०)—शभू, शिव ।

सिंही (४४, ४८)—सही, अवश्य ।

सिको (४६)—सब

सिखि (७७)—शिष्य

सिगळा (२, ४६, ६०, ७८, ४७, ७९, १०१)—सकल, सब, समस्त ।

सिगळा (१३, ५१, ७५)—सकल, सब

सिगळाई (१९, ९९, १०२)—सकल, सब ।

सिगळो (६७)—सब

सिगि (१०)—सब, समग्र ।

सिघाळा (९९)—वडा, महान योद्धा ।

सिघारिसै (६६)—संसार करेगा ।

सिणिगारिजै (९६)—शृङ्गारयुक्त कीजिये ।

सिद्धदायक (३४)—सिद्धि को देने वाला ।

सिव (६)—सफल

सिनकादिक (४४)—सनकादिक ।

सिनिकादिखि (६१)—शनकादिक ऋषि ।

सिर (५३)—ऊपर, पर ।

सिरताज (३५, ९८)—श्रेष्ठ

सिरि (१९, ५०)—शिर, ऊपर पर ।

सिरिजै (१०)—रचना करता है ।

सिरै (३२, ४७)—श्रेष्ठ, ऊपर, पर ।

सिरो (४६)—ढग, प्रथा ।

सिव (६८)—शिव, महादेव ।

सिवि (७६, ८८)—शिव, राजाशिवि ।

सिवि संकर (७६)—शिवशकर ।

सिसपाळ (६३)—चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था, शिशुपाल ।

सिहाई (२२)—सहायक

सिहि (१०, २१, ३६)—सव, सर्व, पक्की ।

सीत (३६, ४४, ५५)—सीता, जानकी

सीता (११, ३२, ५६, ५७, ६३)—राम पत्नी जानकी ।

सीळ (२५, ६८)—शील

सीलवंत (३६)—शीलवान

सीस (३६)—

सीह (६८)—नृसिहावतार

सुकर (२१, ६५)—शुक्र

सुकवि (३६)—श्रेष्ठ कवि ।

सुकीरति (१००)—सुकीर्ति

सुखदेव (३८, १०३)—शुकदेव

सुगरीव (६)—वानरो का राजा, श्री रामचन्द्र भगवान का मित्र, सुग्रीव ।

सुग्रीव (५६, ६५ ७१, ६३)—वालि वानर का छोटा भाई ।

सुघर (२३)—श्रेष्ठ घर ।

सुचंग (५०)—श्रेष्ठ

सुजस (७६)—सुयश, कीर्ति ।

सुणाइ (४५)—सुनाकर

सुणिजो (४१)—सुनिए

सुधारो (३३)—

सुन्न (२३)—शुन्य

सुपकना (२६)—सूर्पकर्णा

सुपनखा (६)—रावण की वहिन शूर्पणखा ।

सुप्रसन्न (७४)—प्रसन्न खुश ।

सुभर (१०२)—पूर्ण भरा हुआ ।

सुभराज (६, १६, २२, १०१)—अभिवादन सूचक शब्द जिसका प्रयोग प्राय. याचक जातिएं करती हैं ।

सुभिश्राण (१२)—श्रेष्ट

सुभियाण (७४)—श्रेष्ठ

सुमत्ति (३४)—श्रेष्ठ मति ।

सुर-जेठ (४, ३६, १०२, २५, २६, ४६)—ब्रह्मा ।

सुरज्या (६७, ८५)—सूर्य्या, नवोढा, नवविवाहिता, सूर्य की पत्नी ।

सुरतांण (६८)—सुल्तान

सुरा (३४)—देवताओ

सुरेसुर (४६)—सुर+असुर ।

सुविहाण (८)—सुविभात, सवेरा, सुप्रभात ।

सुहामणा (४४)—सुहाना, सुन्दर, मनोहर ।

सुहिद्रा (६८, ६०, ६७, १०१)—सुभद्रा

सुहिद्रा (११, ७७)—सुभद्रा

सूं (२, ६, ३५, ५३)—से

सू डाळी (३४)—श्री गजानन।
सूका (६८)—
सूनो (४८—शून्य, खाली।
सूझै (४४)—दिखाई देता है, देखता है
सूप-कना (१६)—वडे-वडे कानो वाला
सूप (६३)-सूर्पनखा
सूपनखा (५६)—शूर्पणखा
सुर (३९, ६८)—सूर्य, वीर, वहादुर।
सूरज्या (३२)—सूर्या, सूर्य की पत्नी
सूरिजि (४७)—सूर्य
सूरिति-पाक (४४)—पवित्र शक्ल का पाक-सूरत।
से (३, १९)—वे, सव।
सेख (८९, ९९)—इस्लाम धर्म के आचार्य, पैगम्बर मुहम्मद के वशजो की उपाधि, यवनो के मुख्य चार वर्गो मे से प्रथम वर्ग।
सेझ (२५, ३६, ६२)—शय्या
सेत (३२, ३९, ६४, ९६)—श्वेत
सेतलै (११, ९२)—श्वेत रग का घोडा, वि० वि० कहते हैं कि जव कल्कि अवतार होगा वह श्वेत घोडे पर सवारी करेगा?
सेतिलै (८४)—श्वेत
सेनारसी (६५)—
सेव (३४)—सेवा
सेप (३६)—शेपनाग।
सेस (६०)—शेपनाग।
सेहरा (९६)—
सैण (६२)—सज्जन।
सैणला (१९)—सैणी नामक वेधा चारण की पुत्री जो देवी का अवतार मानी जाती है। पीरदान लालस की आराध्यदेवी थी।
सैदहे (३७)—शरीर सहित।
सैतान (३२)—शैतान, असुर।
सैनीछर (२१)—शनिश्चर।
सोढो (१५)—पंवर वश की सोढा का राजपूत।
सोम (३९)—चन्द्रमा।
सोरभ (१० म० सुरभि)—सुगध, महक।
सोरो (७५)—सुखी, आराम मे।
सोळ (६३)—सोलह।
सोवन (३१)—
सोहागण (१५,—सधवा, सौभाग्य-वती।
सोहिया (८०)—सुशोभित हुए।
सौरी (३१)—
स्रव (२७)—सर्व, सव।
स्रव (६)—सर्व, सव।
स्रिया (६७)—श्री, लक्ष्मी।
स्रीय (४८)—श्री
स्रीरंग (७५)—विष्णु का एक नाम।

श्रेव (२५, ६८)—सेवा।
श्रेवा (७१)—सेवा।
श्रेवै (६८)—श्रेय, श्रेष्ठतर।
श्रैवा (२८)—सेवा।
स्रग (२९)—
स्रगलोक (२६, ३६)—स्वर्ग लोग।
स्रव (३५, ४१)—सर्व।
स्रमण (४१, ५६, ७७)—श्रवण, कान।
स्रेव (४२)—सेवा।
स्रेवता (८०)—सेवा करते थे।

ह

हदै (१७)—के।
हंस (५, ३६, ९८)—हंसावतार, विष्णु का एक अवतार।
हठाळ (६)—हठ करने वाला।
हणमंत (६, १३, ६५, ६७, ८४)—हनुमान।
हणमति (५७)—हनुमान।
हणमत (७)—हनुमान।
हणियौ (९३)—मारा, सहार किया।
हणीयौ (९१)—मारा, संहार किया।
हणै (९८)—मार करके, महार करके
हथ (३८)—
हथवाह (६६)—शस्त्र प्रहार, प्रहार।
हव (२९)—अब।
हमल (५७)—आक्रमण।
हमा (५१)—हम।
हमै (६४, ६८, ८१, ८४)—अब।
हर (२०)—महादेव।
हरख (५५)—हर्ष, आनद।
हरणकुम (३)—हिरण्याकशिपु।
हरणाख (५२)—हिरण्याक्ष नामक दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था।
हरता (२३)—नाश ध्वंस, हरण।
हरनाथ (३३)
हरि (८, ३६)—विष्णु, श्रीकृष्ण।
हरिखिया (९७)—हर्षित हुए
हरिचद (३३, ८५)—हरिश्चद्र
हरिणख (९४)—हिरण्याक्ष
हरिणाकस (५३, ६८, ९४)—हिरण्यकशिपु।
हरिणाख (२८, ८०, ९४)—हिरण्याक्ष
हरीचद (१०, ३१)—हरिश्चद्र राजा
हरीयाळ (१०१)—हरीभरी
हरै (५६)—हरण करके, हरण करता है।
हळ (६६)—प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र विशेष जिसकी आकृति कृषि किए जाने वाले हल से मिलती-जुलती थी।
हळहळा (८९)—हल्लागुल्ला ?
हला (९८)—आक्रमण
हलाया (९३)—चलाये

हलावो (३१)—चलाइए
हलाहला (१०३)—
हव (८१, ८६, १०२, १०३)—अब
हसै (४५, ८०)– हसता है, हसते है
हस्तण (३१)—हस्तिनी
हाणि (११)—हानि
हाक (६७)—दहाड
हाटड़ा (६१)—दुकान
हाटडै (९७)—हाट, दुकान, बाजार, स्थान ।
हाड (३, ५१)—हड्डियाँ, अस्थि ।
हाथे (८२)—
हालि (८२)—चलकर
हालिम (१०३)—
हालै (१००)—
हास (५०)—हास्य
हिणियो (५३)—मारा, सहार किया ।
हिदुआणी (१४)—हिन्दुस्त्री, हिंदुत्व
हिज (६५)—ही, निश्चय
हिति (५४)—हित, स्नेह
हिमैं (८, २६, ५५, ८६, ९२, ९५, ९६, ३७, ६३)—हमको, अब ।
हिमै (७, १०, ३२, ३७, ३८, ७०, ७५)—हमको, अब ।
हिया (८१)—हृदय
हिव (७२)—अब
हिवै (९९)—अब

हीगळाज (१९)—एक देवी का नाम जिसका स्थान बलुचिस्तान मे है ।
हीगलाज (७४)—दुर्गा देवी या देवी की एक मूर्ति या भेद जो सिंध और विलुचिस्तान के बीच की पहाडियो में स्थित है ।
हींसु (८७)—शस्त्र विशेष
हीसुए (९६)—एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र विशेष जो हंसिया से मिलता-जुलता होता है ।
हीअडो (११)—हृदय, मन ।
हीगोळ (२१)—हिंगलाज के लिए प्रयोग किया जाता है ।
हीडै (५८)—पलना मे झोका खाता है या पालना मे झूलता है ।
हीव (९८)—
हीमाळै (६३)—हिमालय पर्वत
हीयाली (७८) प्रेम, हार्दिक स्नेह ।
हीयै (४०, ९८)—हृदय
हु (३८) – होकर
हुंता (२३, ४१, ४७, ७५)—से
हुंता (१०१)—से
हुंति (७, ४७, ५४, ६२, २३)—थी, से ।
हुंतो (३९)—था

हुँतौ (४८)—था
हुइसैं (११)—होगी
हुयै (४४, ४७)—होकर
हुयौ (३४)—
हुलरावै (२६, ४२)—पालने में झोका देने की क्रिया, झुलाना।
हुलायौ (२८)—
हुलाहौ (२६)—
हुवै (१०२)—होते हैं।
हुसेन (६७)—मुसलमानों के तृतीय ....का नाम जो मजीद के हुक्म से कावला नामक स्थान पर मारे गये थे, मुहर्रम इन्ही की यादगार मे मनाया जाता है, हुसैन।
हुसेनियाँ (३०)—
हूं (२३, ३४, ५३, ६६, ७०, १००)—मैं
हूँत (५)—से
हूँत (२६, ४७)—मे
हूँता (३४, ४७)—से
हूँति (३५)—से
हू (४५, १०२)—मैं
हूइसैं (१०)—हो जायगा।
हूर (७)—
हेककार (१०)—एकीकरण।
हेक (११, १७, ३६, ४४, ४८, ५४, ६१, ६६, ८५, ६०, ६३)—ऐक।
हेकला (५२)—अकेला।
हेकलौ (४७, ५१)—अकेला।
हेकांरा (६६)—एक के।
हेकोइ (७४)—एक ही।
हेठि (८७)—नीचे, नीचा।
हेठी (७६)—नीचे।
हेत (३५, ५३)—स्नेह, हित।
हेम (१७)—व्यक्ति विशेष का नाम।
हेम (४७)—हिम, वर्फ।
हेम-पुतरी (२१)—हिमाचल की पुत्री
हेमरी (२०)—हिमालय की।
हेमैं (८४)—अब
हेल (१०)—क्रीडा, खेल।
हेला (१०२)—पुकार।
हेली (५५)—सहेली
हेवरी (८२)—
हैग्रीव (३, ५, १८, २४, ३६, ३६, ७१, ६८)—हयग्रीव, विष्णु के २४ अवतारो मे मे एक अवतार मधु और कैटभ नामक दो दैत्य जब वेदों को उठाकर ले गये तब वेदो के उद्धार के लिए विष्णु ने यह अवतार लिया था।
हैग्रीवा (६६)—
हैमर (५१)—हयवर।
हैमैं (६१)—अब
हो (३२)—हे।
होडा (६८)—प्रतिस्पर्द्धा।
होमवला (१०३)
होवै (१००)—होते हैं।

पूर्त्ति—(शब्द-कोश)

(शब्द-कोश मे जिन शब्दो के अर्थ छपने छूट गये है, उनको अर्थ सहित पुन नीचे दिया जा रहा है ।)

म

मंजार (६०)—मे, भीतर ।
मंदे (२१)—वास्तव मे, मुर्दे ।
मडांणी (६४)—उत्पन्न हुई ।
मये (६१)—साथ
मला (१०३)—आप मला, स्वयं, स्वतन्त्र ।
महल (६८)—१. प्रासाद, २ स्त्री ।
मात (६६)—मात्र, केवल ।
माप (४६)—नाप, परिमाण ।
माहृ (१०३) —मे, भीतर ।
मिणिजै (६०)—कहा जाता है ।
मिलक (३१)—मलिक, सरदार ।
मुंठा (७६)—मूढ
मुंसै (१७)—मूसा, पैगम्बर ।
मुजरो (२५)—नमस्कार ।
मुरडै (६६)—नाश करे ।
मूसा (३१)—मूसा, पैगम्बर ।
मूंमणां (६१)—मोमिन ।
मूंस (८६)—मूसा
मूंसा (८५, ६०)—मूसा
मूरति (१००)—मूर्त्ति ।
मेघ-रिखी (८६)—मेघ ऋषि ।
मेप (४६)—नाप, माप ।
मेहणो (८६)—कलंक ।
दैमार (५२)—मारदे ।

र

रत री (२१)—रक्त की ।
रहै (४५)—रहता है ।
रामदे (१५)—एक लोक देवता ।
राधा (४)—राधिका ।
रामचन्द्र (६७, ६३)—श्रीराम
रावण (५७)—एक दैत्य का नाम ।
रावा (८८)—राजाओ के ।
रासि (६०)—रास
रिणि-खेत (८७)—रणक्षेत्र ।
रिणिसी (१५)—रणसी नामक एक भक्त ।
रुख (१०१)—ओर, तर्फ ।
रेली (३२)—१. वरसाया, २. वरसाकर आनदित किया ।

ल

लिगन (८१)—लग्न, विवाह ।
लिगी (६८)—किंचित भी ।

लिवारि (६५)—लेने दे ।
लिवारे (७)—लेने देता है।
लिवारौ (७५)—लेने दो ।
लोधियो (६२)—हैरान किया ।

व

वरतावीऔ (१२)—प्रदान कीजिये, प्रचार कीजिये।
वरताहि (८५)—फैला दे ।
वरतै (६०)—प्रसार की जाती है ।
वसारे (७४)—भुला दे ।
वसिजे (२२)—वस जाना, रह जाना।
वह (११)—वहुत ।
वहि (६०)—जाकर ।
वहियौ (६३)—चला
वहे (६०)—चलता है ।
वांणि (२४)—वाणी
वाणासुरा (१०३)—वाणासुर को ।
वाणार (३८)—एक भक्त का नाम ।
वाता (३६)—वार्ते
वारिवा (१६)—वारने के लिये ।
वारौ (१००)—वारा
वाळिया (७६)—लौटा लाये।
वाहि दिया (१०३)—फेंक दिया ।
विणयो (३५)—वना
विवत (२१)—विधाता
विरत्ता (६४)—विरक्त

विसनौ (७३)—विष्णु
वेखूना (१००)—निर्दोषो के ।
वेचियां (३६)—वेचने मे, वेच दिये ।
वेदव्यास (१, ३८)—
वेदू (३६)—वेद ।
वेस (२३, ३६)—भेष, रूप ।
विदि (७८)—वृद ।

स

सखवर (४२)—शखवर ।
सताप (४२)—दुख ।
समिलका (३६)—रानी ।
ससार (१००)—जगत ।
सचेळा (६१)—प्रसन्न, राजी ।
सजिया (६५)—तैयार हुआ ।
सदोमति (१६)—सदमति देने वाली ।
सवाइ (१६)—सभी ।
सवोज (४४)—वोध युक्त ।
समस (१५)—एक भक्त का नाम ।
समासै (६६)—निरंतर ।
समिदिसै (७४)—समदृष्टि से ।
सरस (४७)—अच्छा ।
सरै (४७)—वनाता है ।
सवाही (४०)—सभी प्रकार ।
सहरि (२२)—शहर मे ।
सहल्या (१०३)—साथ चले ।
सहिस (६१)—शेष नाग ।
सहे (४५)—धारण करता है ।
साधी (८७)—जोड दी ।
साम्हेई (२२)—सामने ही ।

सासहो (२०)—सहन होता है।

सा (२)—समान।

साज (१००)—रक्षा।

सारग-पाणी (८६)—विष्णु।

सीस (३६)—सिर।

सुधारो (३३)—सुधार दीजिये।

सूका (६८)—सूख गये।

सेलारसी (१५)—एक भक्त का नाम।

सेहरा (६६)—मुकुट।

सोवन (३१)—सुवर्ण।

सोरी (३१)—गाय।

स्रग (२६)—स्वर्ग।

ह

हथ (३८)—हाथ से।

हरनाथ (३३)—महादेव।

हलाहला (१०३)—हल्ला।

हाथे (६२)—हाथ से।

हालिम (१०३)—चलकर।

हालो (१००)—चले।

हिमे ( )—अब

हीव (६८)—मार

होविया (८२)—मार दिया।

हुयो (३४)—हो गया।

हुलायो (२८)—गाया, वर्णन किया।

हुलाहो (२६)—प्रवर्त होता है, चलता है।

हुसेनियो (३०)—यवनो का।

हूर (७)—अप्सरा।

हैवरो (८२)—घुडसवार।

हैग्रीवा (६६)—हयग्रीव अवतार।

होमवला (१०३)—आमत्ति।